₹ 20

www.kewalsach.com

निर्भीकता हमारी पहचान

अक्टूबर 2024

केवल सच

हिन्दी मासिक पत्रिका

RNI NO.- BIHHIN/2006/18181, DAVP NO.-129888, POSTAL REG. NO. :- PS.-35

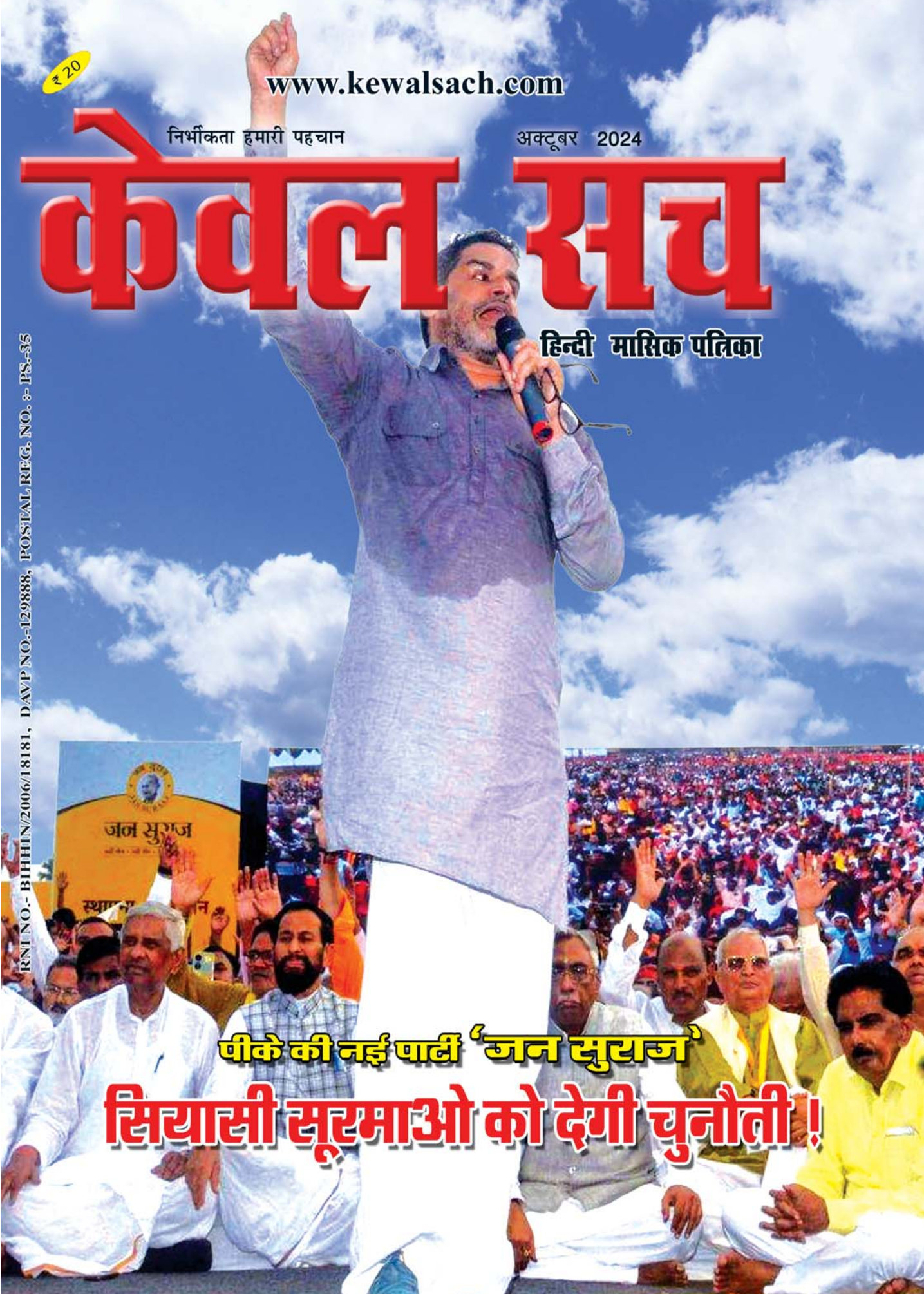

पीके की नई पार्टी 'जन सुराज'

सियासी सूरमाओ को देगी चुनौती !

दीपो के महापर्व दीपावली एवं सूर्य उपासना का महापर्व छठ पूजा की हार्दिक शुभकामनाएँ।

कार्यालय नगर परिषद, हिलसा (नालन्दा)

नगर परिषद हिलसा के नागरिकों से अपील :-

1. समय पर होल्डिंग टैक्स जमा करें।
2. अपने-अपने घरों का कूड़ा-कचरा यत्र-तत्र सार्वजनिक स्थलों पर न फेंकें, कुड़ा-कचरा कूड़ा दान में ही डालें।
3. सिंगल यूज प्लास्टिक का उपयोग बिल्कुल न करें, सड़क, नाली-गली को अतिक्रमण से मुक्त रखें।
4. समय पर जन्म एवं मृत्यु का पंजीकरण अवश्य करायें।
5. सभी नगर वासियों अपना भवन बनाने के पूर्व मानचित्र (नक्शा) अवश्य पारित करायें।
6. सभी व्यवसायी बन्धु अपना ट्रेड लाइसेंस अवश्य बनायें।
7. प्रदुषण मुक्त शहर बनाने में सहयोग करें।

नगर परिषद, हिलसा के बढते कदम :-

1. नगर परिषद हिलसा के सभी (1 से 26) वार्डो में डोर टू डोर कूड़ा-कचरा उठाने का कार्य सफाई एजेंसी के द्वारा कराने का प्रबंध किया गया है।
2. नगर परिषद हिलसा में आश्रय स्थल (रैन बसेरा) में पूर्ण सुविधा के साथ संचालन किया जा रहा है।
3. नगर परिषद हिलसा क्षेत्रान्तर्गत सभी (1 से 26) वार्डों में रोशनी की व्यवस्था हेतु स्ट्रीट लाईट प्रत्येक पोल पर लगवाया गया है।
4. नगर परिषद हिलसा क्षेत्रान्तर्गत विभिन्न स्थानों पर पेयजल हेतु प्याउ की व्यवस्था की गयी है।
5. नगर परिषद हिलसा क्षेत्रान्तर्गत सुझाव, शिकायतें एवं जानकारी हेतु **Toll Free NO.- 06111299950** जारी किया गया है।

धनंजय कुमार
मुख्य पार्षद
नगर परिषद, हिलसा (नालंदा)

-: निवेदक :-

श्रीमती दुर्गा कुमारी
उप मुख्य पार्षद
नगर परिषद, हिलसा (नालंदा)

जन-जन की आवाज है केवल सच

केवल सच | Kewalachlive.in वेब पोर्टल न्यूज 24 घंटे आपके साथ | Kewalsach news | केवल सच TIMES

आत्म-निर्भर बनने वाले युवाओं को सपोर्ट करें

आपका छोटा सहयोग, हमें मजबूती प्रदान करेगा

BHIM UPI
G Pay Paytm

www.kewalsach.com www.kewalsachlive.in

-: सम्पर्क करें :-
पूर्वी अशोक नगर, रोड नं.-14, मकान संख्या-28/14,
कंकड़बाग, पटना (बिहार)-800020, मो०:-9431073769, 9308815605

शुद्ध चावल एवं मक्के के आटे से निर्मित नमकीन

Dhunky NAMKEEN

Shree Shyamji Udyog

गजब स्वाद की ! गजब कहानी !

fssai
Lic No. 10424110000004

Veg Biryani
masala pola
katori chaat
rings
snacks

Expanding our Namkeen Family!
Dealers inquiries welcome, contact us today!
NEAR JAI PRAKASH EVENING INTER COLLEGE
JANDAHA ROAD HAJIPUR (VAISHALI)
MOB: 7782053204

जन्मदिन की हार्दिक शुभकामनाएँ

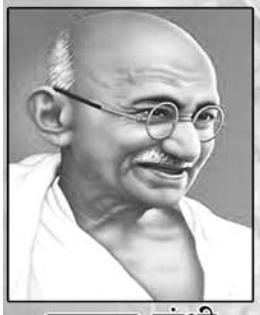

महात्मा गांधी
02 अक्टूबर 1869

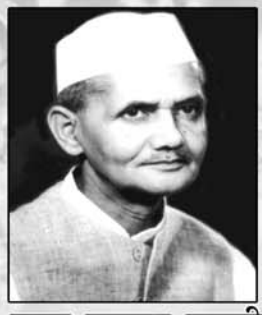

लाल बहादूर शास्त्री
02 अक्टूबर 1904

अभिजीत सावंत
07 अक्टूबर 1981

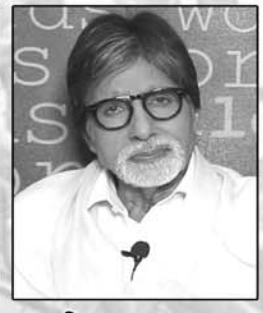

अमिताभ बच्चन
11 अक्टूबर 1942

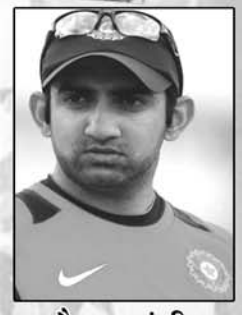

गौतम गंभीर
14 अक्टूबर 1981

स्व०एपीजे कलाम
15 अक्टूबर 1931

नवीन पटनायक
16 अक्टूबर 1946

हेमा मालिनी
16 अक्टूबर 1948

अनिल कुंबले
17 अक्टूबर 1970

वृंदा करात
17 अक्टूबर 1947

सनी देवल
19 अक्टूबर 1956

नवजोत सिंह सिद्धू
20 अक्टूबर 1963

वीरेन्द्र सहवाग
20 अक्टूबर 1978

कादर खान
22 अक्टूबर 1932

परिनीति चोपड़ा
22 अक्टूबर 1988

सुनील भारती मित्तल
23 अक्टूबर 1957

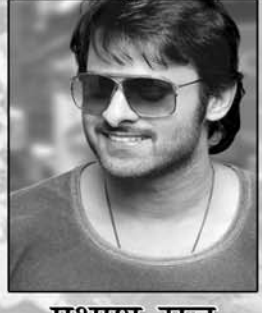

प्रभाश राजू
23 अक्टूबर 1979

रवीना टंडन
26 अक्टूबर 1974

अनुराधा पौडवाल
27 अक्टूबर 1954

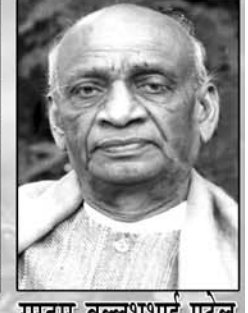

सरदार वल्लभभाई पटेल
31 अक्टूबर 1875

निर्भीकता हमारी पहचान

www.kewalsach.com

केवल सच

हिन्दी मासिक पत्रिका

Regd. Office :-
East Ashok, Nagar, House
No.-28/14, Road No.-14,
kankarbagh, Patna- 8000 20
(Bihar) Mob.-09431073769
E-mail :- kewalsach@gmail.com

Corporate Office:-
Vaishnavi Enclave,
Second Floor, Flat No. 2B,
Near-firing range,
Bariatu Road, Ranchi- 834001
E-mail :- editor.kstimes@rediffmail.com

Delhi Office :-
Sanjay Kumar Sinha,
A-68, 1st Floor, Nageshwar Talla
Shastri Nagar, New Delhi - 110052
Mob.- 09868700991,
09955077308
E-mail:- kewalsach_times@rediffmail.com

Kolkata Office :-
Ajeet Kumar Dube,
131 Chitranjan Avenue,
Near- md. Ali Park,
Kolkata- 700073
(West Bengal)
Mob.- 09433567880
09339740757

Advertisement Rates Per Issue

COLOUR

AREA	FULL PAGE	HALF PAGE	Qr. PAGE
Cover Page	5,00,000/-	N/A	N/A
Back Page	1,60,000/-	N/A	N/A
Back Inside	1, 00000/-	60,000/-	35000
Back Inner	90,000/-	50,000/-	30000
Middle	1,50,000/-	N/A	N/A
Front Inside	1, 00000/-	60,000/-	40000
Front Inner	90,000/-	50,000/-	30000

B & W

AREA	FULL PAGE	HALF PAGE
Inner Page	60,000/-	35,000/-

1. एक साल के नियमित विज्ञापन पर पत्रिका के वेवसाइट **www.kewalsach.com** के फ्रंट पर भी विज्ञापन निःशुल्क तथा आपका वेवसाइट से सीधा लिंक हो सकता है।
2. एक साल के नियमित विज्ञापन पर 10 प्रतिशत की रियायत।
3. आपके प्रोडक्ट या संगठन के प्रचार-प्रसार हेतु आलेख को उचित स्थान।
4. पत्रिका द्वारा सामाजिक कार्य में आपके संगठन/प्रोडक्ट का बैनर/फ्लैक्स को उचित स्थान देकर आपके संगठन का व्यापक प्रचार-प्रसार।
5. विज्ञापन का भुगतान चेक या आर.टी.जी.एस. से ही मान्य होगा।

महाप्रबंधक (विज्ञापन)

क्या सच में बदलेगा बिहार!

अपनी प्रतिक्रिया हमारे ई-मेल पर दें:- editor.kstimes@rediffmail.com

1990 से 2025 के बीच बिहार की राजनीति में तमाम बदलाव के बाद भी बिहार वास्तविक बहार से मरहूम ही है। धर्म एवं लोकतंत्र की नगरी जहां राजनीति की पटकथा से पूरा विश्व परिचित है की किस प्रकार चाणक्य ने नंदवंश का नाश कर एक योग्य शासक को सिंहासन पर बैठाया था और आज भी चाणक्य की युक्ति का इस्तेमाल सभी राजनीतिक दल के नेता करते हैं। 1947 से 1990 तक कांग्रेस सत्ता का संचालन करती आई और 1990 से 2005 तक लालू-राबड़ी की हुकूमत ने बिहार की एक अलग पहचान बनायी तो 2005 से 2025 तक नीतीश कुमार का सुशासन और पलटूराज की कहानी को देख चुका है। इन कालखंडों में विभिन्न राजनीतिक दलों को जन्म दिया जिसने आवाम की सुख-सुविधा का ख्याल रखने की दुहाई देकर उनका बहुमूल्य वोट हासिल करके जिनके विरूद्ध लड़े थे उनके साथ गठबंधन करके सत्ता एवं विपक्ष का सुख प्राप्त कर रहे है। 2025 में बिहार में एक नया क्रांति आयेगा उसकी दुहाई देकर जनसुराज पार्टी का जन्म हुआ है और अब बिहार देश के विकसित राज्यों में टॉप करेगा .....?

02 अक्टूबर 2024 मोहन दास करमचंद गाँधी के जयंति पर बिहार की राजनीति में एक और नई पार्टी का उदय हुआ है जिसने पहले सभी पार्टी के भीतर का सच जानकर अपनी सोच का बिहार बनाने का संकल्प लिया है। अब 02 अक्टूबर को गाँधी और शास्त्री दोनों का अवतरण दिवस है और इस पुनित अवसर पर जनसुराज पार्टी का गठन से लोगों के बीच यह चर्चा होने लगी है कि क्या प्रशांत किशोर गाँधी की राह पर चलेगा या फिर शास्त्री के, जिससे बिहार अपने अतित के गौरवशाली क्षण को फिर से आत्मसात कर सके। 2014 में केन्द्र में मोदी की सरकार बनाकर भाजपा को अपनी बौद्धिक एवं मशीनरी क्षमता का एहसास कराने वाले प्रशांत किशोर को ऐसा लगा कि अब वह बिहारी होने की वजह से बिहार के नेताओं का भी उनका वाजिब हक दिलवा दें उन्होंने अपना बौद्धिक व्यापार बिहार के दिग्गज नीतीश कुमार एवं लालू (कांग्रेस पिछलग्गू) के महागठबंधन को 2015 में सरकार बनाने में कामयाबी दिलवाई। आईटी के जानकार प्रशांत किशोर को ऐसा लगा कि वह राजनीति के प्रचार के अच्छे सलाहकार के साथ एक कुशल राजनेता है और जदयू का दामन थामकर उस वक्त यह साबित कर दिया कि उनका राजनीति विचार लालू परिवार के पार्टी के साथ मेल नहीं खाता लेकिन 2017 में अमित शाह की कूटनीति ने प्रशांत किशोर के राजनीति परिश्रम पर पानी फेर दिया और नीतीश कुमार के साथ मिलकर बिहार में एनडीए की सरकार बना ली। प्रशांत किशोर को अपनी बौद्धिक क्षमता पर शक भी हुआ और राजनीतिक अहंकार को झटका भी लगा तो उन्होंने तय कर लिया की सभी राजनीतिक दलों के भीतर का सच जानने के बाद बिहार की जनता को अपने आईटी के बेहतरीन लोगों के हुजूम के साथ बिहार के युवाओं की मानसिक सोच पर हावि हुआ जा सकता है और महात्मा गाँधी के चम्पारण की आन्दोलन की धरती से पदयात्रा की शुरूआत करके 1990 से 2025 के बीच हुई राजनीति का तिसरा मजबूत विकल्प बना जा सकता है का मार्ग प्रशस्त कर लिया। बिहार की राजनीति को समझने वाली जनता यह सोचने पर मजबूर है की प्रशांत किशोर फरवरी 2005 के चुनाव के बाद किंगमेकर की भूमिका निभाने वाले रामविलास पासवान की तरह होगी लेकिन प्रशांत किशोर दिल्ली के चुनाव की तरह सोच रहे हैं जैसे आप पार्टी का गठन हुआ और पहले ही चुनाव में आप की सरकार प्रचंड बहुमत में बन गयी वैसा ही माहौल बिहार में कायम हो चुका है। प्रशांत किशोर बिहार की व्यथा को समझते हैं और नजदीक से देख रहे हैं और विकसित राज्य का एक रोड मैप भी बनाये हुए हैं जिससे उनकी सोसल मीडिया में लोकप्रियता दिनोंदिन बढ़ती जा रही है। तीसरा ही नहीं बल्कि एक मजबूत विकल्प के रूप में आवाम देख रही है लेकिन जातिवाद के दलदल में धंसी बिहार की जनता को निकाल पाना आसान नहीं है तथा जनसुराज पार्टी कोई नया प्रयोग नहीं कर रही है लेकिन आप जैसा हालात बिहार में नहीं दिखता। जातिवाद से उपर की बात के साथ-साथ रोजगार और शराबबंदी पर अपनी मजबूत प्रतिक्रिया देकर राजनीतिक माहौल बनाने में कामयाबी तो मिल रही है लेकिन जिस प्रकार जिस पार्टी के लोगों के कार्य से अलग होकर जनसुराज का गठन हुआ उसमें उन्हीं दलों के नेताओं की भीड़ बढ़ने लगी है वैसे में युवाओं एवं महिलाओं की उचित भागीदारी पर तलवार लटकना दिखने लगा है। क्या बिहार से मजदूरों का पलायन रूकेगा? क्या बिहार में कल-कारखानों की भीड़ बढ़ेगी? क्या शराबबंदी फिर से लागू होगी? क्या बिहार में अपराधियों का तांडव पर अंकुश लगेगा? क्या बिहार में एल-1 का कमीशन का खेल बंद होगा? क्या सच में प्रशांत किशोर लालू-नीतीश कुमार के विकल्प बन पायेंगे या फिर ओवैसी की तरह भाजपा की बी टीम का नाम जनसुराज है? क्या सच में बदलेगा बिहार.....!

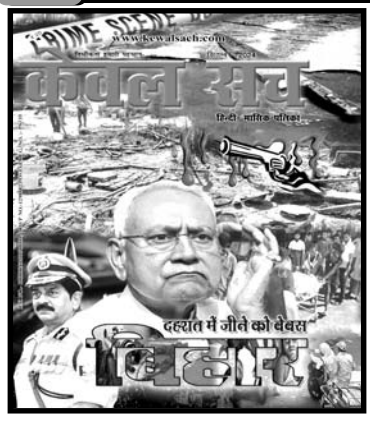

सितम्बर 2024

आपको केवल सच पत्रिका कैसी लगी तथा इसमें कौन-कौन सी खामियाँ हैं, अपने सुझाव के साथ हमारा मार्गदर्शन करें। आपका पत्र ही हमारा बल है। हम आपके सलाह को संजीवनी बूटी समझेंगे।

केवल सच

हमारा पता है :-

राष्ट्रीय हिन्दी मासिक पत्रिका
द्वारा:- ब्रजेश मिश्र
पूर्वी अशोक नगर, रोड़ नं.- 14, मकान संख्या- 14/28
कंकड़बाग, पटना-800020 (बिहार)
फोन:- 9431073769/ 8340360961/ 9955077308

हमारा ई-मेल
kewalsach@gmail.com, editor.kstimes@rediffmail.com
kewalsach_times@rediffmail.com

अफसर

संपादक जी,

मैं केवल सच पत्रिका का नियमित पाठक हूं और आपका संपादकीय को कई बार पढ़ता हूं क्योंकि आपका संपादकीय सटीक जानकारी के साथ किसका कैसा व्यवहार है उसको भी बेबाक ढ़ंग से लिखते हैं। सितम्बर 2024 अंक में ''**सरकार के बेलगाम अफसर**'' संपादकीय पढ़ने के बाद आपकी प्रति चिंता होने लगी है की कहीं आप पदाधिकारी के टारगेट पर न आ जायें। आपकी एक-एक टिप्पणी गोली की तरह चलती है और बिना भेदभाव के खबर को पाठकों के समक्ष रखते हैं।

✦महेन्द्र प्रताप सिंह, मोतीचौक, खगौल, पटना

एक से बढ़कर एक

ब्रजेश जी,

सितम्बर 2024 अंक में उत्तर प्रदेश की संजय सक्सेना की प्रकाशित खबर ''न्यायपालिका को सरकार के हांथ बांधने से बचना होगा'' में गंभीर बातों को रखा गया है। वहीं दूसरी खबर में अजय कुमार ने ''अखिलेश से किनारा करती कांग्रेस'' में भी यूपी की राजनीतिक पृष्ठभूमि पर फोकस करते हुए सटीक जानकारी दी है तथा अजय कुमार की दूसरी खबर ''दलित वोटों की लड़ाई में सपा-बसपा आमने-सामने'' भी कारगर है। पाठकों को यूपी की सटीक राजनीतिक जानकारी केवल सच अब उपलब्ध कराने लगा है।

✦प्रेमसागर पाठक, 108 रेलवे क्वार्टर, बनारस

दहशत में बिहार

मिश्रा जी,

सितम्बर 2024 अंक में मिथिलेश कुमार एवं अमित कुमार की आवरण कथा ''**दहशत में जीने को बेबस बिहार**'' नवादा की ज्वलंत घटना पर सटीक एवं चिंताजनक खबर है। जमीन के विवाद को लेकर हुई इस भीषण आगलगी की घटना ने एकबार फिर बिहार को दहशत में जीने को विवश कर दिया है। दलित बस्ती में जिस प्रकार का कोहराम हुआ उससे राजनेताओं को राजनीतिक सेंकने की कयावद तेज हो चुकी है। बड़ी स्टोरी है लेकिन सभी तथ्यों को पूरी बारीकी के साथ और तिथिवार विषय की जानकारी से बहुत सटीक जानकारी देने के लिए साधुबाद।

✦ ललित यादव, टावर चौक, नवादा, बिहार

मोदी की हुंकार

मिश्रा जी,

आपकी पत्रिका केवल सच में झारखंड विधानसभा चुनाव के मद्देनजर पीएम मोदी की रैली को लेकर प्रकाशित सितम्बर 2024 अंक की गुड्डी साव की खबर ''**परिवर्त्तन महारैली में पीएम मोदी की हुंकार**'' में जनता का मिजाज भाजपा के पक्ष में करने के लिए कई प्रकार की घोषणा भी की। झारखंड की राजनीति में इंडिया गठबंधन और एनडीए का ध्यान आदिवासी पर जा टिका है की किस कारण से आदिवासियों की संख्या प्रतिवर्ष घटती जा रही है पर भी खबर में स्थान दिया गया है। खबर में प्रदेश के गंभीर मुद्दे को स्थान देना सही लगा।

✦ गणेश ठाकुर, करमटोली चौक, राँची

नये कानून

संपादक जी,

केवल सच, पत्रिका के सितम्बर अंक 2024 में देश में लागू हुए नये कानून की सटीक जानकारी प्रकाशित खबर से हुई है। शिवानंद गिरी की खबर ''**अंग्रेजों के बनाये कानून हुए समाप्त, नये कानून में क्या हुए प्रमुख बदलाव**'' में केन्द्र सरकार द्वारा 1560 कानून का समाप्त कर दिया और अब नये तीन कानून लागू होने पर भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता-2023, भारतीय न्याय संहिता-2023 और भारतीय साक्ष्य अधि नियम-2023 में बहुत ऐसे कानून हैं जिससे आमजनता को बहुत राहत मिल रहा है और भविष्य में कई प्रकार की सहूलियत होगी।

✦ गौरी शंकर राव, अशोक नगर, नई दिल्ली

क्राइम की खबरें

संपादक जी,

राँची जिला की कई आपराधिक घटनाओं को केन्द्रीत करते हुए कई क्राईम के मामले की खबर को ओमप्रकाश ने सितम्बर 2024 अंक में लिखा है जिसको पढ़कर बुहत सारी जानकारी प्राप्त हुई। ''बीजेपी कार्यकर्त्ताओं और पुलिस के बीच भिड़ंत'', ''बाईक चोर गिरोह का पर्दाफास'', ''लालपुर थाने में दो युवकों ने पुलिस अधिकारी को पीटा'', और ''वरीय अधि कारियों ने सुनी लोगों की समस्याएँ'' भी बहुत सटीक खबर है। गुड्डू कुमार सिंह की भोजपुर की क्राईम की खबर भी पठनीय है।

✦ संजय सिन्हा, सैनिक मॉर्केट, राँची, झा०

अन्दर के पन्नों में

कई परियोजनाओं का शिलान्यास.....89

RNI No.- BIHHIN/2006/18181, DAVP No.- 129888

समृद्ध भारत खुशहाल भारत

निर्भीकता हमारी पहचान

केवल सच

राष्ट्रीय हिन्दी मासिक पत्रिका

वर्ष:- 19, | अंक:- 221, | माह:- अक्टूबर 2024, | मूल्य:- 20/- रू

फाउंडर

श्रद्धेय गोपाल मिश्र

श्रद्धेय सुषमा मिश्र

संपादक

ब्रजेश मिश्र

9431073769 8340360961

editor.kstimes@rediffmail.com

kewalsach@gmail.com

प्रधान संपादक

अरूण कुमार बंका 7782053204

सुरजीत तिवारी 9431222619

निलेन्दु कुमार झा 9431810505, 8210878854

सच्चिदानन्द मिश्र 9934899917

रामानंद राय 9905250798

डॉ० शशि कुमार 9507773579

दिनेश कुमार सिंह 9470829615

सोहन कुमार 7004120150, 9334714978

मुकेश कुमार साव 9709779465

संपादकीय सलाहकार

अमिताभ रंजन मिश्र 9430888060, 8873004350

अमोद कुमार 9431075402

महाप्रबंधक

त्रिलोकी नाथ प्रसाद 9308815605, 9122003000

triloki.kewalsach@gmail.com

महाप्रबंधक (विज्ञापन)

पूनम जयसवाल 9430000482, 9798874154

मनीष कुमार कमलिया 9934964551, 8809888819

उप-संपादक

अरबिन्द मिश्रा 9934227532, 8603069137

प्रसुन्न पुष्कर 9430826922, 7004808186

ब्रजेश सहाय 7488696914

ललन कुमार 7979909054, 9334813587

पंकज कुमार सिंह 9693850669 , 9430605967

संयुक्त संपादक

अमित कुमार 'गुड्डू' 9905244479, 7979075212

राजीव कुमार शुक्ला 9430049782, 7488290565

काशीनाथ गिरी 9905048751, 9431644829

सहायक संपादक

शशि रंजन सिंह 8210772610, 9431253179

मिथिलेश कुमार 9934021022, 9431410833

नवेन्दु कुमार मिश्र 9570029800, 9199732994

ऋषिकेश पाण्डेय 7488141563, 7323850870

कामोद कुमार कंचन 8971844318,

समाचार प्रबंधक

सुधीर कुमार मिश्र 9608010907

ब्यूरो-इन-चीफ

संकेत कुमार झा 9386901616, 7762089203

बिनय भूषण झा 9473035808, 8229070426.

.

विधि सलाहकार

शिवानन्द गिरि 9308454485

रवि कुमार पाण्डेय 9507712014

चीफ क्राइम ब्यूरो

सैयद मो० अकील 9905101976, 8521711976

आनन्द प्रकाश 9508451204, 8409462970

साज-सज्जा प्रबंधक

अमित कुमार 9905244479

amit.kewalsach@gmail.com

कार्यालय संवाददाता

सोनू यादव 8002647553, 9060359115

प्रसार प्रतिनिधि

कुणाल कुमार 9905203164

बिहार प्रदेश जिला ब्यूरो

पटना (श०)	:-	श्रीधर पाण्डेय	9470709185
(म०)	:-	गौरव कुमार	9472400626
(ग्रा०)	:-	मुकेश कुमार	7004761573
बाढ़	:-		
भोजपुर	:-	गुड्डू कुमार सिंह	8789291547
बक्सर	:-	बिन्ध्याचल सिंह	8935909034
कैमूर	:-		
रोहतास	:-	अशोक कुमार सिंह	7739706506
	:-		
गया (श०)	:-	सुमित कुमार मिश्र	7667482916
(ग्रा०)	:-		
औरंगाबाद	:-		
जहानाबाद	:-	नवीन कुमार रौशन	9934039939
अरवल	:-	संतोष कुमार मिश्रा	9934248543
नालन्दा	:-		
	:-		
नवादा	:-	अमित कुमार	9934706928
	:-		
मुंगेर	:-		
लखीसराय	:-		
शेखपुरा	:-		
बेगूसराय	:-		
	:-		
खगड़िया	:-		
समस्तीपुर	:-		
जमुई	:-	अजय कुमार	09430030594
वैशाली	:-		
	:-		
छपरा	:-		
सिवान	:-		
	:-		
गोपालगंज	:-		
	:-		
मुजफ्फरपुर	:-	.	
	:-		
सीतामढ़ी	:-		
शिवहर	:-		
बेतिया	:-	रवि रंजन मिश्रा	9801447649
बगहा	:-		
मोतिहारी	:-	संजीव रंजन तिवारी	9430915909
दरभंगा	:-		
	:-		
मधुबनी	:-		
	:-	प्रशांत कुमार गुप्ता	6299028442
सहरसा	:-		
मधेपुरा	:-		
सुपौल	:-		
किशनगंज	:-		
	:-		
अररिया	:-	अब्दुल कय्यूम	9934276870
पूर्णिया	:-		
कटिहार	:-		
भागलपुर,	:-		
(ग्रा०)	:-	रवि पाण्डेय	7033040570
नवगछिया	:-		

दिल्ली कार्यालय

केवल सच, हिन्दी मासिक पत्रिका,
द्वारा- संजय कुमार सिन्हा
A-68, 1st Floor,
नागेश्वर तल्ला, शास्त्रीनगर, न्यू
दिल्ली-110052
संजय कुमार सिन्हा, स्टेट हेड
मो०- 9868700991, 9431073769

उत्तरप्रदेश कार्यालय

केवल सच, हिन्दी मासिक पत्रिका,
....., स्टेट हेड

सम्पर्क करें

9308815605

पश्चिम बंगाल कार्यालय

केवल सच, हिन्दी मासिक पत्रिका,
द्वारा- अजीत कुमार दुबे
131 चितरंजन एवेन्यू,
कोलकात्ता, पश्चिम बंगाल- 700073
अजीत कुमार दुबे, स्टेट हेड
मो०- 9433567880, 9308815605

मध्य प्रदेश कार्यालय

केवल सच, हिन्दी मासिक पत्रिका,
हाउस नं.-28, हरसिद्धि कैम्पस
खुशीपुर, चांबड़
भोपाल, मध्य प्रदेश- 462010
अभिषेक कुमार पाठक, स्टेट हेड
मो०- 8109932505,

झारखंड कार्यालय

केवल सच, हिन्दी मासिक पत्रिका,
वैष्णवी इंक्लेव,
द्वितीय तल, फ्लैट नं- 2बी
नियर- फायरिंग रेंज
बरियातु रोड, राँची- 834001

छत्तीसगढ़ कार्यालय

केवल सच, हिन्दी मासिक पत्रिका,

....., स्टेट हेड

सम्पर्क करें

8340360961

संपादकीय व प्रधान कार्यालय:-

☞ पूर्वी अशोक नगर, रोड नं:-14, मकान संख्या:- 14/28, कंकड़बाग, पटना-800020 (बिहार) मो०- 9431073769, 9955077308

☞ .e-mail:- kewalsach@gmail.com, e ditor.kstimes@rediffmail.com
kewalsach_times@rediffmail.com

☞ स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक ब्रजेश मिश्र द्वारा सांध्य प्रवक्ता खबर वर्क्स, ए- 17, वाटिका विहार (आनन्द विहार), अम्बेडकर पथ, पटना 8000 14(बिहार) एवं पूर्वी अशोक नगर, रोड नं. 14, कंकड़बाग पटना-800020 से प्रकाशित, संपादक- ब्रजेश मिश्र। RNI NO.-BIHHIN/2006/18181

☞ पत्रिका में प्रकाशित समाचारों से संपादक की सहमति आवश्यक नहीं है।

☞ सभी प्रकार के वाद-विवादों का निपटारा पटना न्यायालय के अधीन होगा।

☞ आलेख पर कोई आपत्ति हो तो एक महीने के भीतर खंडन करें।

☞ किसी भी लेख के लिए रचनाकार/लेखक स्वयं जिम्मेवार होंगे।

☞ **सभी पद अवैतनिक हैं।**

☞ फोटो-समाचार साभार भी (माध्यम- इंटरनेट एवं अन्य स्त्रोत)

☞ कोई भी शिकायत हमारे पते पर लिखकर भेजें।

☞ **विज्ञापन का भुगतान चेक या ड्राफ्ट एवं RTGS से ही मान्य होगा।**

☞ भुगतान Kewal Sach को ही करें। प्रतिनिधियों को नगद न दें।

☞ A/C No. :- 0600050004768
BANK :- Punjab National Bank
IFSC Code :- PUNB0060020
PAN No. :- AAJFK0065A

प्रधान संपादक

.....

.....

झारखण्ड स्टेट ब्यूरो

.....

झारखण्ड सहायक संपादक

चन्द्र शेखर पाठक 9572529337
ब्रजेश मिश्र 7654122344 -7979769647
अभिजीत दीप 7004274675 -9430192929

उप संपादक

.....

.....

संयुक्त संपादक

अनंत मोहन यादव 9546624444, 7909076894

.....

विशेष प्रतिनिधि

भारती मिश्रा 8210023343, 8863893672

.....

.....

झारखण्ड प्रदेश जिला ब्यूरो

राँची :- अभिषेक मिश्र 7903856569
:- ओम प्रकाश 9708005900
साहेबगंज :-
खूँटी :-
जमशेदपुर :- तारकेश्वर प्रसाद गुप्ता 9304824724
हजारीबाग :-
जामताड़ा :-
दुमका :-
देवघर :-
धनबाद :-
बोकारो :-
रामगढ़ :-
चाईबासा :-
कोडरमा :-
गिरीडीह :-
चतरा :- धीरज कुमार 9939149331
लातेहार :-
गोड्डा :-
गुमला :-
पलामू :-
गढ़वा :-
पाकुड़ :-
सरायकेला :-
सिमडेगा :-
लोहरदगा :-

श्री चन्द्र प्रकाश सिंह

प्रधान संरक्षक सह प्रबंध संपादक

'केवल सच' पत्रिका **एवं 'केवल सच टाइम्स'**

राष्ट्रीय संगठन मंत्री, राष्ट्रीय मजदूर कांग्रेस (इंटक)

पूर्व निदेशक सदस्य, ओरियेंटल बैंक ऑफ कॉमर्स

09431016951, 09334110654

डॉ. सुनील कुमार

शिशु रोग विशेषज्ञ सह मुख्य संरक्षक

'केवल सच' पत्रिका

एवं 'केवल सच टाइम्स'

एन.सी.- 115, एसबीआई ऑफिसर्स कॉलोनी,

लोहिया नगर, कंकड़बाग, पटना- 800020

फोन- 0612/3504251

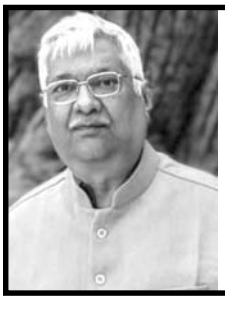

श्री सज्जन कुमार सुरेका

मुख्य संरक्षक

'केवल सच' पत्रिका **एवं 'केवल सच टाइम्स'**

डी- 402 राजेन्द्र विहार, फॉरेस्ट पार्क

भुवनेश्वर- 751009 मो-09437029875

सुधीर कुमार

मुख्य संरक्षक सह निदेशक ''**मगध इंटरनेशनल स्कूल**'' टेकारी

'' **केवल सच** '' पत्रिका **एवं** '' **केवल सच टाइम्स** ''

9060148110

sudhir4s14@gmail.com

कैलाश कुमार मौर्य

मुख्य संरक्षक

'केवल सच' पत्रिका **एवं 'केवल सच टाइम्स'**

व्यवसायी

पटना, बिहार

7360955555

बिहार राज्य प्रमंडल ब्यूरो		
पटना		
मगध		
सारण		
तिरहुत		
पूर्णिया	**धर्मेन्द्र सिंह**	9430230000 7004119966
भागलपुर		
मुंगेर		
दरभंगा		
कोशी		

विशेष प्रतिनिधि	
आशुतोष कुमार	9430202335, 9304441800
सुमित राज यादव	9472110940, 8987123161
बेंकटेश कुमार	8521308428, 9572796847
राजीव नयन	9973120511, 9430255401
मणिभूषण तिवारी	9693498852
दीपनारायण सिंह	9934292882
आनन्द प्रकाश पाण्डेय	9931202352, 7808496247
विनित कुमार	8210591866, 8969722700
रामजीवन साहू	9430279411, 7250065417
कुमार राजू	9310173983,
रजनीश कांत झा	9430962922, 7488204140

छायाकार	
त्रिलोकी नाथ प्रसाद	9122003000, 9431096964
मुकेश कुमार	9835054762, 9304377779
जय प्रसाद	9386899670,
कृष्णा प्रसाद	9608084774, 9835829947

झारखंड राज्य प्रमंडल ब्यूरो		
राँची		
हजारीबाग		
पलामू		
दुमका		
चाईबासा		

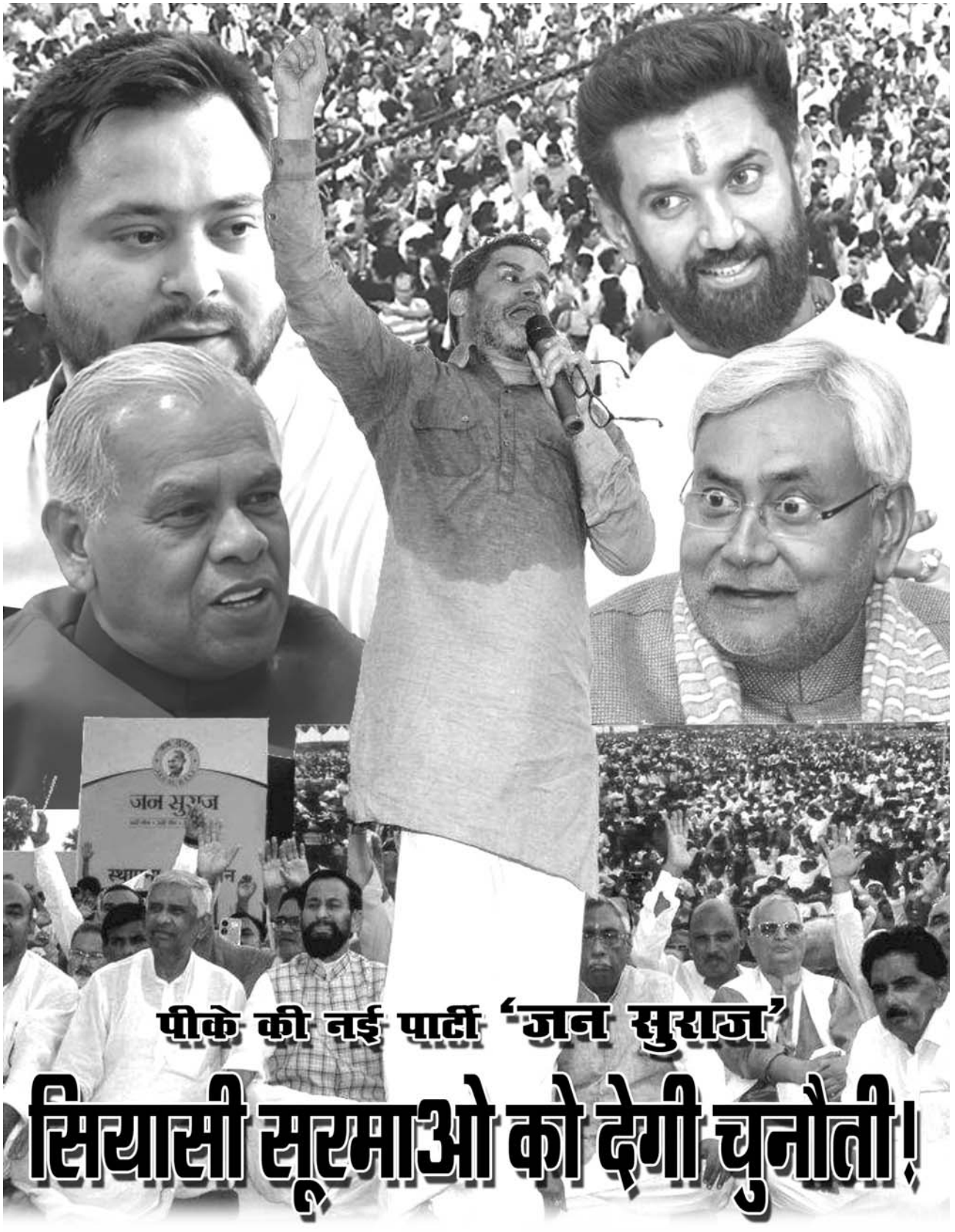

पीके की नई पार्टी 'जन सुराज'

सियासी सूरमाओ को देगी चुनौती!

● अमित कुमार

बीते अगस्त माह को राजधानी पटना के बापू सभागार में जनसुराजियों की खचाखच भीड़ ने 2 अक्टूबर को नई राजनीतिक पार्टी बनाने का जो संकल्प लिया था, उसे पूरा किया गया और प्रशांत किशोर ने बिहार में अपनी नई पार्टी लाँच कर दी। जन सुराज को राजनीतिक दल बनाकर प्रशांत किशोर ने पॉलिटिक्स की पहली परीक्षा पास कर ली। पार्टी की लांचिग के लिए उन्होंने 2 अक्टूबर को पटना में अधिवेशन बुलाया। पटना के वेटनरी कालेज ग्राउंड में जन सुराजियों की जुटी भीड़ उनके दावे के अनुरूप तो नहीं दिखी, लेकिन बाढ़ और त्योहारी दिन के बावजूद जितने लोग आए, उसे कम नहीं कहा जा सकता। उन्होंने पार्टी का नाम जन सुराज घोषित किया। इसके साथ ही जनता से बिहार के विकास के कई बड़े वादे भी किये। उन्होंने अन्य पार्टियों पर निशाना साधते हुए पार्टी की विचारधारा और बिहार के विकास करने के लिये अपना फॉर्मूला बताया। बिहार की दुर्दशा के मूल कारण को समझने, जनता से मिलकर जमीनी हकीकत जानने और बिहार के विकास का ब्लूप्रिंट तैयार करने के उद्देश्य से प्रशांत किशोर ने साल 2022 में अपनी पदयात्रा की शुरुआत की थी. जन सुराज की वेबसाइट पर मौजूद आंकड़ों के मुताबिक, 665 दिनों में जन सुराज यात्रा 2697 गांव, 235 ब्लॉक और 1319 पंचायतों से गुजरी है। प्रशांत किशोर ने जो शुरुआत की है, वो बिल्कुल अनोखी है। आज तक किसी राजनीतिक दल ने इस तरह से अपना गठन नहीं किया, जिस तरह से प्रशांत किशोर ने किया है। उन्होंने दो साल तक पदयात्रा की, गांव-गांव गए, लोगों की भावनाएं समझीं और फिर जाकर पार्टी का गठन किया। बिहार के चुनावी मैदान में एक नए प्लेयर के तौर पर बड़ी धूम-धाम के साथ प्रशांत किशोर की एंट्री हुई है। वो बदलाव का एक प्रतीक बनना चाहते हैं। अभी दावा है कि लालू और नीतीश की राजनीति से जो लोग ऊब गए हैं और बदलाव चाहते हैं, उनका वो विकल्प हैं।

जन सुराज के कार्यवाहक अध्यक्ष मनोज भारती

गौरतलब है कि प्रशांत किशोर ने पार्टी का प्रदेश कार्यकारी अध्यक्ष मनोज भारती को घोषित किया, जो कि पूर्व आईएफएस और कई देशों में राजदूत रह चुके हैं। मनोज भारती को जनसुराज के पहले कार्यवाहक अध्यक्ष के रूप में नियुक्त किया गया है। उनका कार्यकाल मार्च 2025 तक रहेगा। इस घोषणा के बाद मधुबनी जिले का खिरहर गांव का नाम सुर्खियों में आ गया है। वही प्रशांत किशोर ने संबोधित करते हुए कहा कि बिहार में हमारी पार्टी बन गई है। हमने पहले ही साफ कर दिया था कि हमें कोई पद नहीं चाहिए। कार्यवाहक प्रदेश अध्यक्ष बनाए गए हैं दलित समाज से। हमने दलित अध्यक्ष इस लिए नहीं बनाया कि वो दलित है बल्कि उन्हें इस लिए बनाया क्योंकि वो सक्षम हैं। जन सुराज में जात पात के नाम पर पद नहीं मिलता है, बल्कि उसके अनुभव और काबिल होने के आधार पर जगह मिलेगी। कार्यकारी प्रदेश अध्यक्ष मधुबनी के रहने वाले IIT कानपुर से पास हुए, इसके बाद IFS में सलेक्ट हुए, चार देशों में राजदूत रहे है, कई किताबें भी लिखी हैं। प्रशांत किशोर ने कहा ये तो शुरुआत है अभी आगे आगे देखिए कैसे कैसे चेहरे को आगे लाते हैं। उन्होंने स्पष्ट तौर पर कहा कि वह न तो इस दल के नेता होंगे और नहीं नेतृत्व परिषद में शामिल होंगे। प्रशांत के मुताबिक वो पहले की तरह ही दल बनने के बाद भी बिहार की पदयात्रा करते रहेंगे। उन्होंने ये भी बताया कि दल बनने के बाद अगले साल की शुरुआत में फरवरी-मार्च के महीने में पटना के गांधी मैदान से जन सुराज बिहार के समग्र विकास के लिए अपना ब्लूप्रिंट जारी करेगा और बिहार के लोगों को बताया जाएगा कैसे बिहार भी देश के अग्रणी राज्यों में शामिल हो सकता है। बिहार के हर एक पंचायत का अलग-अलग घोषणापत्र भी जारी किया जाएगा।

बताते चले कि जन सुराज पार्टी के स्थापना कार्यक्रम में प्रार्थना के बाद संविधान की प्रस्तावना पढ़ी गई। चंपारण के एक रिटायर्ड टीचर गोरख महतो ने संविधान की प्रस्तावना

पढ़ी। इस दौरान उन्होंने कहा कि प्रशांत किशोर 21वीं सदी के महानायक हैं, जिन्होंने उनके जैसे एक अति पिछड़ी जाति के आदमी को इतना सम्मान दिया है। वही पीके ने 'ह्यूमन फर्स्ट' का नारा देते हुए कहा कि हमारी पार्टी की विचारधारा मानवता है। मानवता से बढ़कर आगे कोई बात नहीं है। लोगों के बीच जाति, धर्म के आधार पर भेदभाव नहीं होना चाहिए। इसके साथ ही उन्होंने कहा कि हम लोग यहां मुख्यमंत्री और विधायक बनने के लिए नहीं जुटे हैं। हम लोग इस उद्देश्य के साथ यहां जुटे हैं कि अपने जीवनकाल में एक ऐसा बिहार देखें, जहां हरियाणा, पंजाब, गुजरात, महाराष्ट्र से लोग रोजी-रोजगार करने आएं, तब मानेंगे कि बिहार में विकास हुआ है। प्रशांत किशोर ने कहा कि बिहार को विशेष राज्य का दर्जा नहीं चाहिए। हमे केंद्र पर निर्भर नहीं रहना है। बिहार के बैंकों में 4 लाख 61 हजार करोड़ जमा किया, लेकिन बैंक से लोन मिला। एक लाख 61 हजार करोड़ बाकी पैसा बिहार का दूसरे राज्यों में चला गया। जो पैसा बिहार के लोग बैंक में जमा करते हैं, लोन के तौर पर हमें भी 70 प्रतिशत मिल सके तो बिहार का काफी विकास हो जाएगा। हर साल ढाई लाख करोड़ रुपया चार प्रतिशत लोन पर दिया जाएगा। इस पैसे से बिहार में इतना विकास होगा, जिसकी कल्पना आपने नहीं की होगी। बिहार के लोगों का पैसा बिहार के लोगों को मिले ऐसी व्यवस्था करेंगे। जन सुराज का संकल्प है 60 से ज्यादा उम्र के लोगों को दो हजार रुपया दिया जाएगा, ताकि हमारे बुजुर्ग ठीक से जीवन यापन कर सकें। साथ ही साथ शराबबंदी हटा कर उन पैसों को शिक्षा पर खर्च किया जाएगा। पांच लाख करोड़ रुपया जुटायेंगे और उस पैसे से बिहार की शिक्षा को ऐसा सुधारेंगे की देश विदेश से लोग शिक्षा लेने बिहार आयेंगे। पंद्रह साल से कम उम्र के बच्चे इतना पढ़ लेंगे कि उन्हें किसी के आगे हाथ नहीं पसारना होगा। पंद्रह साल से पचास साल के उम्र के लोगों को हर हाथ में दस से बारह हजार की नौकरी बिहार में ही मिलेगी। हमारी सरकार बनेगी तो एक घंटे के अंदर शराबबंदी को उठाकर फेंक देंगे। शराबबंदी और पढ़ाई का लेना-देना है। अगर बिहार में विश्वस्तरीय शिक्षा व्यवस्था बनानी है तो 5 लाख करोड़ रुपये चाहिए। शराबबंदी हटाएंगे तो उससे आने वाले टैक्स का पैसा बजट में नहीं जाएगा। नेताजी की सुरक्षा, सड़क, बिजली और पानी में नहीं खर्च होगा। उस पैसे को सिर्फ नई शिक्षा व्यवस्था बनाने में खर्च किया जाएगा। हर साल 20 हजार करोड़ रुपये का शराबबंदी से नुकसान हो रहा है। अगर 20 साल तक इस पैसे को खर्च करें तो बिहार की शिक्षा व्यवस्था बदल जाएगी। आगे पी.के. ने कहा कि बिहार के किसान परेशान हैं। सर्वे की वजह से बिहार में गोली चल जाएगी। हर जगह लोग इससे परेशान हैं। हर सीओ एक महीना के अंदर पचास लाख से एक करोड़ कमा रहा है। बिहार में भूमि सुधार लागू होना चाहिए। पांच साल में किसकी जमीन है इसकी व्यवस्था की जाएगी। बिहार में 60 प्रतिशत आबादी के पास जमीन नहीं है। खाने वाली खेती नहीं बल्कि कमाने वाली खेती को प्राथमिकता दी जाएगी। ऐसी खेती में मजदूरी फ्री कर दिया जाएगा। मनरेगा के मजदूर को खेती से जोड़ा जाएगा। खेती को इससे काफी फायदा मिलेगा। बिहार में महिलाओं का जीवन सुधारना है। जन सुराज ने तय किया है कि अगर कोई महिला लोन लेना चाहती है उसे चार प्रतिशत सालाना पर लोन मिलेगा। लोन पर सरकार की गारंटी रहेगी। पीके ने कहा कि बिहार के लोगों को अबतक यही बताया गया कि सड़क और नाले का निर्माण ही विकास है। हमारे पास ऐसे बिहार के विकास का ऐसा मॉडल है, जो बेंगलुरु और चेन्नई से

राज्य का मुकाबला कराएगा। प्रशांत किशोर ने कहा कि भाजपा ने अयोध्या में श्रीराम मंदिर निर्माण का वादा किया था। वह पूरा हो गया। नीतीश ने सड़क और बिजली का वादा किया था। वह भी पूरा हो गया। हम लोगों से पूछ रहे हें कि मंदिर, सड़क और बिजली के बाद आपके बच्चों को शिक्षा, रोजगार और स्वास्थ्य की सुविधा चाहिए या नहीं। वही प्रशांत किशोर ने कहा कि बिहार के लोगों ने पिछड़ों के सम्मान के लिए लालू यादव को वोट दिया। लालू राज में पिछड़ों को सम्मान तो मिला लेकिन सड़क और बिजली नहीं मिली। फिर नीतीश कुमार को सड़क और बिजली के लिए वोट दिया, नीतीश ने घर-घर बिजली पहुंचा दी भले ही बिल दोगुना हो गया। फिर मोदी को गैस सिलेंडर के लिए वोट दिया। सिलेंडर का दाम 1000 से ऊपर हो गया, लेकिन सिलेंडर हर घर तक पहुंच गया। आपने अनाज के लिए वोट दिया तो अनाज मिल रहा, बिजली के लिए वोट दिया तो बिजली भी मिल रही है, आवाज के लिए वोट दिया तो पिछड़ों को आवाज भी मिली है। मगर किसी ने अपने बच्चों की पढ़ाई और रोजगार के लिए वोट नहीं दिया। इसलिए बिहार के बच्चे अनपढ़ और मजदूर रह गए। सभी अपने बच्चों का चेहरा याद करके बताएं कि उन्होंने पढ़ाई और रोजगार के नाम पर कभी वोट दिया है। सब लोग चाहते हैं कि पढ़ाई और रोजगार चाहिए, लेकिन किसी ने इस मुद्दे पर वोट दिया ही नहीं। इन मुद्दों पर वोट देंगे तभी तरक्की होगी। एक बार पढ़ाई और रोजगार के लिए वोट देना होगा, बच्चों के विकास के लिए वोट देना होगा। वही नीतीश कुमार के भविष्य पर उन्होंने कहा कि लंबी पारी के बाद अब नीतीश कुमार को अवकाश ले लेना चाहिए। यदि वे स्वयं ऐसा नहीं करते हैं तो, जनता उन्हें बिठा देगी। ओडिशा के मुख्यमंत्री नवीन पटनायक ने अच्छा काम किया। लेकिन, समय आया तो जनता ने उन्हें पद से हटा दिया।

गौरतलब है कि इस वर्ष हुए लोकसभा चुनाव में जीते विधानसभा सदस्यों की सीट खाली हो जाने के कारण बिहार की चार सीटों पर उपचुनाव होने हैं, इसे लेकर पीके ने कहा कि बिहार का चुनाव 2025 में जीतना चाहते हैं या 2024 में ही जीतना चाहते हैं? लोग हमको बहुत बड़ा रणनीतिकार कहते हैं। हम आपको रणनीति बताते हैं। नवंबर में चार सीटों पर उपचुनाव है। आप बताइए चुनौती ले लें। हरा दें चारों को। 2025 तक नहीं रुकना है। नवंबर 2024 में ही हिसाब बराबर कर दिया जाए। आपके भरोसे ठान रहे हैं, भागना नहीं है। इसके साथ ही उन्होंने उपचुनाव के लिए बिगुल भी फूंक दिया है। पीके ने 2 अक्टूबर को कहा कि 2025 में होने वाले बिहार विधानसभा चुनाव से पहले उनकी जन सुराज पार्टी चुनावी मैदान में उतरेगी। पार्टी तरारी, रामगढ़, बेलागंज और इमामगंज सीट पर उपचुनाव में अपने प्रत्याशी उतारेगी। नवंबर महीने में इन चारों सीटों पर उपचुनाव की संभावना है। चारों विधानसभा सीट विधायकों के सांसद बनने से खाली हुई है। भोजपुर जिले की तरारी विधानसभा सीट से CPI (ML) L विधायक सुदामा प्रसाद संसद पहुंच गए है। इस साल हुए लोकसभा चुनाव में उन्होंने आरा लोकसभा सीट से बीजेपी नेता और पूर्व मंत्री आरके सिंह को हराया है। वहीं, रामगढ़ विधानसभा सीट से आरजेडी विधायक और पूर्व मंत्री सुधाकर सिंह के सांसद बनने से रिक्त हुई है। उन्होंने बक्सर लोकसभा सीट से जीत दर्ज की थी। गया जिले की बेलागंज

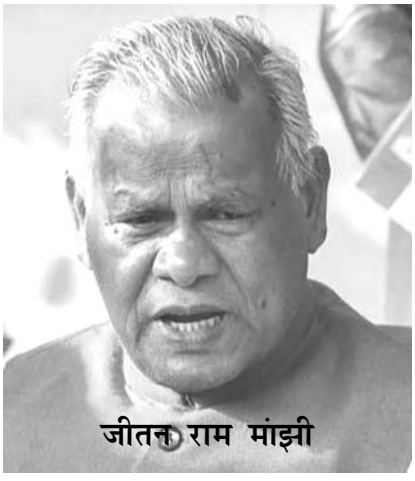
जीतन राम मांझी

विधानसभा से आरजेडी नेता सुरेंद्र यादव विधायक थे, लेकिन अब वो जहानाबाद से सांसद है। इसके अलावा, इमामगंज सीट से पूर्व मुख्यमंत्री जीतन राम मांझी ने 2020 में विधानसभा चुनाव जीती थी, जो अब एनडीए सरकार में केंद्रीय मंत्री हैं।

बहरहाल, प्रशांत किशोर की नई पार्टी और उनके वादों का लिटमस टेस्ट सबसे पहले उपचुनाव में होगा। जानकारों का कहना है कि उपचुनाव के नतीजों से उनका राजनीतिक भविष्य भी तय होगा। जिन चार सीटों पर उपचुनाव होने हैं, उनमें से दो आरजेडी का गढ़ माना जाता है, जबकि 1 सीट पर पिछले 10 सालों से CPI(ML)L और एक पर HAM का कब्जा रहा है। उपचुनाव ही इंडिकेटर होगा कि बिहार के लोगों ने प्रशांत किशोर को कितना अपनाया है। इसी पर उनकी आगे की राजनीति निर्भर करेगी। उपचुनाव में अगर वो कोई मजबूत हस्तक्षेप कर पाते हैं तो विधानसभा चुनाव के लिए उम्मीद जगेगी। अगर वो इसमें फेल हो जाते हैं तो उनका आंदोलन बहुत पीछे चला जाएगा।

सुदामा प्रसाद

वही कैमूर जिले की रामगढ़ विधानसभा सीट पर आरजेडी का दबदबा है। बिहार आरजेडी अध्यक्ष जगदानंद सिंह यहां से 6 बार विधायक रह चुके हैं। 2020 में उनके बेटे सुधाकर सिंह आरजेडी के टिकट पर यहां से MLA चुने गए थे। आरजेडी के ही अंबिका यादव यहां से दो बार विधायक रहे हैं। 2015 में बीजेपी को पहली बार यहां जीत मिली थी। रामगढ़ सीट पर यादव, मुस्लिम और राजपूत मतदाता अहम भूमिका निभाते हैं। ऐसे में प्रशांत किशोर को आरजेडी के MY (मुस्लिम-यादव) समीकरण की तोड़ निकालनी होगी। अगर वो मुस्लिम और रविदास वोटों को अपने पाले में लाने में सफल रहते हैं तो उपचुनाव के नतीजे चौंकाने वाले हो सकते हैं। गया जिले की बेलागंज विधानसभा सीट भी आरजेडी का गढ़ है। सुरेंद्र यादव यहां से 8 बार विधायक चुने गए हैं। 1990 में वो पहली बार जनता दल के टिकट पर MLA बने थे। साल 2000 से वो आरजेडी के टिकट पर जीतते आ रहे हैं। बेलागंज सीट पर भी मजबूत MY समीकरण है, जो पिछले 30 सालों से देखने को मिल रहा है। उपचुनाव के लिए सुरेंद्र यादव के बेटे विश्वनाथ आरजेडी की ओर से अपनी दावेदार पेश कर रहे हैं। प्रशांत किशोर का इस चुनाव में सबसे पहला लिटमस टेस्ट होगा। पीके कहते हैं कि जगदानंद सिंह को उनके घर में हराएंगे। मांझी को उनके घर में हराएंगे। जनसुराज पार्टी में कितना दम है ये इसी चुनाव में साफ हो जाएगा। चुनाव के दो पहलू हैं- रनर या विनर। अगर रनर भी बनते हैं, तो माना जाएगा कि लालू-नीतीश के रहते हुए उन्होंने टक्कर पेश की है। वही गया जिले की इमामगंज आरक्षित सीट है। हिंदुस्तानी आवाम मोर्चा के संरक्षण और वर्तमान में केंद्रीय मंत्री जीतन राम मांझी यहां से दो बार विधायक रहे हैं। उनसे पहले उदय नारायण चौधरी इस सीट से पांच बार अलग-अलग पार्टियों के टिकट पर MLA चुने गए हैं। 2020 विधानसभा चुनाव जीतन राम मांझी की टक्कर उदय नारायण चौधरी से हुई थी। इस सीट पर कोइरी जाति की आबादी सबसे ज्यादा, जो निर्णायक साबित होते हैं। दूसरे स्थान पर दलित में मुसहर हैं और तीसरे नंबर पर मुसलमान हैं। तरारी विधानसभा सीट की पहचान CPI(ML)L सांसद सुदामा प्रसाद से हैं। प्रसाद हलवाई समुदाय की कानू जाति से हैं, जो अन्य पिछड़ा वर्ग (ओबीसी) श्रेणी में आती है। इस साल हुए लोकसभा चुनाव में आरा सीट से बीजेपी नेता आर.के. सिंह को हरा कर उन्होंने सभी को चौंका दिया। प्रसाद ने करीब 60 हजार वोटों के

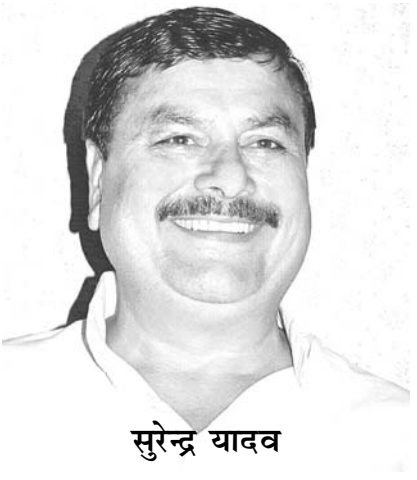
सुरेन्द्र यादव

अंतर से जीत दर्ज की थी। तरारी विधानसभा सीट पर यादव, भूमिहार और मुस्लिम मतदाता निर्णायक भूमिका में हैं। उपचुनाव में CPI(ML)L की ओर से राजू यादव को टिकट देने की चर्चा है। वहीं कयास लगाए जा रहे हैं कि बीजेपी बाहुबली सुनील पांडेय के बेटे विशाल प्रशांत पर दांव लगा सकती है। ऐसे में जनसुराज पार्टी किसे टिकट देती है, दे देखना अहम होगा। हालांकि, प्रशांत किशोर ने ऐलान किया है कि उनकी पार्टी में जनता ही अपने उम्मीदवारों का चयन करेगी। हालांकि प्रशांत किशोर का कहना है कि हम दो वर्षों से आम लोगों के बीच घूम रहे हैं। हम उनसे कह रहे हैं कि हर बार दूसरे के लिए आपने वोट किया है। एक बार अपने लिए, अपनी संतानों के लिए वोट कीजिए। जाति और धर्म आधारित बिहार की राजनीति के बारे में पीके ने कहा कि जाति और धर्म बिहार की राजनीति के सच हैं। लेकिन, ये अंतिम सच नहीं हैं। लोकसभा चुनाव पार्टी से जुड़ी जातियों का मिथ पूरी तरह टूट गया था। विधानसभा चुनाव में भी यही होगा। प्रशांत

सुधाकर सिंह

किशोर दावा करते हैं कि हमारे पास सभी जातियों का कुछ न कुछ वोट है। ऐसे समूहों का वोट है, जो पारंपरिक दलों के पाखंड से उबकर मतदान में हिस्सा नहीं ले रहे हैं। हम किसी एक जाति पर केंद्रित नहीं हैं। जहां तक मुसलमानों का प्रश्न है, हमारी एक बैठक में 15 हजार मुसलमान आए थे। वे अभी सुन रहे हैं। हमसे सहमत भी होंगे। हम प्रयास करेंगे कि ऐसे लोगों को उम्मीदवार बनाएं, जो इससे पहले कभी चुनाव नहीं लड़े हैं। हम काबिल उम्मीदवार बनाएंगे। प्रशांत दावा करते हैं कि जनसुराज के उम्मीदवारों की सूची जारी होते ही लोग कहने लगेंगे कि जन सुराज ने सचमुच सक्षम, ईमानदार और बेदाग उम्मीदवार उतारा है। इसके साथ ही पी.के. ने कहा कि हम जन सहयोग से धन जुटाएंगे। ऐसा होने पर सरकार पर भी किसी खास समूह के हित में नीतियां बनाने का दबाव नहीं रहेगा। चुनाव में पराजय के बाद पलायन की संभावना को अस्वीकार करते हुए उन्होंने कहा कि मेरी उम्र अभी 45 साल है। मेरे पास राजनीति के लिए बहुत समय है। हम अगले चुनाव की तैयारी करेंगे।

सनद् रहे कि प्रशांत किशोर की बढ़ती लोकप्रियता से बौखलायी सत्ता और विपक्ष की दलों के नेताओं के बयान आने शुरू हो गये है। बीजेपी के प्रदेश अध्यक्ष सम्राट चौधरी ने पीके पर हमला बोलते हुए कहा कि पीके सौदागर हैं। जन सुराज पार्टी गांधी जी के फोटो को दिखाकर जनता के बीच में जा रहा है। गांधी जी कहते थे शराब बंदी हो, जन सुराज पार्टी कहता है शराब बेचेंगे। जन सुराज का काम ही है सपने बेचना। जन सुराज से बिहार के किसी राजनीतिक दल पर कोई असर नहीं पड़ेगा जनता सब देख रही है। ज्ञात हो कि प्रशांत किशोर ने अपने संबोधन में कहा था कि उनकी सरकार बनते ही वह एक घंटे के अंदर शराबबंदी खत्म कर देंगे। प्रशांत किशोर के इस बयान के बाद से उनके विरोधी उनपर हमलावर हो गए हैं। विरोधियों ने सवाल उठाया कि गांधी जी के आदर्शों पर चलने की बात कहने वाला प्रशांत किशोर गांधी जयंती के दिन ही शराबबंदी खत्म करने की बात कह रहे हैं। इस दौरान प्रशांत किशोर ने यह भी बताया कि शराबबंदी खत्म करने के बाद उससे जो पैसा टैक्स के रूप में आएगा उस राशि को बीस साल तक बिहार के शिक्षा व्यवस्था पर खर्च किया जाएगा और बिहार की शिक्षा व्यवस्था ऐसी बनाई जाएगी जिसे देश और दुनिया देखेगी और बिहार का पुराना गौरव भी लौटेगा। प्रशांत किशोर के इस बयान के बाद एनडीए ने जोरदार हमला बोला है। जेडीयू के मुख्य प्रवक्ता ने प्रशांत किशोर पर गांधी के आदर्शों के साथ खिलवाड़ करने का आरोप लगाया है। नीरज कुमार ने प्रशांत किशोर के शराब बंदी पर दिए बयान पर कहा कि गांधी की तस्वीर लगा कर राजनीति शुरू करने वाले गांधी के विचारों के विरुद्ध कैसे? शराब और नशीले पदार्थ उन लोगों के नैतिक स्वास्थ्य को नष्ट कर देते हैं जो शराबी पति हैं। केवल वे महिलाएं ही जानती हैं कि शराब पीने से उन घरों में क्या बुराइयाँ पैदा होती हैं जो कभी व्यवस्थित और शांतिप्रिय थे। गांधी जी कहते हैं, शराब शैतान की खोज है। शराब पीने वालों से न केवल पैसे छीनती है, बल्कि उनकी बुद्धि भी छीन लेती है। वहीं जदयू के प्रदेश अध्यक्ष उमेश कुशवाहा कहते हैं कि प्रशांत किशोर ने साफ कर दिया कि गांधी जी के विचारों की चर्चा कर गांधी जयंती के दिन पार्टी बनाने की घोषणा महज नौटंकी थी। गांधी जी के आदर्शों पर चलने की बात कह जिस तरह से गांधी जयंती के मौके पर शराबबंदी खत्म करने की बात कही है, उससे क्या मैसेज

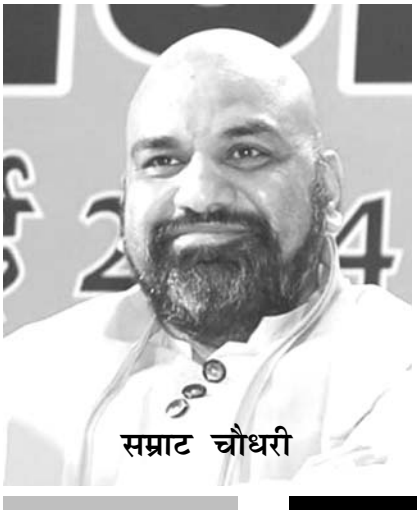

सम्राट चौधरी

नीरज कुमार

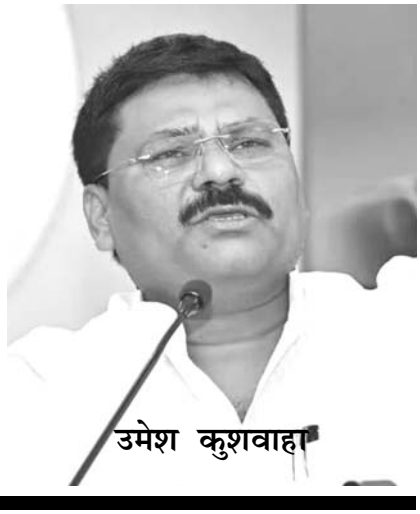

उमेश कुशवाहा

देना चाहते हैं? उमेश कुशवाहा ने कहा कि शराबबंदी खत्म करने की बात कह गांधी जी के आत्मा को कष्ट तो दिया ही साथ ही समाज को हिंसक बनाने की कोशिश भी की है, लेकिन बिहार की जनता सब देख रही है।

बहरहाल, बिहार में प्रशांत किशोर ने नई पार्टी के गठन के साथ सियासत में एंट्री की है। उन्होंने जन सुराज पार्टी के जरिये बिहार में विकास करने के कई बड़े वादे और दावे किये। इसी क्रम में प्रशांत किशोर ने सत्ता में आने पर बिहार में शराबबंदी पर लगे बैन को हटाने की बात कही है। उन्होंने शराब बिक्री से राज्य को होने वाले मुनाफे को शिक्षा सुधार में खर्च करने की बात कही है। जबिक एनडीए समेत अन्य दल शराबबंदी को लेकर लामबंद हैं। ऐसे में सवाल उठता है कि आखिर क्या शराब पर बैन हटाने का फैसला बिहार की राजनीति में गेम चेंजर साबित हो पाएगा? प्रशांत किशोर का दावा है कि शराबबंदी से बिहार को हर साल 20,000 करोड़ रुपये का नुकसान हो रहा है। ऐसे में वह शराब से बैन हटाकर उससे मिलने वाले रुपयों को उपयोग शिक्षा व्यवस्था पर खर्च करेंगे। पार्टी लॉन्चिंग के दौरान प्रशांत किशोर ने कहा था कि ''हमें राज्य में शिक्षा में सुधार करने के लिए 4 लाख करोड़ रुपये से अधिक की आवश्यकता होगी। हम शराब बंदी हटाकर पैसे जुटाएंगे, जो सालाना 20,000 करोड़ रुपये है। मैं दोहराता हूं कि एक बार जन सुराज सत्ता में आ जाती है, तो शराब पर प्रतिबंध को एक घंटे के भीतर हटा दिया जाएगा।'' कई विश्लेषकों का मानना है कि शराबबंदी ने ग्रामीण इलाकों में महिलाओं के बीच नीतीश कुमार की लोकप्रियता को बढ़ाने में मदद की। इसके साथ ही मुख्यधारा की किसी भी पार्टी ने इसके खिलाफ खुलकर बात नहीं की। क्योंकि इससे महिला वोट बैंक पर असर पड़ सकता है। बता दें कि, बिहार में साल 2016 में शराब को बैन किया गया था। जिससे कि प्रदेश में शराब से संबंधित समस्याओं से निपटा जा सके। यह प्रदेश की महिलाओं से नीतीश कुमार का चुनावी वादा भी था। हालांकि, शराब पर प्रतिबंद कानून को लागू करना नीतीश सरकार के लिए एक बड़ी चुनौती रही। क्योंकि प्रतिबंध के बावजूद, बिहार में अवैध शराब पीने की वजह से कई लोगों की मौत की खबरें सामने आयीं। इसके अलावा, प्रदेश में कानून के कड़े प्रावधानों की वजह से एक बड़ी आबादी नाराज है। जिससे शायद प्रशांत किशोर को पूंजीकरण की उम्मीद है। लेकिन बड़ा सवाल यह है कि क्या शिक्षा में सुधार करने पर प्रशांत किशोर के जोर में एक राज्य में लेने वाले हैं। जहां जाति और धर्म ने राजनीति में एक बड़ी भूमिका निभाई है? क्या बिहार में लोग शराब के लिए हां कहने के लिए तैयार हैं? क्या यह उनकी जन सुराज पार्टी के लिए एक गेमचेंजर होगा? हालांकि इन सवालों के जवाब विधानसभा चुनाव के बाद ही मिलेंगे। लेकिन प्रशांत किशोर का यह एजेंडा एक नई बहस शुरू करेगा। वही दूसरी ओर प्रशांत किशोर ने कहा था कि पार्टी का नेतृत्व दलित समाज का कोई नेता करेगा। उसके बारे में जैसा संकेत प्रशांत किशोर ने दिया था, ठीक वैसी ही खोज उनकी रही। भारतीय प्रशासनिक सेवा (आईएफएस) के अधिकारी रहे मनोज भारती को उन्होंने कार्यकारी अध्यक्ष नामित किया है। भारती अनुसूचित जाति से आते हैं। उनका ज्यादातर समय बिहार से बाहर ही बीता है, लेकिन जड़ें बिहार में ही रही हैं। वे पढ़े-लिखे व्यक्ति हैं। बिहार के मिजाज को समझते हुए उनका आकलन करने वाले लोग कहते हैं कि बिहार की राजनीति में उनका चेहरा नया और बेदाग तो है, लेकिन वे चुनावी जंग में अपना प्रभाव दिखा पाएंगे, इसमें संदेह है। जिन्हें लोग जानते तक न हों, उनके प्रति लोगों का आकर्षण कैसे बढ़ेगा। यानी वे भीड़ खींचने वाला चेहरा नहीं हैं, जैसी छवि प्रशांत किशोर की रही है। वही प्रशांत किशोर का दावा था कि एक लाख लोगों की भीड़ अधिवेशन में जुटेगी। हालांकि पहले जिस तरह उन्होंने वैशाली और पटना गांधी मैदान की जगह प्रशासन से मांगी थी, उससे लगता था कि वे भारी भीड़ जुटाने की तैयारी कर चुके हैं। यह तो संयोग ही रहा कि प्रशासन ने उन्हें दोनों जगहें नहीं दीं। तब उन्हें वेटनरी कॉलेज ग्राउंड का चयन करना पड़ा। इसकी क्षमता ही लगभग लाख लोगों की है, लेकिन लोग उतने नहीं आए। हालांकि जितनी उपस्थिति रही, उसे कम भी नहीं कहा जा सकता। इस बारे में पार्टी के प्रवक्ता संजय ठाकुर दो वजहें बताते हैं। वे कहते हैं कि अव्वल तो उत्तर बिहार के 14 जिले बाढ़ की विभीषिका झेल रहे हैं। प्रशांत किशोर की पदयात्रा भी इन्हीं जिलों में अभी तक हुई है। दूसरा कि महालया का त्योहारी दिन भी था। इसलिए लोगों की उपस्थिति थोड़ी कम रही। इसके बावजूद जितने लोग पहुंचे, वह जन सुराज की लोकप्रियता का परिणाम है। कुछ लोगों का कहना है कि पीके अभी तक सोशल मीडिया पर ही छाए हुए हैं। जनता का जुड़ाव उनसे नहीं हो पाया है। दावे के मुताबिक भीड़ का न जुटना इसका संकेत है। पर, सच

यह है कि जितनी भीड़ जुटी, उसे पहले प्रयास में कम भी नहीं कहा जा सकता। प्रशांत किशोर के कार्यक्रम को सोशल मीडिया पर जितनी संख्या में लोगों ने देखा, उसे कम आंकना भूल होगी। इसलिए कि आज सोशल मीडिया का ही जमाना है। हर हाथ में मोबाइल पहुंच गया है। शिक्षा और रोजगार पर पार्टी का फोकस उन नौजवानों को खूब भाया, जिन्होंने उनके कार्यक्रम को लाइव देखा। अच्छी बात यह रही कि प्रशांत ने दूसरे दलों की तरह मुफ्त की रेवड़ियां बांटने का कोई वादा या संकल्प नहीं बताया। वे शराबबंदी खत्म कर उससे मिलने वाले राजस्व को शिक्षा पर खर्च करने की बात कहते हैं। वे लोगों से अपने बच्चों को बेहतर शिक्षा और रोजगार के लिए वोट करने की अपील करते हैं। वे बेहतर और विश्वस्तरीय शिक्षा की जरूरत बताते हैं। इसका ब्लूप्रिंट बताते हैं।

हालांकि प्रशांत किशोर ने जितनी बातें कहीं, उनमें कुछ के पूरा होने पर थोड़ा संदेह है। उन्होंने कहा कि वे मनरेगा के पैसों को किसानों के खाते में डालेंगे, जिससे वे खेती के लिए मजदूर का बंदोबस्त कर सकें। यह बात इससे पहले भूतपूर्व केंद्रीय मंत्री और आरजेडी के नेता रघुवंश प्रसाद सिंह भी कहते रहे थे। चूंकि मनरेगा का पैसा केंद्र से मिलता है, इसलिए इसके खर्च का प्रशांत किशोर का तरीका आसान नहीं है। इसके लिए केंद्र सरकार को भरोसे में लेना होगा। सियासी तौर पर अपने विरोधी का वादा केंद्र सरकार कैसे और क्यों पूरा करेगी? दूसरी तरफ प्रशांत किशोर को पहली कामयाबी मिल जाने के बाद भी इस बात को लेकर शंका जताई जा रही है कि बिहार की जातिवादी राजनीति में वे गैर जातिवादी व्यवस्था कायम करने में क्या कामयाब हो पाएंगे। नीतीश कुमार लव-कुश (कुर्मी-कोइरी) समीकरण के सहारे राजनीति में स्थापित हुए। लालू यादव एम-वाई (मुस्लिम-यादव) समीकरण के सहारे अभी तक आरजेडी का अस्तित्व बचाए हुए हैं। जीतन राम मांझी और चिराग पासवान दलितों की राजनीति करते हैं। भाजपा सवर्ण और वैश्य वोटों पर अपना अधिकार मानती रही है। गौरतलब है कि बिहार की राजनीति में मुस्लिम मतों का काफी महत्व रहा है। 16 प्रतिशत से लेकर 17 प्रतिशत तक जनसंख्या पहुंचने तक मुस्लिम मतों के दीवानों की कमी नहीं रही। आजादी के बाद मुस्लिम मतों को लेकर कई पार्टियां ने अपने हिसाब से प्रयोग दर प्रयोग किए, पर मुस्लिम मतों की सच्चाई यही है कि अधिकांश मत कांग्रेस के साथ जाता रहा है। वैसे में प्रशांत किशोर ने जब राजनीति में उतरने का मन बनाया तो उनका निशाना भी मुस्लिम मत के साथ अतिपिछड़ा वोट पर था। इन दो खास मतों को प्रशांत किशोर अगर सत्ता की सीढ़ी बनाना चाहते थे तो इसकी वजह भी थी। हाल ही में राज्य सरकार ने जातीय जनगणना कराई तो जाति आधारित राजनीति करने वाले कई दलों की कलई भी खुल गई। इस जनगणना के बाद जो सच्चाई सामने आई, वह कुछ इस तरह से सामने आई- अति पिछड़ा वर्ग की आबादी 36.01 फीसदी, पिछड़े वर्ग की आबादी 27.12 प्रतिशत, एससी-19.65 फीसदी, एसटी-1.6 प्रतिशत और मुसहर की आबादी 3 फीसदी बताई गई है। वहीं मुस्लिम की आबादी 17.7 प्रतिशत थी। प्रशांत किशोर पहले चुनावी रणनीतिकार रहे हैं। इसलिए जातीय जनगणना का उन्होंने पहले अध्ययन किया और सबसे पहले जिस वोट बैंक को

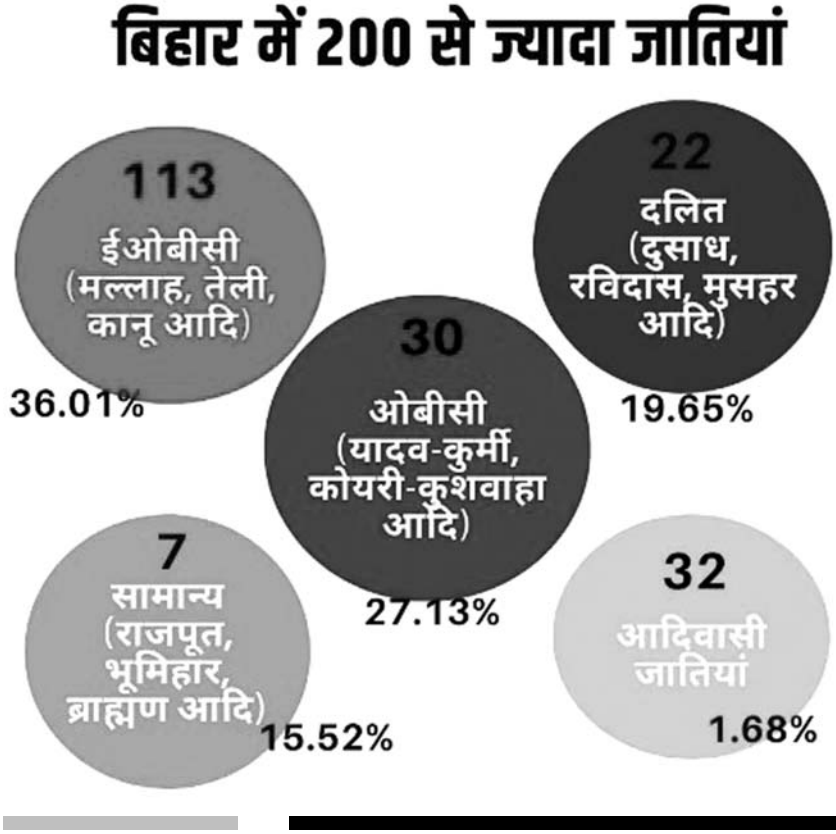

टारगेट किया, वह रहा मुस्लिम और अतिपिछड़ा। यानी 17.7 और 36.1 प्रतिशत वोट की राजनीति। इसलिए उन्होंने अतिपिछड़ा और मुस्लिम मतों की घेराबंदी सबसे पहले की। मुस्लिम मतों की दीवानगी कुछ इस तरह से थी कि उन्होंने सर्वप्रथम यह घोषणा कर दी कि आगामी विधानसभा चुनाव 2025 में मुस्लिम और अतिपिछड़ा से 75/75 उम्मीदवार उतारेंगे। लेकिन जन सुराज यात्रा से कुछ जिलों का भ्रमण करने के बाद यह कहा कि आबादी के अनुसार यानी 17.7 प्रतिशत के अनुसार मुस्लिमों को टिकट देंगे। इस हिसाब से भी जन सुराज कम से कम मुस्लिमों से 42 उम्मीदवार के आस पास उतार सकती है। जन सुराज के नायक प्रशांत किशोर ने जब आबादी के अनुसार मुस्लिमों को उम्मीदवार बनाने की बात की तो राजद को जनाधार खिसकता दिखा। तब एक रणनीति को लेकर राजद के तमाम नेता बस यही साबित करने लगे कि जन सुराज एक भाजपा प्रायोजित पार्टी है। राजद नेताओं ने पीके की जन सुराज को भाजपा की बी टीम भी कह डाला। हालांकि राजद के इस हमले का मतलब प्रशांत किशोर समझ चुके थे। राजद का ये हमला उनके ड्रीम मत यानी मुस्लिम को बरगलाने के लिए काफी था। रणनीतिकार रहे प्रशांत किशोर ने तब यह कह कर भाजपा की 'बी टीम' होने से इनकार किया कि राजद को अगर डर है कि मुस्लिम उम्मीदवार उतारकर वोट काटने की मंशा है तो मैं एक वादा करता हूं कि जहां राजद मुस्लिम उम्मीदवार देगा, जनसुराज वहां मुस्लिम उम्मीदवार नहीं उतारेगा।

बहरहाल, पीके कहते हैं कि बिहार अब जाति और धर्म के नाम पर वोट ना दे बल्कि विकास के मुद्दे पर अपने जनप्रतिनिधियों

को चुने। बिहार में अगले साल नवंबर में विधानसभा के चुनाव हैं। ऐसे में वक्त सिर्फ एक साल का है और सवाल यह है कि क्या प्रशांत किशोर बिहार की राजनीति को बदल पाएंगे? क्या वह बिहार में स्थापित राजनीतिक दलों- आरजेडी, जेडीयू, बीजेपी के लिए कोई बड़ी चुनौती बन सकते हैं? प्रशांत किशोर के साथ एक मजबूत पक्ष यह है कि वह बीजेपी, जेडीयू, कांग्रेस सहित कई दलों के लिए चुनावी रणनीति बना चुके हैं इसलिए वह इन राजनीतिक दलों के कामकाज के तरीके को समझते हैं। बता दें कि बिहार में पिछले लगभग 35 सालों से आरजेडी और जेडीयू का दबदबा रहा है। आरजेडी ने लगातार 15 साल तक शासन किया तो जेडीयू ने कभी बीजेपी के साथ मिलकर और कभी आरजेडी के साथ मिलकर राज्य में सरकार चलाई। इसके अलावा बीजेपी भी राज्य में बड़ी राजनीतिक ताकत है। ऐसे में बिहार की बेहद कठिन सियासी पिच पर बैटिंग कर पाना प्रशांत किशोर के लिए आसान नहीं होगा। प्रशांत किशोर ने जन सुराज यात्रा के दौरान बिहार की बदहाली को मुद्दा बनाया। उन्होंने लोगों से कहा कि बिहार के राजनीतिक दलों और नेताओं ने यहां की जनता का नहीं बल्कि अपने परिवारों का भला किया और अपनी सियासी महत्वाकांक्षाओं को पूरा किया। प्रशांत किशोर का कहना है कि उनकी पार्टी बिहार से पलायन और बेरोजगारी से लेकर बिहार के पिछड़ेपन और राज्य की समस्याओं के मुद्दे पर चुनाव लड़ेगी। इस तरह प्रशांत किशोर ने अपना चुनावी एजेंडा जरूर सेट कर दिया है कि उनकी पार्टी के पास बिहार के चुनाव के लिए क्या रोडमैप है। वही पिछले कुछ महीनों में कई बड़े नेताओं और नौकरशाहों ने प्रशांत किशोर का हाथ पकड़ा है। इनमें पूर्व केंद्रीय मंत्री डीपी यादव, बीजेपी के पूर्व सांसद छेदी पासवान के अलावा बड़ी संख्या में पूर्व आईएएस और आईपीएस अधिकारी भी शामिल हैं। प्रशांत किशोर ने बिहार में शराबबंदी को बड़ा मुद्दा बनाया है। उनका कहना है कि अगर उनकी पार्टी की सरकार बनी तो वह तुरंत शराबबंदी को खत्म कर देंगे। बिहार में पिछले कुछ सालों में नकली शराब पीने की वजह से बड़ी संख्या में लोगों की मौत हुई है। राज्य में यह एक बड़ा मुद्दा है। केंद्रीय मंत्री जीतन राम मांझी भी शराबबंदी को लेकर सवाल उठा चुके हैं। ऐसे ही बेरोजगारी, पलायन पर भी प्रशांत किशोर ने खुलकर बात की है। इसके साथ ही पी.के. ने अपनी सभाओं में लालू प्रसाद यादव व नीतीश कुमार के शासन पर हमला बोला है। उन्होंने कहा है कि अगर इन नेताओं ने बिहार के

विकास पर ध्यान दिया होता तो राज्य के लोगों की हालत इस कदर खराब नहीं होती। लेकिन सवाल यह है कि क्या बिहार के मतदाता पीके की बातों पर भरोसा करेंगे। क्या वे जिन राजनीतिक दलों को वोट देते आ रहे हैं, उन्हें भूलकर पीके के साथ आ जाएंगे? बता दें कि प्रशांत किशोर ने एक राजनीतिक समझदारी वाला फैसला यह लिया है कि उन्होंने स्पष्ट कहा है कि उनकी कोई राजनीतिक महत्वाकांक्षा नहीं है और वह बिहार का मुख्यमंत्री नहीं बनना चाहते। क्योंकि ऐसे सवाल उठे थे कि प्रशांत किशोर मुख्यमंत्री बनना चाहते हैं। प्रशांत किशोर ऐलान कर चुके हैं कि उनकी पार्टी बिहार की सभी 243 सीटों पर चुनाव लड़ेगी। बिहार की राजनीति में जाति का फैक्टर सबसे ज्यादा है। प्रशांत किशोर भूमिहार जाति यानी सवर्ण समुदाय से आते हैं और ऐसे में यह सवाल जरूर उठता है कि क्या दलित-पिछड़े समुदाय के सियासी दबदबे वाले बिहार में लोग विकास के मुद्दे पर प्रशांत किशोर को वोट देंगे। प्रशांत किशोर ने पिछले 2 सालों में आरजेडी के कोर वोट बैंक माने जाने वाले मुस्लिमों और यादवों को साधने की कोशिश की है। उन्होंने ऐलान किया था कि उनकी पार्टी बिहार में मुस्लिम समुदाय के 40 और महिलाओं और अति पिछड़ी जातियों (ईबीसी) के 70 प्रत्याशियों को टिकट देगी। उन्होंने दावा किया कि लोग जाति व धर्म से ऊपर उठकर उन्हें वोट देंगे। आंकड़ों से पता चलता है कि लोकसभा चुनाव 2024 में एनडीए ने इंडिया गठबंधन की तुलना में ऊंची जातियों (राजपूत, भूमिहार, कायस्थ और ब्राह्मण) और ईबीसी के उम्मीदवारों को ज्यादा टिकट दिए जबकि इंडिया गठबंधन में एनडीए गठबंधन की तुलना में यादव, गैर-यादव ओबीसी, मुस्लिम और अनुसूचित जाति (SC) के उम्मीदवारों की हिस्सेदारी अधिक रही। बिहार की राजनीति में आमतौर पर यही माना जाता है कि मुस्लिम और यादव समुदाय के वोट आरजेडी को मिलते हैं जबकि सवर्ण समाज का बड़ा तबका बीजेपी को वोट देता है। नीतीश कुमार को उनके कोर वोट बैंक कोइरी, कुर्मी के अलावा अति पिछड़ी जातियों और मुसलमानों का भी समर्थन हासिल होता रहा है। प्रशांत किशोर के जातियों को साधने की राजनीति की वजह से निश्चित रूप से एनडीए और आरजेडी के नेतृत्व वाले महागठबंधन में हलचल जरूर है। तमाम बड़े राजनीतिक दलों के लिए न सिर्फ चुनावी स्क्रिप्ट तैयार करने वाले बल्कि उन्हें जीत दिलाने वाले प्रशांत किशोर की विधानसभा चुनाव में बड़ी परीक्षा होनी है।

पुष्पम प्रिया चौधरी

बिडम्बना है कि बिहार की सियासत अन्य राज्यों के मुकाबले अलग है, जहां जातिवाद से लेकर परिवारवाद हावी है। सूबे में सियासी समीकरण के बदलाव का बयार लगातार चलता रहता है। बिहार में राजनीतिक ऊंट किस तरफ करवट लेगा, ये सवाल हमेशा बना रहता है। हालांकि 1 अक्टूबर तक बिहार में केवल दो विकल्प था। एक एनडीए तो दूसरा महागठबंधन। लेकिन 2 अक्टूबर को बिहार में एक तीसरे विकल्प की एंट्री हो गई, जिसका नाम है जन सुराज पार्टी। सियासी रणनीतिकार प्रशांत किशोर ने आखिरकार वो चाल चल ही दी, जिसके लिए वो करीब दो साल से बिहार की गलियों में घूम रहे थे। लेकिन प्रशांत किशोर के सामने कई बड़ी चुनौतियां हैं, जिनसे पार पाना आसान नहीं होगा तो ये जरूर कहा जा सकता है कि बिहार के सियासी चक्रव्यूह में नए अभिमन्यु की एंट्री हो गई है। हालांकि उनकी यह मेहनत कितनी रंग लाएगी, ये तो चुनाव में प्रदर्शन के बाद पता चलेगा। हालांकि बिहार के सियासी चक्रव्यूह को भेदना इतना आसान नहीं है। प्रशांत किशोर के सामने कई बड़ी चुनौतियां हैं, जिससे उनको पार पाना होगा। क्योंकि पिछले विधानसभा चुनाव में पुष्पम प्रिया चौधरी ने नई पार्टी बनाकर लोगों को तीसरा विकल्प दिया था, जिसे सिरे से खारिज कर दिया गया था। बिहार की पॉलिटिक्स जाति पर आकर खत्म हो जाती है, ये कहने में कोई गुरेज नहीं करता है। चाहे टिकट बंटवारे का मामला हो या फिर पार्टियों में पदों का बंटवारा हो। प्रशांत किशोर विकास, शिक्षा और बेहतर स्वास्थ्य की बात करते हैं, लेकिन जब टिकट बंटवारा होगा तब वो क्या जाति को महत्व देंगे, ये आने वाले समय में पता चलेगा। ●

हत्या और सामूहिक बलात्कार

साढ़े पांच महीने बाद हुई एफआईआर

● सोनू यादव

क्या महिला होना पाप है? क्या महिला सेक्स की मात्र साधन है? क्या महिला के शरीर के हर एक अंगों पर राक्षसी पुरूषों का अधिकार है? क्या महिला बेबश और लाचार है? इन सवालों के जवाब मन मस्तिष्क को कुंठित कर देंगे, पर हकीकत यही है कि आज के समय में महिला मात्र सेक्स की मशीन बनकर ही रह गई है, जो असहाय हो गई है, कोई भी उसके मदद को आगे नहीं आता, पुरूष विचार अच्छे लिख सकते हैं किन्तु कुछेक राक्षस पुरूषों ने तमाम पुरूषों को कलंकित करते रहे हैं। यह हकिकत है कि किसी महिला को किसी पुरूष के पास अकेले छोड़ दिया जाये तो वह महिला असहज ही महसूस करती है! विश्व के किसी भी देश में खुद को महिला योनी में जन्म लेने पर आज की महिला कोसती है, कारण है-बलात्कार, सामुहिक बलात्कार। यह मंथन भरा विषय है कि मानव कुल को जन्म कोई महिला ही देती है और जिस प्रकृति में मानव सांस लेता है उसे उस महिला का ऋणि होना चाहिए। किन्तु समाज में महिला सिर्फ देहसुख का साधन बन गई है। सनद् रहे कि बलात्कार जैसे जघन्य अपराध की कई घटनाओं में देखा गया कि कोई मनुष्य दानव कैसे बन गया। किसी महिला का बलात्कार कर उसके योनी में रड डाल देता है तो किसी महिला की पहले हत्या कर देने के बाद उसके शरीर से बलात्कार किया जाता है। कई महिलाओं के साथ एक साथ कई बहशी मिलकर सामुहिक बलात्कार की घटना को अंजाम देते है। बलात्कारी महिला अंग के सुख में उम्र की सीमा भी भूल जाते हैं कि वह महिला बच्ची है या अधेड़। खैर, हवश का यह खेल रूकने वाला नहीं क्योंकि समाज में एक पुरानी कहावत है 'जिसकी लाठी, उसकी भैंस'। अर्थात् जो दबंग होंगे वह कमजोर पर शोषण करेंगे ही और बचाव और सुरक्षा की गारंटी लेने वाले प्रहरी तमाशबीन बने बैठे रहेंगे। अभी पश्चिम बंगाल में प्रशिक्षु चिकित्सक के साथ नृशंस हत्या और बलात्कार की घटना की चर्चा थमी नहीं है कि बिहार की राजधानी पटना में एक किशोर के साथ सामुहिक बलात्कार की घटना सुर्खियों में है। हालांकि यह घटना अप्रैल 2024 की ही है जिसमें दरिंदो ने पहले बच्ची के साथ बलात्कार किया फिर उसकी गला दबाकर हत्या कर दी। मामला आत्महत्या का लगे, इसके लिए उन लोगों ने उस बच्ची को फांसी के फंदे पर लटका दिया। बता दें कि यह मामला पटना के पुनपुन थाना अंतर्गत का है। इस घटना के बारे में मृतक बच्ची की माँ द्वारा दिये गये आवेदन में कहा गया है कि :-

बेटी के गले पर और गुप्त स्थान पर गहरा जख्म का निशान था, ये सब देखकर मैं बेसुध हो गयी :- सोनी देवी (माँ)

मुखिया नागा राम के निर्देशानुसार मेरी बेटी को गुलबी घाट पटना में पति के सामने गंगा में प्रवाह कर दिया :- सोनी देवी (माँ)

मैं संबंधित पुनपुन थाना पटना में जाकर आवेदन दी, लेकिन कांड दर्ज नहीं किया गया :- सोनी देवी (माँ)

मैं सोनी देवी, उम्र 38 वर्ष, पति - श्री गुड्डू प्रसाद, मोहल्ला- डी. एन. सिंह. लेन, मीठापुर, बी. एरिया, थाना- जक्कनपुर, जिला- पटना-

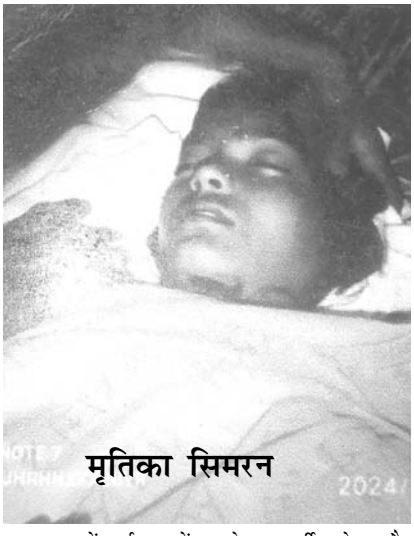
मृतिका सिमरन

800001 में वर्त्तमान में अपने 14 वर्षीय बेटा और पति के साथ रहती आ रही हूँ। मैं लगभग 2019 में ग्राम- समकुढ़ा, थाना- पुनपुन, जिला-पटना-804453 में जमीन खरीदकर मकान बनाकर रह रही थी। मेरा पड़ोसी (1) रवि कुमार उम्र 25 वर्ष, पिता- सुखदेव दास (2) गौरी शंकर दास, उम्र- लगभग 28 वर्ष पिता-सुखदेव दास (3) ओम दास उम्र 25 वर्ष पिता लगन दास (4) रामलगन दास उम्र-40 वर्ष, पिता-नामालूम व कुछ अन्य लोग सभी साकीन- समकुढ़ा, थाना-पुनपुन, जिला-पटना- 804453 मुझे तंग-तबाह कर औने-पौने भाव में जमीन मकान बेचकर भागने का दबाव बना रहे थे। दिनांक 18-04-2024 को सदा की तरह मैं सब्जी बेचने मीठापुर चली गयी। मेरी बेटी सिमरन कुमारी उम्र 11 वर्ष ट्यूशन पढ़कर घर पर प्रतिदिन ग्यारह बजे आ जाती थी। रवि कुमार, गौरी शंकर दास और ओम, दास मेरे घर में घुसकर मेरी बच्ची के साथ सामूहिक बलात्कार किया और हत्या कर दिया। एक आरोपी के पिता रामलगन दास ने मुझे 1 बजे दोपहर में सूचना दी की मेरी ग्यारह वर्षीय बेटी फांसी लगा ली है तो मैं जल्दी-जल्दी घर आयी और अपनी बेटी को फांसी पर लटकी हुयी नहीं बल्कि घर के बाहर गली में मृत पड़ी हुयी पायी, बेटी के गले पर और गुप्त स्थान पर गहरा जख्म का निशान था, ये सब देखकर मैं बेसुध हो गयी। मेरे पति मंद बुद्धि हैं। सभी आरोपी, राम लगन दास और वर्त्तमान मुखिया नागा राम ने मेरे पति को, मेरे एकलौता नाबालिग बेटा की भी हत्या की धमकी देकर जल्दी-जल्दी शव को ठिकाना लगाने का दबाव बनाया और मुखिया के निर्देशानुसार मेरी बेटी को गुलबी घाट पटना में पति के सामने प्रवाह कर दिया। इस मान्यता और प्रथा के बाद कि पिता अपने बच्चों के शव दाह या शव-प्रवाह में कतई शामिल नहीं होते हैं, इसके वावजूद मेरे पति को नशीला पदार्थ खिलाकर और बंधक बनाकर मेरी बेटी को उसके पिता के सामने गंगा में प्रवाह कर दिया।

मृतिका के पिता गुड्डू प्रसाद एवं माँ सोनी देवी

मैं संबंधित पुनपुन थाना पटना में जाकर आवेदन दी लेकिन कांड दर्ज नहीं किया गया। पुनपुन थाना के चौकीदार नाम नामालूम ने भी मामला को दबाने के लिए मुझे नाजायज धमकी दी और कारवाई को रोका। गाँव के मुखिया नागा राम को घटना की पूरी जानकारी है और लगातार कांड को रफा-दफा करने की नियत से सभी आरोपी को निर्देशन दे रहा था। मुखिया ने हीं मेरी बेटी के सामूहिक बलात्कार और हत्या की और नदी में शव प्रवाह कर थाना में कांड दर्ज नहीं होने दिया और संवैधानिक पद पर रहते हुए मृतिका के पोस्ट मार्टम को रोकने का कुकर्म किया। मुखिया नागा राम हमलोगों को गाँव में नया निवासी बताकर डराया धमकाया और शव को ठिकाना लगाने का निर्देश दिया। सामूहिक बलात्कार और हत्या जैसे जघन्य अपराध का कांड का खुलासा नहीं हो, इसके लिए मुझे आतंकित कर दिया। घटना के बाद सभी आरोपी मुझे गाँव से भागने की नियत 21-04-2024 को रात्रि लगभग 9 बजे मेरे घर में घुस गए और अश्लीलता की और मुझे जख्मी करते हुए मेरे सोने का जेवर और ग्यारह हजार रूपये नगद लूट लिए जिसकी शिकायत मैं थाना में की लेकिन मुखिया ने थाना में मेरी शिकायत दर्ज नहीं होने दिया । मैं बहुत निराश हो गयी और अपने जीवन भर की कमाई से खरीदे हुए जमीन और बनाये गए मकान को कौड़ी के भाव में बेचकर गाँव छोड़कर पलायन कर गयी और दर-बदर भटकने के लिए मजबूर हूं। मुखिया नागा राम समेत सभी आरोपी आज भी मुझे धमकी दे रहे हैं और कहते हैं कि यहाँ थाना पुलिस का नहीं हमलोगों का सरकार चलता है जिसका प्रमाण है कि तुम्हारी बेटी के साथ इतना जघन्य अपराध के वावजूद थाना में एक सनहा तक दर्ज नहीं किया गया है और अगर तुम मामला को उछालने का प्रयास करोगी तब तुम्हे और तुम्हारे बेटे की भी हत्या कर देंगे, ना कोई शिकायत कर्ता बचेगा

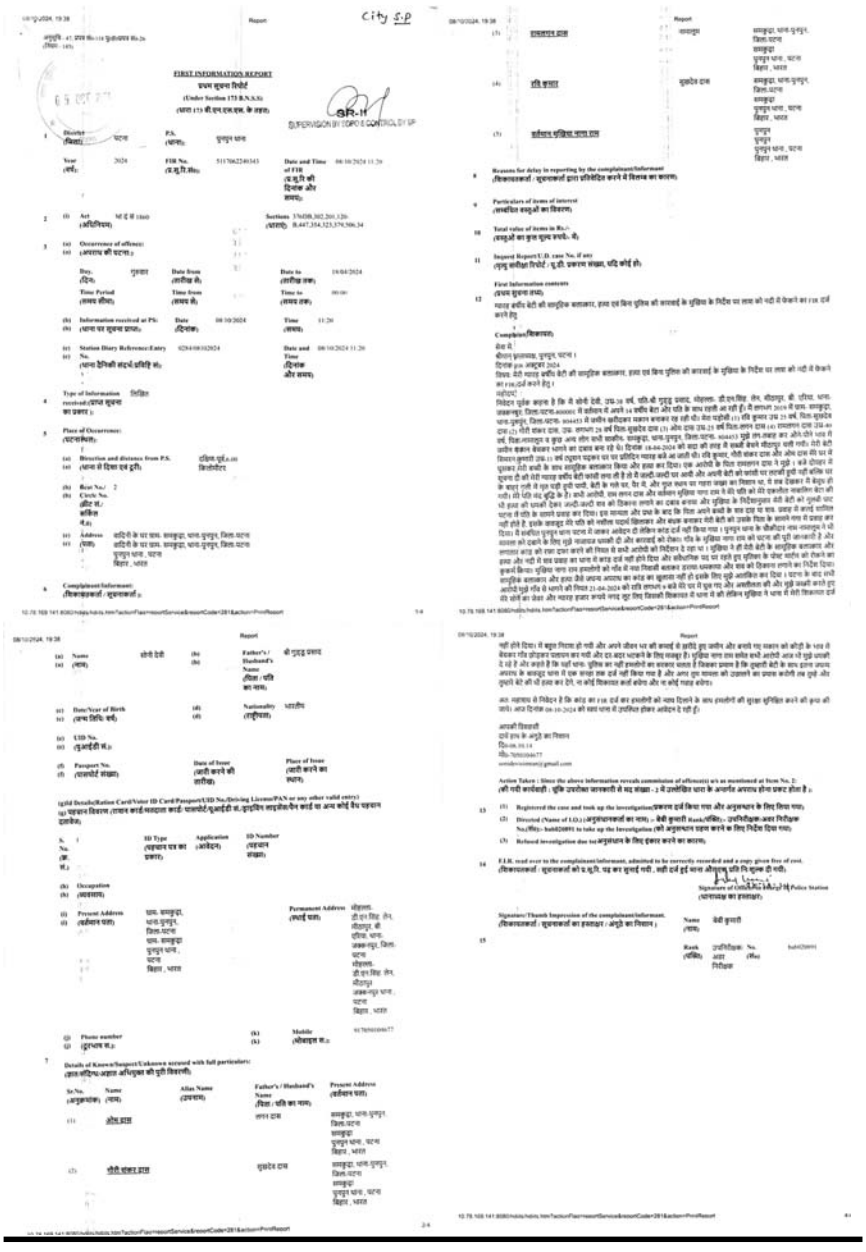

और ना कोई गवाह बचेगा।

बिडम्बना है कि धार्मिक तीज-त्योहार और सांस्कृतिक पर्व मनाने वाले देश में तकरीबन हर दिन मासूम बच्चों और लड़कियों की अस्म्मत लूटी जा रही है। कोई दिन ऐसा नहीं जब दुष्कर्म की कोई खबर सामने न आ रही हो। दुष्कर्म के बाद जिस तरह से इन लड़कियों को मौत के घाट उतारा जा रहा है, उससे स्प्पष्ट हो गया है कि जिस देश में सबसे ज्यादा स्त्री को पूजा जाता है, उसी देश के समाज में कुछ दानव इसकी संस्कृति को एक पाश्विक समाज की तरफ धकेल रहे हैं। मनुष्य के वेश में दरिंदों और दानवों में तब्दील होते जा रहे इन कुछ पाश्विक मानसिकता वाले पुरुषों की वजह से एक सभ्य पुरुष अपने ही ऑफिस की महिलाओं के सामने आंखें झुकाने को मजबूर है। पुरुष दोस्त अपनी महिला मित्र के साथ संकोच से भर उठता है। घर में लड़कियां अपने भाई और पिता के साथ न्यूज चैनल देखने से कतराने लगी हैं। आखिर पुरुषों के बीच कुछ महीनों की बच्ची से लेकर बुजुर्ग महिला तक क्यों महफूज नहीं है? क्यों आज इस समाज में एक लड़की और महिला के लिए अपनी इज्जत बचाना सबसे बड़ा चैलेंज हो गया है? क्यों दिल्ली की 'निर्भया' से लेकर कोलकाता की 'अभया' तक बच्चियों के जान पर बन आई है। आखिर कब तक इन दरिंदों का शिकार हुई इन मासूम बच्चियों को हम अभया और निर्भया जैसे नाम देकर श्रद्धाजंलि देते रहेंगे? दरअसल, इस कुलीन, शिक्षित, सभ्य और सफेदपोश दुनिया के ठीक समानांतर गलीज और बीमार मानसिकता की एक और दुनिया चल रही है। इंटरनेट और सोशल मीडिया में तेजी से बढ़ती सहूलियत के ठीक बरअक्स अश्लील और 'पोर्न' फिल्मों की एक दुनिया पुरुषों में बीमार और बर्बर मानसिकता का जहर घोल रही है। जाहिर है, जब हर एक जेब में रखे मोबाइल में एक ऐसी खिड़की आसानी से खुलती हो, जहां पोर्न, सेक्स वीडियो और शारीरिक संबंधों को पाश्विकता की हद तक दिखाने की होड़ मची हो, जहां पोर्न की यह दुनिया इतनी 'कस्टमाइज्ड' कर दी गई हो कि वहां किसी भी उम्र, देश, रंग, भाषा, वेशभूषा समेत तमाम कैटेगरी में सेक्स के वीडियो परोसे जा रहे हों। इस पर इन्हें देखने में अपना ही देश सबसे अव्वल हो तो आए दिन होने वाली इस दरिंदगी के लिए किसे जिम्मेदार ठहराया जाए। इस घिनोनी मानसिकता के पीछे न्याय और सजा का डर नहीं होना भी एक बड़ी वजह है। जिन बच्चियों को ये दरिंदे नोच खा जाते हैं उनके मां-बाप की उम्र अदालतों के चक्कर काटते हुए गुजर जाती है। अजमेर में 100 लड़कियों के साथ हुए रेप कांड का फैसला आते आते 32 साल गुजर गए। इतने साल में कई फरियादी की मौत हो गई। हत्याओं के कई केस अब भी न्याय का इंतजार कर रही हैं। वहीं, जिस देश में पोर्न इतनी आसानी से उपलब्ध हो, वहां सेक्स एजुकेशन को लेकर अब भी संशय और उलझन है। देश में युवाओं का एक वर्ग ऐसा है जो मोबाइल इंटरनेट पर सेक्स को प्लेजर का एक जरिया मानकर सबकुछ देख डालता है, वहीं दूसरा सेक्स के वास्तविक अर्थ से अनजान रह जाता है और वो पोर्न देखकर ही सेक्स के बारे में अपनी धारणा बना लेता है। जानकर हैरानी होगी कि भारत दुनिया का ऐसा तीसरा बड़ा देश है, जहां पॉर्न कटेंट को सबसे ज्यादा देखा जा रहा है। यही वजह है कि विदेशी कंपनियां भारत में ऐसे कंटेंट को ज्यादा से ज्यादा परोस रही हैं। खासतौर पर अमेरिकी एडल्ट वेबसाइट्स ने भारत में ऐसा कंटेंट परोसा है। भारत में कोरोना लॉकडाउन के बाद से ऐसे कंटेंट में बड़ा बूम देखने को मिला है। ये सब कुछ तब है जब भारत सरकार की तरफ से तमाम पॉर्न वेबसाइट्स को बैन किया गया है। भारत में सबसे ज्यादा 35% पोर्न कंटेंट 25 साल से लेकर 34 साल के एज ग्रुप के लोग देखते हैं। इसके अलावा 18 से 24 साल के युवाओं की हिस्सेदारी 24% है। इसके

बाद 35 से 44 साल के लोगों की 17 फीसदी हिस्सेदारी है। भारत में पोर्न देखने की एवरेज उम्र 29 साल है, जो बाकी किसी भी देश के लोगों की उम्र से काफी कम है। भारत सरकार ने एक तरफ जहां खतरनाक गेम्स, टिकटॉक और लत लगाने वाले गेम्स के ऐप को प्रतिबंधित किया है, वहीं पोर्न और सेक्स वीडियो लगातार अपना जाल फैला रहे हैं, जिनमें भारत के 15 साल से लेकर उम्रदराज लोगों तक को अपनी गिरफ्त में ले रखा है। इसके बाद तमाम सोशल मीडिया, यूट्यूब, ट्विटर, फेसबुक और इंस्टाग्राम में रील्स के नाम पर सेक्स वीडियो और सॉफ्ट पोर्न की जो बाढ़ आई है उसका तो अंदाजा लगाना ही मुश्किल है। बहुत आसानी से मोबाइल में मिलने वाली पोर्न इंडस्ट्रीज की इस सहूलियत के परिणाम भी हम सभी के सामने हैं। सर्वोच्च न्यायालय ने एक ऐतिहासिक फैसला सुनाया है, जिसमें कहा गया है कि बाल पॉर्नोग्राफी देखना और डाउनलोड करना 'यौन अपराधों से बच्चों का संरक्षण अधिनियम, 2012' और 'सूचना प्रौद्योगिकी (IT) अधिनियम' के तहत अपराध है। पीठ ने अपने 200 पन्नों के फैसले में सुझाव दिया कि व्यापक यौन शिक्षा कार्यक्रमों को लागू करना संभावित अपराधियों को रोकने में मदद कर सकता है। पीठ के अनुसार, इन शिक्षा कार्यक्रमों में बाल पोर्नोग्राफी के कानूनी और नैतिक प्रभावों के बारे में जानकारी शामिल होनी चाहिए। फैसले में कहा गया है कि इन कार्यक्रमों के जरिए आम गलतफहमियों को दूर किया जाना चाहिए और युवाओं को सहमति एवं शोषण के प्रभाव की स्पष्ट समझ प्रदान की जानी चाहिए। शीर्ष अदालत ने सुझाव दिया कि प्रारंभिक पहचान, हस्तक्षेप और वैसे स्कूल-आधारित कार्यक्रमों को लागू करने में स्कूल महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं, जो छात्रों को स्वस्थ संबंधों, सहमति और उचित व्यवहार के बारे में शिक्षित करते हैं और समस्याग्रस्त यौन व्यवहार (पीएसबी) को रोकने में मदद कर सकते हैं। गौरतलब है कि अगर इन पर सख्ती से लगाम नहीं कसी जाती है तो निर्भया और अभया नामों से जाने जानी वाली हमारी बच्चियों की खून से सने चेहरों की ये फेहरिस्त इसी तरह से लंबी होती जाएगी, और हम सड़कों पर कुछ दिन मोमबत्तियां जलाकर उन्हें नम आंखों से याद करते हुए बहुत बेरहमी से एक दिन भूल जाएंगे।

बहरहाल, पटना की पुनपुन थाना 11 वर्षीय बच्ची के साथ सामूहिक बलात्कार की घटना का संज्ञान 18 अप्रैल 2024 को ही लेकर प्राथमिकी दर्ज कर लेती तो अनुसंधान कब का खत्म हो जाता है और बच्ची को न्याय मिल जाता। मृतक बच्ची की गरीब मां सब्जी बेचकर अपना और अपने परिवार का भरण-पोषण करती है और अपनी बच्ची के लिए न्याय मांगने को दर-दर भटक रही है। पुलिस से लेकर पत्रकारों तक अपनी बेबसी बयां कर चुकी है किन्तु दबंगों की दबंगई थाने तक में ऐसी दिखी कि, इसका प्रमाण चीख चीखकर एफआईआर में अंकित तिथि बता रहा है। 18 अप्रैल 2024 की घटना का एफआईआर 8 अक्टूबर 2024 को अनुमंडल

NOTICE U/s 94 B.N.S.S.

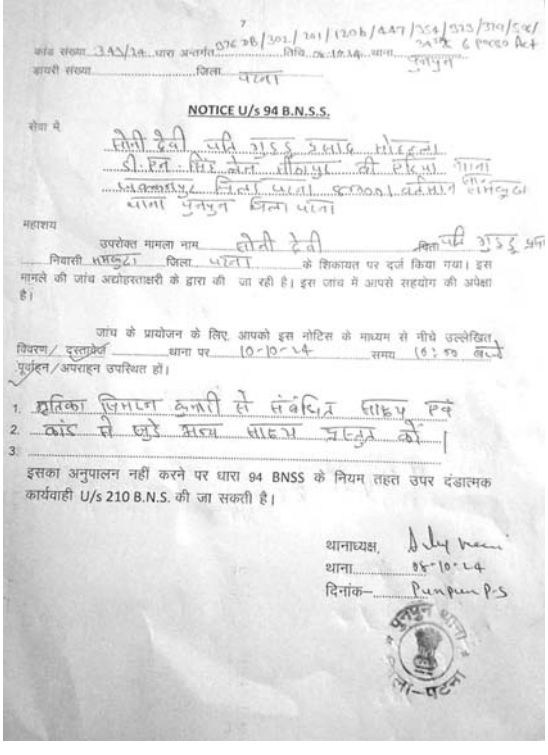

कांड संख्या 345/24 धारा अन्तर्गत 376 DB/302/201/120b/447/354/323/379/506/34 & 6 POCSO Act तिथि 06.10.24 थाना पुनपुन

डायरी संख्या .... जिला पटना

सेवा में

सोनी देवी पति ...

महाशय

उपरोक्त मामला नाम सोनी देवी पति ... निवासी ... जिला पटना के शिकायत पर दर्ज किया गया। इस मामले की जांच अधोहस्ताक्षरी के द्वारा की जा रही है। इस जांच में आपसे सहयोग की अपेक्षा है।

जांच के प्रायोजन के लिए, आपको इस नोटिस के माध्यम से नीचे उल्लेखित विवरण/ दस्तावेज .... थाना पर 10-10-24 समय 10:30 बजे पूर्वाह्न/अपराह्न उपस्थित हों।

1. मृतिका सिमरन कुमारी से संबंधित साक्ष्य एवं
2. कांड से जुड़े अन्य साक्ष्य प्रस्तुत करें।
3. ....

इसका अनुपालन नहीं करने पर धारा 94 BNSS के नियम तहत उपर दंडात्मक कार्यवाही U/s 210 B.N.S. की जा सकती है।

थानाध्यक्ष,
थाना 08-10-24
दिनांक- .... Punpun P.S

पुलिस पदाधिकारी के पास साढ़े पांच महीने से ऊपर हो जाने के बाद दर्ज हुआ। सोनी देवी ने kewalsach@gmail.com पर ई-मेल के द्वारा लिखा कि, 'मैं लगातार थाना से लेकर पुलिस मुख्यालय और मुख्यमंत्री से लेकर मानवाधिकार आयोग तक गुहार लगाती रही लेकिन किसी ने मेरी फरियाद नहीं सुनी। अंततः ईमेल और X (ट्विटर) पर PM, HM, NHRC, NCW, NCPCR, HC और SC को शिकायत के बाद 08 अक्टूबर 2024 (नवरात्र की खष्टी पूजा) को लम्बी जद्दोजहद के बाद IPC की धारा-376 DB, 302, 201, 120B, 447, 354, 323, 379, 506, 34 एंड 6 POCSO Act के अंतर्गत मेरी बेटी के साथ दरिंदगी का FIR दर्ज किया गया।' सोनी देवी ने तकनिकी रूप से संसाधन विहीन पुलिस के अलोक में कांड की न्यायिक देख रेख में जांच या CBI जाँच कराने की मांग की है।

गौरतलब है कि इस केश का अनुसंधान अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी (एसडीपीओ) के द्वारा पुलिस अधीक्षक के नियंत्रण में किया जा रहा है, (supervision by sdpo and control by sp) ऐसा एफआईआर पर अंकित मुहर और हस्ताक्षर बता रहा है। गौरतलब है कि एफआईआर के बाद पुनपुन थाना द्वारा सोनी देवी को मृतिका सिमरन कुमारी से संबंधित साक्ष्य एवं कांड से जुड़े अन्य साक्ष्य प्रस्तुत करने को कहा गया है। हालांकि सोनी देवी ने अपने आवेदन में पहले ही इस बात का जिक्र किया है कि मुखिया नागा राम के कहने पर मृतिका सिमरन के शव को बिना पोस्टमार्टम के गंगा में प्रवाहित करा दिया गया। थाने द्वारा सोनी देवी से साक्ष्य प्रस्तुत करने के बजाय स्वंय साक्ष्य इकट्ठा करने की जिम्मेदारी पुलिस की ही है। 18 अप्रैल 2024 से 08 अक्टूबर 2024 तक एफआईआर दर्ज नहीं किये जाने से पुनपुन थाने ने नामजद अभियुक्तों का मनोबल बढ़ाने का काम किया गया और वही दूसरी तरफ मृतक की मां को न्याय के लिए दर-दर भटकने पर मजबूर होना पड़ रहा है। इस लापरवाही से पुलिस की कार्यशैली पर प्रश्नचिन्ह् खड़ा होता है। चूकि अब एफआईआर दर्ज हो चुका है तब इस मामले को पुलिस कितनी गंभीरता से लेती है और अपराधकर्मी को कठोर से कठोर दंड दिला पाती है, यह देखना होगा। वही अहम बात सुरक्षा को लेकर भी है जैसा कि सोनी देवी ने अपने आवेदन में मुखिया नागा राम सहित अन्य के द्वारा दी जा रही धमकी (अगर तुम मामला को उछालने का प्रयास करोगी तब तुम्हे और तुम्हारे बेटे की भी हत्या कर देंगे, ना कोई शिकायत कर्ता बचेगा और ना कोई गवाह बचेगा) के आलोक में अपनी और अपने परिवार की सुरक्षा की गुहार भी लगायी हैं और स्थानीय पुलिस एवं वरीय पुलिस की यह जिम्मेदारी भी बनती है। अब पुनपुन थाना इस केश को लेकर कितना एक्टिव दिखती है और एसडीपीओ सहित नगर पुलिस अधीक्षक पूर्वी इस केश को जल्द से जल्द सॉल्व कर पीड़िता के परिवार को न्याय दिला पाने में अपनी कर्तव्यनिष्ठा को साबित कर पाते है, इसे देखना होगा।●

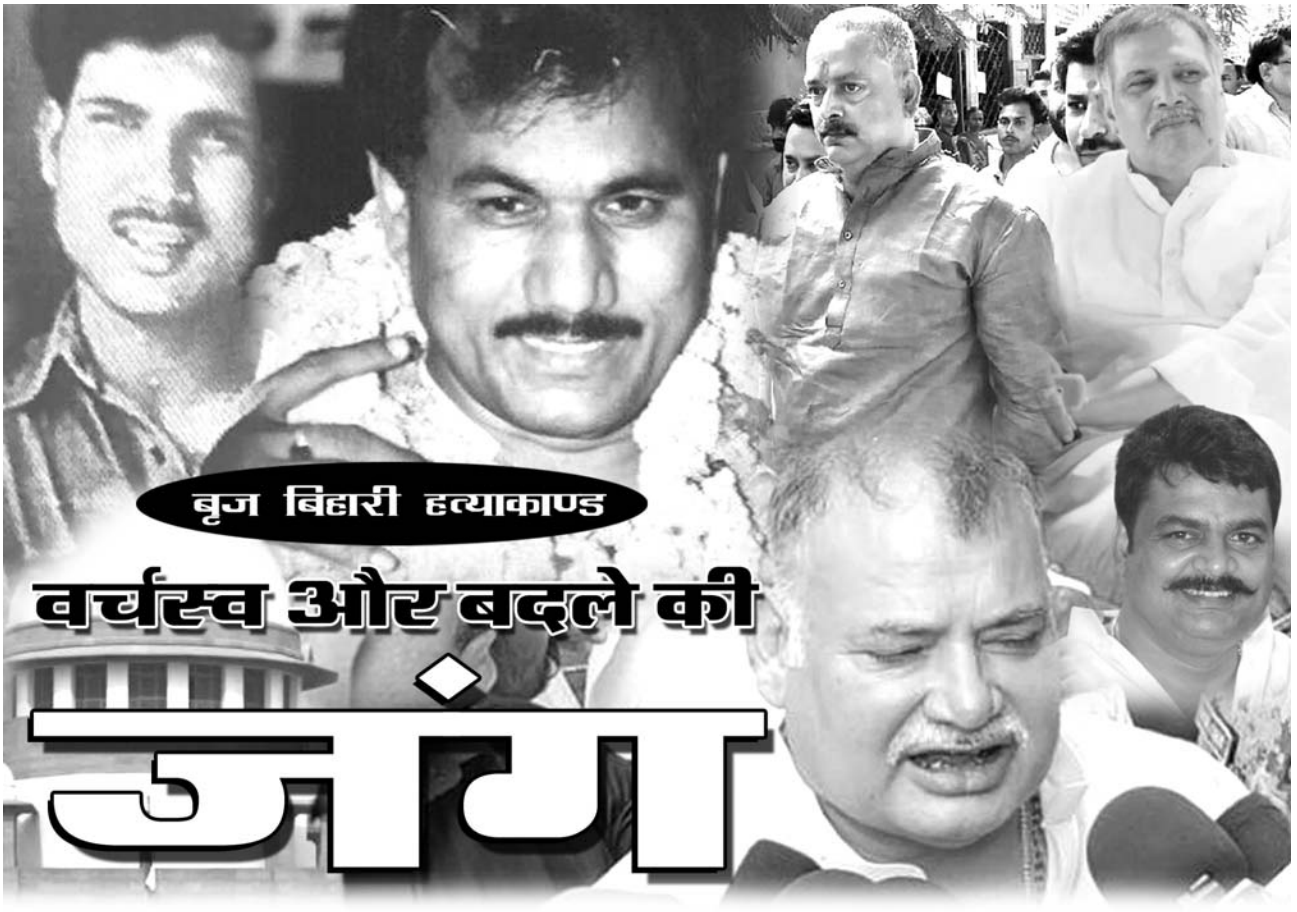

बिहार सरकार के पूर्व मुख्यमंत्री लालू प्रसाद यादव के मंत्रीमंडल में शामिल लालू के खास कहे जाने वाले बृज बिहारी प्रसाद की हत्या 13 जून 1998 को पटना के आईजीआईएमएस में कर दी गई थी। कहते हैं कि सत्ता, वर्चस्व और बदला इसका कारण बना। हत्या के बाद बृज बिहारी प्रसाद की पत्नी रमा देवी (पूर्व सांसद) ने केश दायर किया तथा उस वक्त की सरकार ने सीबीआई इंक्वायरी बैठाई। इस हत्याकाण्ड में श्रीप्रकाश शुक्ला, सुधीर त्रिपाठी, अनुज प्रताप सिंह, मुन्ना शुक्ला, मंटू तिवारी, सूरजभान सिंह, राजन तिवारी पर आरोप लगा। लंबे समय के बाद 3 अक्टूबर 2024 को इस मामले में सुप्रीम कोर्ट का फैसला आया, जिसमें पूर्व विधायक मुन्ना शुक्ला तथा मंटू तिवारी को उम्र कैद की सजा मिली है। वही सूरजभान सिंह और राजन तिवारी को इस केश से बरी कर दिया गया है। सुप्रीम कोर्ट के इस फैसले के बाद विभिन्न अखबारों व मीडिया घरानों में बृज बिहारी हत्याकाण्ड से जुड़ी खबरों को खंगाला जा रहा है। 1990 के दशक में गुंडे से बाहुबली और फिर बाहुबली से माननीय बनने की पूरी दास्तां को श्रीप्रकाश शुक्ला और उनके साथियों के एनकाउंटर में शामिल यूपी एसटीएफ के अधिकारी रहे रिटायर्ड आईपीएस राजेश पांडेय ने अपनी किताब 'वर्चस्व' में लिखी है। सर्वोच्च न्यायालय के फैसले से लेकर बृज बिहारी हत्याकाण्ड पर अन्य मीडिया स्त्रोतों व 'वर्चस्व' पुस्तक के आधार पर प्रस्तुत है संयुक्त संपादक **अमित कुमार** की रिपोर्ट :-

बिहार के पूर्व मुख्यमंत्री लालू प्रसाद यादव के दिग्गज मंत्री बृज बिहारी प्रसाद की हत्या कोई छोटी घटना नहीं थी। दूसरे शब्दों में कहें तो यही वो घटना थी, जिसने सही मायने में बिहार में अपराध या जंगलराज को देश और दुनिया के सामने ला दिया। जब भी बृज बिहारी की हत्या के सवाल का जवाब ढूंढा जाएगा तो इसकी जड़ों को थामे पूर्व प्रधानमंत्री चंद्रशेखर और पूर्व मुख्यमंत्री लालू प्रसाद यादव भी नजर आएंगे। 13 जून 1998 को बृजबिहारी प्रसाद की हत्या हुई और तीन अक्टूबर 2024 को इस मामले में सुप्रीम कोर्ट का फैसला भी आ गया। इसमें मुन्ना शुक्ला और मंटू तिवारी को दोषी करार देते हुए आजीवन कारावास की सजा सुनाई गई है। बता दें कि बृज बिहारी प्रसाद हत्याकांड में मुन्ना शुक्ला समेत छः आरोपितों को निजली अदालत ने उम्रकैद की सजा सुनाई थी। इसके बाद हाईकोर्ट ने सभी को बरी कर दिया था। वहीं, हाईकोर्ट के फैसले के खिलाफ बृज बिहारी प्रसाद की पत्नी रमा देवी और सीबीआई की ओर से सुप्रीम कोर्ट में अपील की गई थी। हाइकोर्ट के फैसले के खिलाफ पूर्व सांसद एवं बृज बिहारी प्रसाद की पत्नी रमा देवी और सीबीआइ ने अलग-अलग 2015 में सुप्रीम कोर्ट का दरवाजा खटखटाया था। राज्य के पूर्व मंत्री बृज बिहारी प्रसाद हत्याकांड में सुप्रीम कोर्ट के फैसले पर पत्रकारों से बातचीत में बृज बिहारी की पत्नी व पूर्व सांसद रमा देवी ने कहा कि न्याय हुआ है। इसके लिए धन्यवाद। उन्होंने कहा कि देरी से न्याय होने से अपराध बढ़ता है जबकि जल्द न्याय से अपराध घटता है। रमा देवी ने यह भी कहा कि गवाहों को सुरक्षा नहीं मिली जिससे वे कोर्ट में गवाही नहीं दे सके। उन्होंने कहा कि ट्रायल कोर्ट ने आठ दोषियों को सजा सुनाई थी। उसे ही मुकर्रर कर दिया जाना चाहिए। इसमें से कई लोग मर गए। मामले में कोई गवाही देने को

रमा देवी

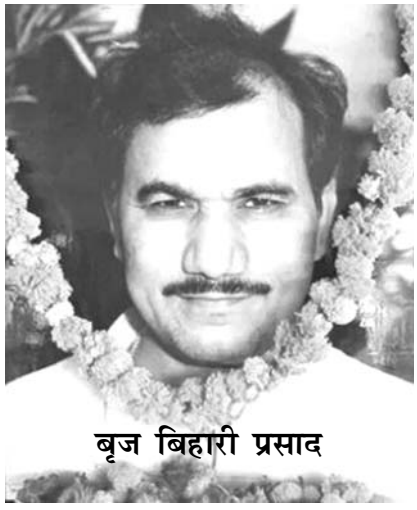
बृज बिहारी प्रसाद

तैयार थे, लेकिन उन्हें सुरक्षा नहीं दी गई। इसलिए वे कोर्ट में गवाही देने नहीं गए। घटना के संबंध में बताते हुए वह भावुक हो गईं। कहती हैं, छोड़िए अब इससे क्या फायदा? जिस समय यह घटना घटी उस समय मैं सांसद थीं। पहली बार चुनाव जीती थीं। बावजूद उन्हें न्याय मिलने में देरी हुई। बता दें कि उच्चतम न्यायालय ने 1998 में हुई बिहार के पूर्व मंत्री एवं राष्ट्रीय जनता दल के नेता बृज बिहारी प्रसाद की हत्या के मामले में दोषी पूर्व विधायक विजय कुमार शुक्ला उर्फ मुन्ना शुक्ला की वह याचिका को खारिज कर दी, जिसमें उन्होंने आत्मसमर्पण के लिए समय दिए जाने का अनुरोध किया था। लिहाजा, उन्होंने 16 अक्टूबर को पटना सिविल कोर्ट में आत्मसमर्पण कर दिया। राजद नेता व पूर्व विधायक मुन्ना शुक्ला की ओर से पेश हुए वरिष्ठ अधिवक्ता विकास सिंह ने न्यायमूर्ति संजीव खन्ना, न्यायमूर्ति संजय कुमार और न्यायमूर्ति आर. महादेवन की पीठ को बताया कि पत्नी की स्वास्थ्य समस्याओं और कामकाज के प्रबंधन के लिए उन्हें 30 दिनों का समय चाहिए। किन्तु शुक्ला की याचिका खारिज करते हुए पीठ ने कहा कि उसके तीन अक्टूबर के आदेश में उन्हें 15 दिन का पर्याप्त समय दिया गया है, इसलिए उन्हें और अधिक छूट नहीं दी जा सकती। करीब नौ साल बाद सुप्रीम कोर्ट ने अपना फैसला सुनाया और पटना हाइकोर्ट के फैसले को बदलते हुए मुन्ना शुक्ला तथा मंटू तिवारी को आजीवन दोषी करार दिया है। सीबीआइ की ओर से सोनिया माथुर ने पक्ष रखा, जबकि रमा देवी की ओर से सिद्धार्थ अग्रवाल ने तथ्य रखे। सभी पक्षों को सुनने के बाद सुप्रीम कोर्ट की तीन जजों की पीठ ने कहा कि मंटू तिवारी और विजय कुमार शुक्ला उर्फ मुन्ना शुक्ला के खिलाफ भारतीय दंड संहिता की धारा 302 (हत्या) और 307 (हत्या का प्रयास) के तहत आरोप साबित हुए हैं। ज्ञात हो कि शीर्ष अदालत ने हत्या मामले में 3 अक्टूबर को पूर्व विधायक शुक्ला एवं आरोपी मंटू तिवारी को दोषी करार दिया था। शीर्ष अदालत ने मामले में सभी आरोपियों को बरी करने के पटना उच्च न्यायालय के आदेश को आंशिक रूप से रद्द कर दिया था और शुक्ला तथा तिवारी को दो सप्ताह के भीतर आत्मसमर्पण करने को कहा था। बता दें कि तिवारी दिवंगत भूपेंद्र नाथ दुबे

के भतीजे हैं, जो प्रसाद की विधवा रमा देवी के राजनीतिक प्रतिद्वंद्वी देवेंद्र नाथ दुबे के भाई थे। सुप्रीम कोर्ट ने हाईकोर्ट के फैसले को पलटते हुए बृजबिहारी प्रसाद हत्याकांड में मुन्ना शुक्ला और मंटू तिवारी की उम्रकैद की सजा बरकरार रखी। इस मामले में सूरजभान सिंह, राजन तिवारी और एक अन्य आरोपी को सुप्रीम कोर्ट ने बरी कर दिया है। वही गोरखपुर के गैंगस्टर श्रीप्रकाश शुक्ला द्वारा की गई हत्या की घटना ने बिहार और उत्तर प्रदेश की पुलिस को हिलाकर रख दिया था। श्रीप्रकाश शुक्ला को बाद में उत्तर प्रदेश विशेष कार्य बल (एसटीएफ) और अन्य ने मार गिराया था। मामला सात मार्च, 1999 को केंद्रीय अन्वेषण ब्यूरो (सीबीआई) को सौंप दिया गया था और केंद्रीय एजेंसी ने पूर्व सांसद सूरजभान सिंह तथा तीन अन्य को अपराध के साजिशकर्ता के रूप में नामित किया था। जांच एजेंसी ने आरोप लगाया था कि 13 जून 1998 को प्रसाद की हत्या से पहले पटना के बेउर जेल में मुन्ना शुक्ला, लल्लन सिंह और राम निरंजन चौधरी के साथ सूरजभान सिंह की बैठक हुई थी। ये चारों बेउर जेल में ही बंद थे। 24 जुलाई 2014 को उच्च न्यायालय ने सभी आरोपियों को संदेह का लाभ देते हुए बरी कर दिया था तथा निचली अदालत के 12 अगस्त 2009 के उस आदेश को रद्द कर दिया था, जिसमें उन्हें आजीवन कारावास की सजा सुनाई गई थी। वही बृज बिहारी हत्याकांड में दोषी ठहराए जाने के बाद आरजेडी नेता मुन्ना शुक्ला ने पटना सिविल कोर्ट में आत्मसमर्पण किया। कोर्ट में सरेंडर करते हुए पत्रकारों से बातचीत में कहा कि न्यायालय का जो फैसला है हम उसका सम्मान करते हैं। वही आरजेडी से जुड़ने का दंड मिलने वाली बात पर उन्होंने कहा कि यह बात गलत

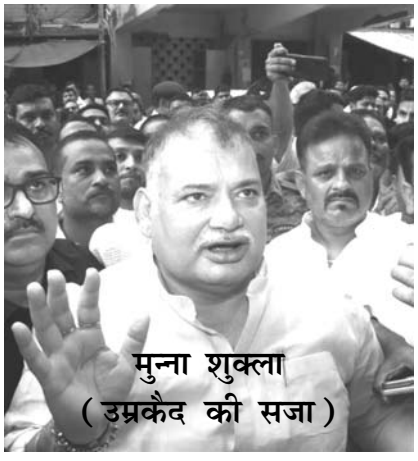
मुन्ना शुक्ला
(उम्रकैद की सजा)

है कि राष्ट्रीय जनता दल में आने पर उन्हें सजा मिली है। यह न्यायालय का फैसला है। वहीं रिव्यू पिटीशन दायर करने के सवाल पर आरडेडी नेता ने कहा कि जरूर आगे की कानूनी प्रक्रिया की जाएगी। बता दें कि पटना जिला कोर्ट में सरेंडर करने से पहले उन्होंने अपने पैतृक गांव में मीटिंग की, जिसमें उनके हजारों समर्थक शामिल हुए थे। इस मीटिंग के दौरान मुन्ना शुक्ला ने कार्यकर्ताओं से बातें की और आने वाले वक्त में सूबे की सरकार बदलने का दावा किया। विजय कुमार शुक्ला ने कहा कि मुन्ना शुक्ला का सरकार बनेगा, मुन्ना जेल में रहेंगे, लेकिन आपसे इसी बंगले में मिलेंगे, जेल से टेंशन नहीं है। मुझे जनता ने बनाया है, हम नहीं जानते थे कि मुझे प्रधानमंत्री और गृह मंत्री जानते हैं।

बहरहाल, मौका है, मौसम है और दस्तूर भी यही है कि आज बृजबिहारी प्रसाद की हत्या की इस घटना की जड़ों को खंगाला जाए। यह जानने की कोशिश हो कि आखिर मुन्ना शुक्ला और श्रीप्रकाश शुक्ला ने बृजबिहारी प्रसाद को क्यों मारा? विभिन्न मीडिया स्त्रोत कहते हैं कि बृज बिहारी प्रसाद आदा में रहने वाले एक सामान्य परिवार में पैदा हुए और उनके पिता आदा में राजपरिवार की संपत्तियों के केयर टेकर थे। चूंकि शुरू से ही पढ़ाई लिखाई में वह बहुत तेज थे, इसलिए ना केवल मैट्रिक में टॉप किया, बल्कि सिविल इंजीनियरिंग की पढाई कर पीडब्ल्यूडी में इंजीनियर भी बन गए। उस समय भूमिहार समाज का इस विभाग पर काफी प्रभाव था। कई बार ठेका लेने के लिए उनकी कनपटी पर तमंचा भी सटा दिया था। इस तरह की घटनाओं से तंग आकर बृज बिहारी ने सरकारी नौकरी छोड़ दी। उस समय आदा में नक्सलियों का आतंक था और कोई भी

उनके खिलाफ मुंह खोलने की स्थिति में नहीं था। ऐसे में बृजबिहारी ने मौका देखा और राजपूत समाज के कुछ युवाओं को अपने साथ मिलाकर नक्सलियों के खिलाफ राजनीति शुरू की। फिर चंद्रशेखर की पार्टी में प्रदेश अध्यक्ष रघुनाथ झा के संपर्क में आकर 1990 में विधायक भी बन गए। उस समय बिहार विधानसभा चुनाव में इस पार्टी से आनंद मोहन और बृजबिहारी प्रसाद समेत कुल 12 विधायक चुने गए थे। इस चुनाव के बाद लालू यादव मुख्यमंत्री पद के प्रबल दावेदार तो थे, लेकिन विधायकों की संख्या उन्हें सीएम बनाने के लिए पर्याप्त नहीं था। ऐसे में चंद्रशेखर ने अपनी पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष रघुनाथ झा को लालू का समर्थन करने को कहा। इस प्रकार लालू यादव के नेतृत्व में सरकार बन गई। हालांकि उस समय केंद्र में लालू यादव की

मंटू तिवारी
(उम्रकैद की सजा)

अच्छी पैठ नहीं थी और उनकी सरकार को गिराने की कोशिश होने लगी। यह खबर जब लालू यादव को मिली तो उन्होंने अचानक से मंत्रीमंडल का विस्तार कर दिया। कुल 74 मंत्री बने। इनमें बृजबिहारी प्रसाद भी शामिल थे। मंत्री बनते ही बृजबिहारी लालू यादव के करीब आ गए। इसके बाद जो छिटपुट अपराध उनके लोग चोरी छुपे करते थे, वह खुल कर करने लगे और उत्तर बिहार में बृजबिहारी का डंका बजने लगा। स्त्रोत कहते हैं कि इसी बीच साल 1993 में विधानसभा के अंदर लालू यादव और आनंद मोहन के बीच झड़प हो गई। इस दौरान लालू यादव की ओर से केशरिया से विधायक यमुना यादव सामने आ गए और आनंद मोहन पर माइक फेंक दिया था। उसी समय आनंद मोहन ने ऐलान कर दिया कि अब केशरिया से मुजफ्फरपुर के बाहुबली भुटकुन शुक्ला चुनाव लड़ेंगे। आनंद मोहन के इस ऐलान के बाद एक तरफ भुटकुन शुक्ला केशरिया में राजनीति करने लगे। वहीं बृजबिहारी प्रसाद को लगा कि इससे उनका प्रभाव कम हो जाएगा, इसलिए उन्होंने

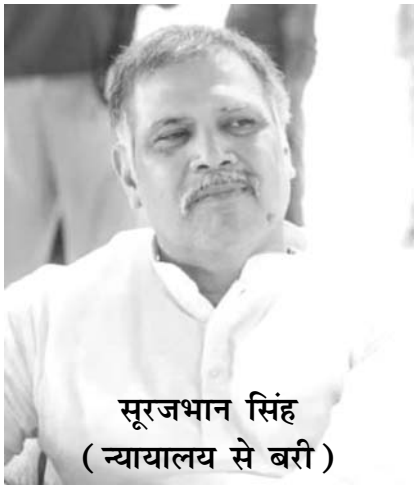
सूरजभान सिंह
(न्यायालय से बरी)

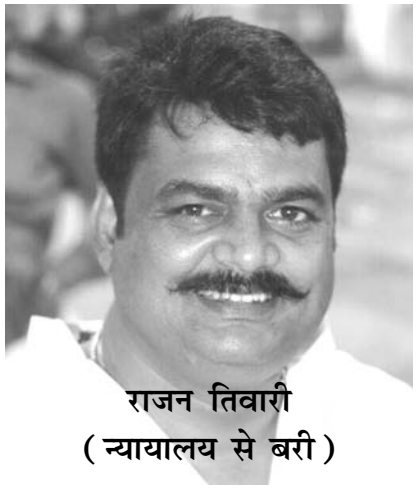
राजन तिवारी
(न्यायालय से बरी)

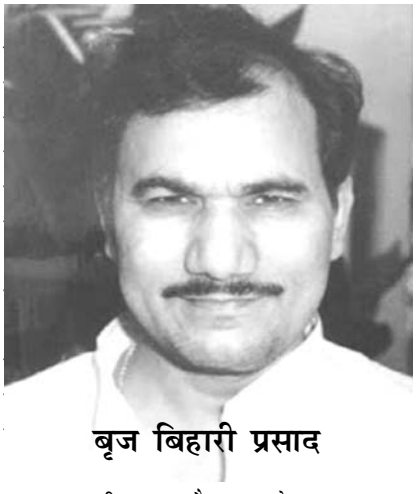

बृज बिहारी प्रसाद

कारावास भी काटा है)। इसके बाद भुटकुन शुक्ला के गैंग की कमान उनके छोटे भाई छोटन शुक्ला ने संभाली, लेकिन कुछ ही दिन बाद छोटन शुक्ला की भी हत्या करा दी गई। उस समय छोटन शुक्ला की चिता की राख से तिलक करते हुए उनके छोटे भाई मुन्ना शुक्ला ने कसम खाई थी कि वह अपने दोनों भाइयों की हत्या का बदला जरूर लेंगे।

सनद् रहे कि इस प्रसंग में सूरजभान सिंह की चर्चा ना हो तो कहानी अधूरी होगी। मीडिया स्त्रोत के अनुसार सूरजभान भी मोकामा कस्बे से लगते हुए एक छोटे से गांव में सामान्य परिवार से आते हैं। कहा जाता है कि सूरजभान के बड़े भाई सीआरपीएफ में थे और उनके पिता उन्हें भी फौज में भेजना चाहते थे। चूंकि नियति को कुछ और ही मंजूर था। इसलिए सूरजभान खराब संगत में आ गए और अपराध करने लगे। सूरजभान को कोई रोकने वाला नहीं था और बिहार के अंडरवर्ल्ड में तेजी से कुख्यात होने लगे। उस समय संयुक्त बिहार था और कुल तीन गैंग चर्चित थे। इनमें एक बेगूसराय वाले अशोक सम्राट और दूसरे आदा से बृजबिहारी तथा तीसरा गैंग मोकामा वाले सूरजभान का था। चूंकि अशोक सम्राट की पुलिस एनकाउंटर में मौत हो गई, इसलिए बृजबिहारी की राह में अब सूरजभान ही एक मात्र कांटा रह गए थे। उस समय बृजबिहारी प्रसाद मंत्री थे और कहा जाता है कि अशोक सम्राट के एक साथी की हत्या के मामले में उन्होंने सूरजभान को अरेस्ट करा कर जेल भिजवा दिया था। साथ ही सुपारी दे दी कि सूरजभान को जेल में ही जहर देकर मार दिया जाए। उस समय तक दो भाइयों की हत्या के बदले की आग में जल रहे वैशाली के मुन्ना शुक्ला का संपर्क सूरजभान और गोरखपुर के गैंगस्टर श्रीप्रकाश शुक्ला से हो चुका था। इधर, जैसे ही सूरजभान को अपनी हत्या की साजिश की खबर मिली, उन्होंने तत्काल मुन्ना शुक्ला के जरिए श्रीप्रकाश शुक्ला से संपर्क किया। उस समय तक गोरखपुर में हरिशंकर तिवारी की गैंग में शूटर श्रीप्रकाश शुक्ला उड़ान भरने की कोशिश कर रहा था। इसी दौरान वह सूरजभान सिंह के ना केवल संपर्क में आ चुका था, बल्कि अपराध की दुनिया में बादशाहत हासिल करने के गुर भी सीख लिए थे। इसके बाद 11 जून 1998 को श्रीप्रकाश शुक्ला अपने साथियों अनुज प्रताप सिंह, सुधीर त्रिपाठी के साथ पटना पहुंचा। पटना पहुंचते ही मुन्ना शुक्ला ने उसे एके-47 और दो पिस्टल उपलब्ध कराए। 11 और 12 जून को श्रीप्रकाश शुक्ला, अनुज प्रताप सिंह और सुधीर त्रिपाठी ने खुद अस्पताल पहुंचकर रैकी किया। इस दौरान देखा कि कमांडो की सुरक्षा घेरे में बृजबिहारी प्रसाद पर कैसे हमला किया जा सकता है।

जार्ज फ्रर्णांडीस एवं लालू प्रसाद यादव के साथ बृज बिहारी प्रसाद

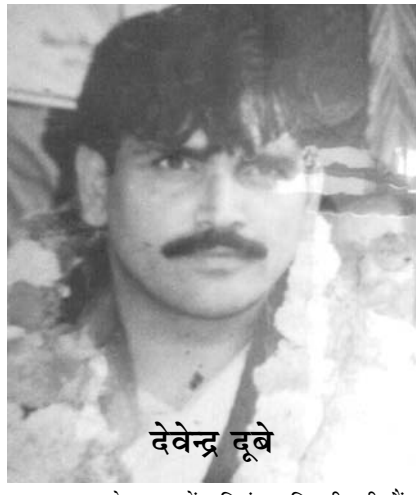

देवेन्द्र दूबे

बहरहाल, पटना में इंदिरा गांधी आयुर्विज्ञान संस्थान, तारीख 13 जून 1998, दिन

भुटकुन शुक्ला

आनंद मोहन

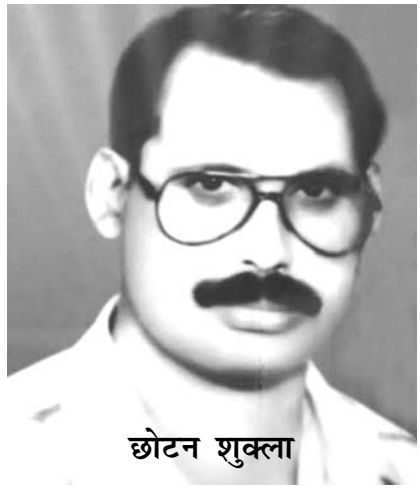

छोटन शुक्ला

सूरजभान सिंह

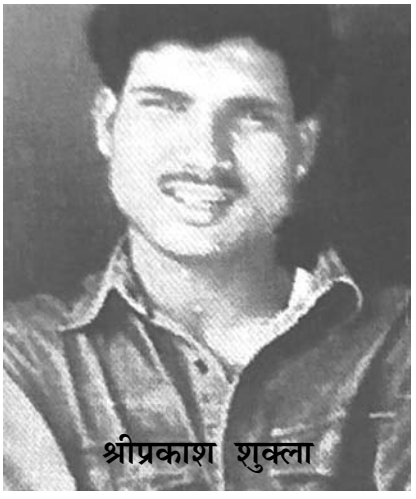
श्रीप्रकाश शुक्ला

अजीत सरकार

शनिवार की शाम समय पांच बजे। बिहार में उस समय राबड़ी देवी की सरकार थी और इस सरकार के दिग्गज मंत्री और राजद सुप्रीमो लालू यादव के खासमखास बृजबिहारी प्रसाद इस अस्पताल में भर्ती थे। चूंकि उस समय बृजबिहारी प्रसाद गैंगस्टर छोटन शुक्ला, भुटकुन शुक्ला और देवेन्द्र दूबे की हत्या में नामजद थे, अब गैंगवार में उनकी हत्या की भी आशंका प्रबल थी। ऐसे में अस्पताल में उनकी सुरक्षा के लिए 22 कमांडो के अलावा भारी संख्या में पुलिस फोर्स तैनात थी। उसी समय एक एंबेसडर कार और बुलेट पर सवार होकर पांच लोग अस्पताल पहुंचे। यह सभी अस्पताल के बाहर गाड़ी खड़ी किए और सीधे अंदर घुस गया। इनमें सबसे आगे श्रीप्रकाश शुक्ला था। उसके पीछे सुधीर त्रिपाठी और अनुज प्रताप सिंह था। मीडिया खबर के अनुसार इन तीनों के अलावा मुन्ना शुक्ला और मंटू तिवारी भी थे, जिन्होंने 13 जून 1998 को बृजबिहारी हत्याकांड को अंजाम दिया। कहा जाता है कि श्रीप्रकाश शुक्ला ने पहली बार बृजबिहारी प्रसाद की हत्या की कोशिश उनके आवास पर ही की थी। वारदात के लिए वह पहुंच भी गया था, लेकिन वारदात के बाद वहां से निकलना मुश्किल था, इसलिए वहां छोड़ दिया। वहीं दूसरे प्रयास में वारदात को अंजाम दिया था। इस वारदात के बाद डर का ऐसा माहौल बन गया कि कोई मुकदमा तक दर्ज कराने को तैयार नहीं था। साथ ही इस वारदात के बाद बिहार सरकार सकते में आ गई थी। खुद लालू यादव भयभीत हो गए थे। वह अपने साथ भारी सुरक्षा लेकर तत्काल अस्पताल पहुंचे और तत्कालीन मुख्यमंत्री राबड़ी देवी की सुरक्षा डबल कर दी गई। उस समय सरकार भी यह मानने लगी थी कि अब श्रीप्रकाश शुक्ला कुछ भी कर सकता है। ***इस घटना का जिक्र यूपी एसटीएफ के अधिकारी रहे रिटायर्ड आईपीएस राजेश पांडेय ने भी अपनी किताब 'वर्चस्व' में किया है।*** इस वारदात को अंजाम देने के बाद यह पांचों बदमाश मुजफ्फरपुर से विधायक रघुनाथ पांडेय के अलावा दो अन्य विधायकों शशि कुमार राय और चूना सिंह के आवास पर पहुंचे और तीन घंटे तक यहां रूके भी। इन्हीं में से किसी एक विधायक के आवास पर हथियार डीलर से इनकी मुलाकात हुई। चूंकि उस समय श्रीप्रकाश शुक्ला के पास जो एक-47 थी, उसकी मैगजीन में कारतूस खत्म हो गए थे। इसलिए यहीं पर एक हथियार डीलर से अपनी एक-47 की मैगजीन भरवाई और एक मैगजीन एक्स्ट्रा लेकर करीब 3 से 4 घंटे बाद पटना से निकल गए थे।

मीडिया खबरों के अनुसार कहा गया कि 13 जून 1998 को पटना में बृजबिहारी प्रसाद की हत्या के अगले ही दिन यानी 14 जून की शाम करीब पांच बजे पूर्णिया से दिग्गज कम्युनिष्ट विधायक अजीत सरकार की हत्या हो गई। वैसे

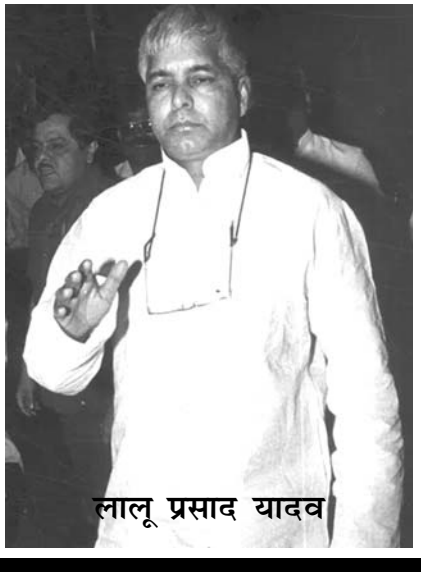
लालू प्रसाद यादव

तो इन दोनों ही हत्याकांड में कोई कॉमन इंटेशन नहीं था, लेकिन दोनों वारदात के वक्त एक कॉमन घटना जरूर हुई थी। इन दोनों ही वारदातों को अंजाम देने के बाद बदमाशों ने 'जय बजरंग बली' का नारा लगाया था। दावा किया जाता है कि वारदात के बाद इस तरह से नारा श्रीप्रकाश शुक्ला और उसके दोनों साथी अनुज प्रताप सिंह और सुधीर त्रिपाठी लगाते थे। इस वारदात में मुख्य आरोपी पूर्णिया से सांसद पप्पू यादव बनाए गए। उनके साथ नाम श्रीप्रकाश शुक्ला और उनके दोनों साथियों समेत कई अन्य लोगों का नाम जोड़ा गया। घटना के बाद लोगों के आक्रोश को देखते हुए तत्कालीन मुख्यमंत्री राबड़ी देवी को मामले की जांच सीबीआई से करानी पड़ी। यह अलग बात है कि सीबीआई ने सभी आरोपियों के खिलाफ चार्जशीट तो दाखिल कर दी, लेकिन कोर्ट में जिरह के दौरान यह चार्जशीट टिक नहीं पायी और सभी आरोपी सबूतों के अभाव में हाईकोर्ट से बरी हो गए। इस वारदात में श्रीप्रकाश शुक्ला की एंट्री कैसे हुई और वारदात के बाद क्या हुआ? इन सवालों का जवाब जानने से पहले जरूरी है कि ग्राउंड जीरो से घटनाक्रम पर नजर डाल लें। 14 जून की सुबह 11 बजे पूर्णिया के एक गांव में दलित समाज का एक विवाद था। इसी मामले में पंचायत के लिए तत्कालीन विधायक अजीत सरकार अपनी सफेद रंग की एंबेसडर कार से गए थे। उनके साथ ड्राइवर, एक सहयोगी और प्राइवेट गनर भी थे। उस दिन उनका सरकारी गनर छुट्टी पर था। शाम को पांच बजे अजीत सरकार जब अपने गांव वापस लौटे, उस समय बूंदाबादी हो रही थी। बिजली भी तड़क रही थी। वारदात अजीत सरकार का घर से महज 200 मीटर की दूरी पर हुआ। उस समय अजीत सरकार की कार को ओवरटेक कर एक बुलेट सवार आगे आया और उन्हें हाथ देकर

रूकने का इशारा किया। ड्राइवर ने गाड़ी रोकी ही थी कि पीछे से यामाहा बाइक पर सवार दो लोग आ गए और अजीत सरकार के ऊपर अंधाधुंध फायरिंग शुरू कर दी। इस वारदात में कुल 107 गोलियां चली थीं। इसमें 46 गोलियां अजीत सरकार को लगीं, वहीं बाकी गोलियां उनके ड्राइवर और सहयोगी को लगी। कुछ गोलियां कार की बॉडी पर भी लगीं। इस घटना में उनके गनर को खरोंच तक नहीं आई। उल्लेखनीय है कि अजीत सरकार अलग तरह की राजनीति करते थे। इसकी वजह से कई जमींदारों और राजनीतिक लोगों की आंख में खटक रहे थे। इसलिए उन्हें रास्ते से हटाने की प्लानिंग करीब तीन महीने पहले से चल रही थी। अड़चन यह थी कि कोई ढंग का शूटर नहीं मिल रहा था। कहा जाता है कि वारदात के मास्टर माइंड को पता चला कि श्रीप्रकाश शुक्ला पटना आने वाला है तो आनन फानन में उसे सुपारी दी गई और इस वारदात को अंजाम दिया गया। बता दें कि पटना में बृजबिहारी प्रसाद और पूर्णिया में अजीत सरकार की हत्या के बाद बिहार सरकार तनाव में आ गई थी। पुलिस पर आरोपियों की धरपकड़ के लिए दबाव बढ़ गया था। राज्यपाल के जरिए केंद्र सरकार ने सरकार पर इतना दबाव

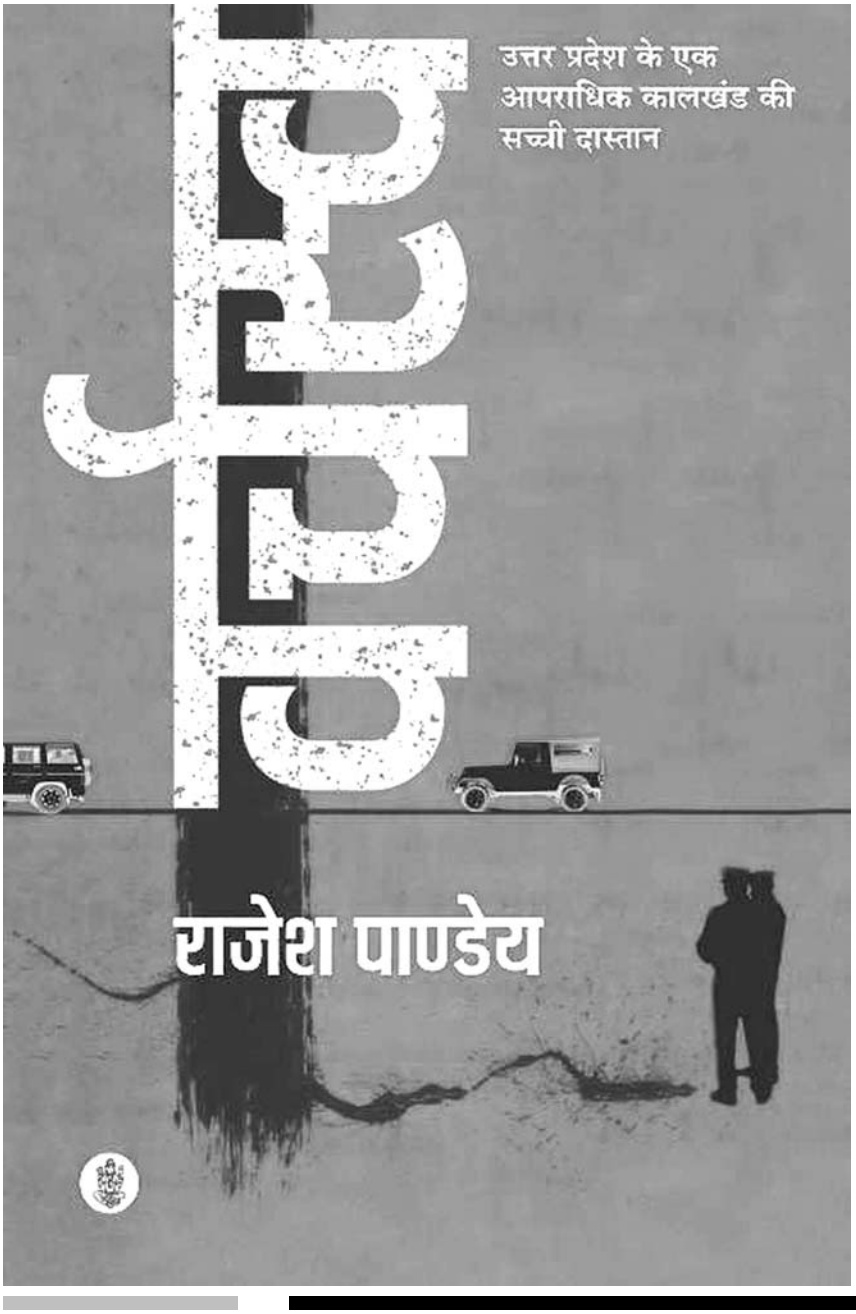

बना दिया था कि मुख्यमंत्री राबड़ी देवी तो दूर, खुद राजनीति के तीरंदाज लालू यादव भी नहीं समझ पा रहे थे कि हालात को कैसे कंट्रोल किया जाए। ऐसे वह खुद पुलिस से पल पल की रिपोर्ट ले रहे थे और आगे के लिए निर्देश दे रहे थे। मीडिया खबरों के अनुसार मुन्ना शुक्ला के ठिकाने पर जश्न का आयोजन किया गया था। एक तरफ दावत हो रही थी तो वहीं, आर्केस्ट्रा भी चल रहा था। इसमें सबसे आगे बैठे थे श्रीप्रकाश शुक्ला और मुन्ना शुक्ला। वहीं पास में ही सुधीर त्रिपाठी और अनुज प्रताप सिंह भी अपने हाथों में हथियार लेकर बैठे थे और जश्न का आनंद ले रहे थे। इस आयोजन की पुष्टि सीबीआई ने भी अपनी चार्जशीट में किया है। लिखा है कि यह आयोजन बृजबिहारी प्रसाद और अजीत सरकार की हत्या की खुशी में किया गया था।

बहरहाल, बृजबिहारी हत्याकांड में सुप्रीम कोर्ट ने अपना फैसला सुनाया है। इस मामले में सुप्रीम कोर्ट ने सूरजभान सिंह समेत अन्य को बरी कर दिया है। वहीं मुन्ना शुक्ला और मंटू तिवारी को दोषी करार देते हुए आजीवन कारावास की सजा सुनाई है। चूंकि इस वारदात में शामिल तीन बदमाशों श्रीप्रकाश शुक्ला, अनुज प्रताप सिंह और सुधीर त्रिपाठी को पहले ही यूपी एसटीएफ ने एनकाउंटर में मार गिराया था, इसलिए इनके नाम इस केस में साइलेंट हैं। वहीं अजीत सरकार हत्याकांड में सभी आरोपियों के हाईकोर्ट से बरी होने के बाद उनकी पत्नी ने सुप्रीम कोर्ट रिव्यू याचिका लगाई है। यह मामला फिलहाल पेंडिंग है।●

● **मिथिलेश कुमार**

वैसे तो बिहार में बीते आठ वर्षो से शराब बंद है। बिहार सरकार ने वर्ष 2016 में कानून पास कर पूर्ण शराब बंदी कानून के तहत पुरे बिहार में शराब बिक्री ,भंडारण, एवं शराब पीने पर बैन कर दिया था। एक तरह से यह कहा जा सकता है कि बिहार में शराब और शराबी के साथ शराबखाना का नामोनिशान नही रहेगा। सरकार ने इस कानून को पुरी सख्ती के साथ पुरे बिहार मे लागु कराया परन्तु कुछ दिनों के बाद शराबबंदी कानून में संशोधन करते हुये पीने वालों पर सजा को कम कर दिया। सवाल है जब बिहार में पूर्ण शराबबंदी कानून लागू है तो आखिर बिहार में अग्रेंजी शराब पहुॅचती कैंसे है। लोगों को इतनी आसानी से शराब मिल कैसे जाती है। तो इसका खास वजह है कि सरकार के लोग ही शराब का धंधा में लिप्त है। सबसे बडी शर्म की बात तो यह है कि बिहार सरकार जिस पुलिस प्रशासन पर शराबबंदी कानून की रक्षा कर उसका पालन करने का दायित्व दिया है वही पुलिस थाने से शराब बेच रही है। और स्थानीय शराब माफियाओं के साथ सांठ गांठ कर बिहार में शराब नही मौत बेच रही है। शराब बंद? शराबखाना बंद, फिर शराबी कहॉ से आ रहे है। बीते आठ वर्षो में शराबबंदी कानून के बाद बिहार में सैकड़ों मौते हो चुकी है। लाखों लोग जेल भी गये। कई को सजा भी हुई है परन्तु शराबबंदी का असर नही दिख रहा है। सरकार शराबबंदी की आड़ में शराब माफिया का संरक्षण भी देने का कार्य कर रही है। अगर बिहार में शराब बंदी कानून का पालन नही हो रहा है

तो इसमें सीधे तौर पर सरकार जिम्मेवार है। यहॉ के सभी थानों में थानेदार से लेकर मुंशी और चौकीदार भी शराब पीते हैं यह सत्य है। बिहार में एक बार फिर शराब ने सैकड़ों परिवार को प्रभावित किया है। जहरीली देशी शराब पीने से आये दिन भी यहॉ के लोग मौत के शिकार हो रहे हैं परन्तु सरकार उसे छुपाने के लिये स्थानीय पुलिस एवं प्रशासन को खुली छुट दे रखी है।

बिहार में एक बार फिर से जहरीली शराब की वजह से कई घरों में मातम पसर गया है। छपरा और सिवान के कई पंचायतों में सन्नाटा है। यहां की कई औरतें बेवा हो गई। छोटे-छोटे बच्चों के सिर से पिता का साया उठ गया। शव के पास बच्चों की आखों में आंसू और महिलाओं के रूदन को देखकर हर किसी के आंखों से आंसू नहीं रूक नहीं रहे हैं। शव के पास महिलाएं दहाड़ मारकर रो रही हैं तो बूढ़े मां-बाप जार-जार रो रहे हैं। जहरीली शराब पीने की वजह से छपरा और सिवान में मरने वाले लोगों की संख्या बढ़कर 27 तक पहुंच गई है। वहीं कुछ लोगों ने हमेशा के लिए अपनी आंखों की रोशनी खो दी है। बिहार में शराब बंदी के बाद जहरीली शराब पीने से मौत की घटनाएं लगातार हो रही हैं। शराब बंदी वाले बिहार में इस घटना के बाद अब शराबबंदी समाप्त कर दिये जाने की सियासी

मांग तेज होने लगी है। बिहार में नीतीश कुमार की पूर्ण शराबबंदी की जमीनी हकीकत क्या है, ये सबके सामने है। आए दिन जहरीली शराब पीने से मौत की खबर आती रहती है। खासतौर पर इस इलाके में अवैध रूप से शराब की बिक्री जमकर हो रही है। इसी इलाके में दो साल पहले 2022 में जहरीली शराब ने 72 लोगों की जान ले ली थी। इस घटना के बाद पटना में खूब हंगामा होने के बाद इस इलाके में जमकर छापेमारी हुई, लेकिन आज हालात जस का तस है. अगर इस इलाके में कुछ बदला है तो वह है जहरीली शराब पीने से मरने वालों के नाम।

बिहार में जहरीली शराब पीने से पिछले दिनों से मौतें हो रही है। खबर लिखे जाने तक सबसे ज्यादा मौत सीवान जिले में हुई हैं, जहां 32 लोगों की मौत हुई है। वहीं सारण में 11 और गोपालगंज में 2 लोगों की जान चली गई। बिहार में अप्रैल 2016 से शराबबंदी है, लेकिन इसके बावजूद जहरीली शराब से होने वाली मौतें रुक नहीं रही हैं। अब तो आलम ये है कि बिहार में छपरा ही नही सूबे के प्रत्येक जिलों में जहरीली शराब ने तांडव मचाया है। सिवान में जहरीली शराब से मरने वालों की संख्या बढ़कर 32 हो गई है, हालांकि प्रशासन ने अभी तक सिर्फ 20 मौतों की ही पुष्टि की है। वहीं, छपरा में 4 लोगों की मौत की बाद प्रशासन ने कही है। इस मामले में थाना प्रभारी और दो चौकीदारों को निलंबित कर दिया गया है। 10 से ज्यादा लोगों को गिरफ्तार किया गया है। मतृक के परिजनों का तो यहां तक कहना है कि गांव में खुलेआम शराब मिलती है। कई मरीजों की आंखों की रोशनी भी चली गई। सिवान और सारण के अस्पतालों में 70 से ज्यादा लोग भर्ती हैं। भगवानपुर हाट के आठ गांवों में जहरीली शराब कांड से मातम छाया है। सरकारी आंकड़ों के अनुसार, 28 लोगों की मौत हो चुकी है, जबकि असली संख्या 35 से अधिक होने की संभावना है। कई परिवारों में चूल्हे नहीं जल रहे। धटना के कई दिनों के बाद तक मृतक के घरों में मातम छाया है। वही चुल्हे तक नही जल रहें हैं। इतनी बड़ी धटना के बाद भी शुक्रवार 19 अक्तूबर को सीवान शहर के बिंदुसार गांव के झुनापुर निवासी शाकिर मंसूरी की शराब पीने से मौत हो गई। शाकिर मंसूरी 18 अक्तूबर को अपने मामा के गांव बंसोयी गया था और वहीं से शराब पीकर वापस लौटा था। उसके पड़ोसी मोहम्मद गुड्डू आलम के अनुसार, शाकिर शाम करीब चार बजे नशे में धुत होकर घर पहुंचा। उसके घर आने के बाद उसकी तबीयत बिगड़ने लगी। परिवार ने उसे सीवान के सदर अस्पताल में भर्ती कराया, लेकिन इलाज के दौरान उसकी मौत हो गई। दूसरी घटना के अनुसार, शनिवार 20 अक्तूबर को दिन में करीब 12 बजे एक और व्यक्ति जिसने शराब पी थी, को गंभीर हालत में सीवान के सदर अस्पताल में भर्ती कराया गया। पीड़ित ने बताया कि उसने 19 अक्तूबर को सीवान शहर के सिसवन ढाला के पास लक्ष्मीपुर से शराब खरीदी थी। शराब पीने के बाद जब वह सुबह उठा, तो उसकी आवाज चली गई थी और उसे घबराहट महसूस हो रही थी। परिजनों ने उसे तुरंत

अस्पताल में भर्ती कराया, जहां उसका इलाज चल रहा है। डॉक्टरों के अनुसार, उसकी हालत अब स्थिर है और वह धीरे-धीरे बोलने की स्थिति में आ रहा है।

☞ **प्रशासन पर उठ रहे सवाल :-** जहरीली शराब से लगातार हो रही मौतों ने प्रशासन की कार्रवाई पर गंभीर सवाल खड़े कर दिए हैं। पिछले कई दिनों से जिले में शराब के कारण मौतों का सिलसिला चल रहा है, लेकिन शराब माफियाओं पर पूरी तरह लगाम लगाने में प्रशासन विफल नजर आ रहा है। सवाल यह उठता है कि जब प्रशासन इतनी कड़ी कार्रवाई का दावा कर रहा है, तो 18 अक्तूबर को बंसोयी गांव से शाकिर मंसूरी शराब पीकर कैसे आ गया और 19 अक्तूबर को सीवान के लक्ष्मीपुर में शराब कैसे मिल गई?

☞ **शराबबंदी के बावजूद आसानी से मिल रही शराब :-** बिहार में 2016 से शराबबंदी लागू है, लेकिन इसके बावजूद जहरीली शराब का धंधा लगातार फल-फूल रहा है। शराब माफियाओं का नेटवर्क इतना मजबूत हो गया है कि वे कानून की पकड़ से बाहर रहकर भी अपना कारोबार चला रहे हैं। इस मामले ने प्रशासन की सख्ती पर सवालिया निशान खड़ा कर दिया है, क्योंकि जहरीली शराब का सेवन करके लोगों की मौत हो रही है और नशे में धुत लोग सड़क पर

गिरते-पड़ते मिल रहे हैं। मामले की गंभीरता को देखते हुए पुलिस प्रशासन ने कई थाना अध्यक्षों का तबादला किया है। शराब माफियाओं के खिलाफ कई जगह छापामारी भी की जा रही है। पुलिस का दावा है कि दोषियों पर कड़ी कार्रवाई की जा रही है, लेकिन जमीनी हकीकत कुछ और ही कहानी बयां कर रही है। अब यह देखना होगा कि क्या प्रशासन इन मौतों के सिलसिले पर लगाम कस पाएगा या फिर शराब माफियाओं का जाल यूं ही फैलता रहेगा। जहरीली शराब से मरने वाले परिवार न्याय की उम्मीद में बैठे हैं, लेकिन अब तक कोई ठोस कार्रवाई होती नहीं दिख रही। लोगों का प्रशासन से भरोसा उठता जा रहा है, क्योंकि मौतों का सिलसिला थमने का नाम नहीं ले रहा। प्रशासन की हर कोशिश के बावजूद शराब माफियाओं का तंत्र इतना मजबूत है कि वे कानून को धता बताकर खुलेआम शराब बेच रहे हैं। अब यह देखना होगा कि इस मामले में प्रशासन क्या ठोस कदम उठाता है, या फिर यह सिलसिला यूं ही जारी रहेगा। मशरख थाने के प्रभारी और भगवानपुर चौकी पर तैनात एक अन्य पुलिस अधिकारी को उनके क्षेत्राधिकार में संदिग्ध जहरीली शराब पीने से हुई मौतों के मामले में कर्तव्य में लापरवाही के लिए निलंबित कर दिया गया है।

☞ **यूपी से कूरियर के जरिए आई थी मौत :-** पुलिस जांच में यह साफ हो गया है कि उत्तर प्रदेश से लाए गए जानलेवा केमिकल से यह शराब कांड हुआ था। पुलिस के अनुसार इसमें कूरियर कंपनी की भूमिका भी सामने आई है, उसके खिलाफ भी जांच की जा रही है। डीआईजी ने बताया कि इस मामले में स्पीडी ट्रायल कराया जाएगा। डीआईजी ने कहा, 'पुलिस ने हाल शराब पीने से हुई मौतों के सिलसिले में 21 आरोपियों (सीवान में 13 और सारण में आठ) को गिरफ्तार किया है। उनमें से सात महिलाएं हैं, जो दोनों जिलों में अवैध शराब के निर्माण और

आपूर्ति श्रृंखला का हिस्सा थीं। हमने इन जिलों में अवैध शराब की आपूर्ति और निर्माण से जुड़े कई लाख रुपये के लेन-देन का भी पता लगाया है और इस संबंध में महत्वपूर्ण डिजिटल साक्ष्य एकत्र किए हैं।'

☞ **इन हत्याओं का दोषी कौन तेजस्वी :-** जहरीली शराब से मौत के तांडव पर बिहार की सियासत गरमा गई है. विपक्षी पार्टी राजद ने सीएम नीतीश कुमार पर निशाना साधा है। पूर्व डिप्टी सीएम तेजस्वी यादव ने कहा, सरकार के संरक्षण में जहरीली शराब की वजह से 27 लोगों की हत्या कर दी गयी है। दर्जनों की आंखों की रौशनी चली गई। बिहार में कथित शराबबंदी है, लेकिन सत्ताधारी नेताओं, पुलिस और माफिया के गठजोड़ की वजह से हर चौक-चौराहों पर शराब आसानी से उपलब्ध है। तेजस्वी यादव ने कहा, कि 'सीएम ने अब तक कोई संवेदना व्यक्त नहीं की है. बिहार में शराबबंदी फेल है। किसी अधिकारी पर कार्रवाई नहीं हुई। गरीब मारे जा रहे हैं। शराब के सप्लाई करने वालों को छुआ नही जा रहा है। सरकार अफसोस नहीं कर रही। क्या थाना पुलिस को पता नहीं जहरीली शराब से मौत दुखद है। कम से कम संवेदना तो प्रकट कर सकते हैं।

वो भी नही कर

रहे हैं. शराबबंदी फेल है तो कौन जिम्मेदार है? सीएम के समीक्षा बैठक में डीजीपी और मुख्य सचिव नहीं रहते हैं, सीएम के खिलाफ साजिश चल रहा है। मैं उनकी इज्जत करता हूं। उनके हाथ मे बिहार सुरक्षित नहीं है। डबल इंजन की सरकार फेल है। दो-दो डिप्टी सीएम होने के बाद दस महीने में कोई उपलब्धि नहीं है। सभी विभाग काम करने में फेल है। सरकार को सिर्फ अपनी चिंता है न तो बिहार की न बिहार के लोगों की। आरजेडी चाहती है बिहार नशामुक्त रहे।' प्रदेश में पूर्ण शराबबंदी को लेकर सियासी घमासान मचा हुआ है। सत्ता पक्ष और विपक्ष के नेता इसे लेकर एक दूसरे पर हमलावर हैं। दोनों एक दूसरे पर आरोप-प्रत्यारोप लगा रहे हैं।

☞ **70 फीसदी टैक्स लगाने की जरूरत पप्पू यादव :-** पूर्णिया से निर्दलीय सांसद पप्पू यादव ने शनिवार को सत्ता पक्ष और विपक्ष दोनों के नेताओं पर निशाना साधा और बिहार में जहरीली शराब पर लगाम कैसे लगाया जाए इसके तरीके भी उन्होंने बताए। लोकसभा सदस्य पप्पू यादव ने एक इंटरव्यू के दौरान कहा कि अगर बिहार सरकार का शराबबंदी कानून फेल हो रहा है, तो इसकी जिम्मेदारी हमारी नहीं है। मेरा सवाल सिर्फ बिहार में जहरीली शराब पीकर मर रहे गरीब लोगों से जुड़ा हुआ है। सरकार इसे रोकने के लिए अलग से कोई प्रोविजन क्यों नहीं लाती? जहरीली शराब पीने से लोग पहले भी मरते थे और आज भी मर रहे हैं। पूरे भारत में जहरीली शराब पीकर लोग मर रहे हैं। जब बिहार में शराबबंदी नहीं थी, तब भी लोग जहरीली शराब पीकर मर रहे थे। बॉर्डर बंद करने से जहरीली शराब की बिक्री नहीं रुकने वाली है। क्योंकि जहरीली शराब बनाने वाले लोग बिहार के ही हैं। इसे बनाने वाले और बेचने वाले दोनों ही प्रदेश के ही हैं। जिस इलाके से जहरीली शराब के मामले आ रहे हैं, उस इलाके के पूरे थाने को बर्खास्त किया जाए और डीएसपी,

एसपी के खिलाफ जांच कराई जाए. जब तक इन लोगों पर जांच चलेगी, तब तक इन्हें पदोन्नति नहीं दिया जाए। वहां के वार्ड मेंबर, मुखिया और पंचायत सदस्य की सदस्यता खत्म की जाए। इस पर कब कोई कानून लाया जाएगा? पूर्णिया सांसद ने अपोजिशन पर निशाना साधते हुए कहा कि जब साल 2022 में बिहार में उनकी सरकार थी, तब भी छपरा और सीवान जिले में जहरीली शराब पीने से लोगों की मौतें हुई थीं। उस वक्त भी मैंने पीड़ित परिवारों को मुआवजा देने का काम किया था। आज फिर से सीवान से ही मामले सामने आ रहे हैं। जब राज्य में कोई परेशानी और आपदा आती है, तो मौजूदा सरकार के नेता और विपक्ष के लोग भाग खड़े होते हैं। हाल ही में पूरे बिहार में जहरीली शराब पीने से 113 लोगों की जान चली गई. जिले के क्ड और एसपी ने सामने बैठकर सभी डेड बॉडी को जलवा दिया। उसके बाद भी ये लोग कहते हैं, जो पीएगा, वह मरेगा ही। उन्होंने कहा कि कौन नेता शराब सेवन नहीं करता। भारत के सभी नेता विदेश जाकर शराब पीते हैं। इस बारे में कौन जानता है? जितने भी लीडर शराब नहीं पीते हैं, उनका टेस्ट होना चाहिए। ये लोग सिर्फ गरीब जनता को गाली देते हैं और कहते हैं कि अगर वो पीएगा तो मरेगा ही। ऐसे बयान देने वाले ये नेता क्यों नहीं मरते?

बिहार में सिर्फ शराब बैन करने से इस तरह की घटनाएं नहीं रुकेगी, नीति बदलने की जरूरत है. और इसकी शुरुआत शराब पर 70 फीसदी टैक्स लगाने से करें, ताकि आम लोग शराब से दूर रहें। सिर्फ आरोप-प्रत्यारोप से कोई बदलाव नहीं होने वाला है. मुख्यमंत्री नीतीश कुमार की अगुआई में बिहार में आठ साल पहले शराब पर पूर्ण रूप प्रतिबंध लगा दिया था। बावजूद इसके बिहार के हर गांव-गांव में शराब की धड़ल्ले से बिक्री हो रही है। बिहार में शराब बंदी से हर महीने प्रदेश के किसी न किसी शहर या जिले में जहरीली शराब कहर बरपाती है। स्थानीय प्रशासन फिर भी तमाशबीन बनी रहती है।

☞ **अब तक क्या हुई कार्रवाई?** :- इस मामले में अगर कार्रवाई की बात करें तो, इलाके के तीन चौकीदारों को निलंबित किया गया है और 5 पुलिस अफसरों को कारण बताओ नोटिस जारी किया गया है. वहीं, प्रदेश के मुखिया नीतीश कुमार ने इस मामले में संबंधित अधिकारियों को इसमें संलिप्त लोगों के खिलाफ सख्त कार्रवाई करने का निर्देश दिया है.

☞ **जहरीली शराबकांड का किंगपिन गिरफ्तार** :- छपरा के मसरख, सिवान के भगवानपुर थाना क्षेत्र और गोपालगंज में जहरीली शराब पीने से 37 लोगों की मौत के जिम्मेवार अवैध शराब कारोबारी मंटू सिंह समेत कई आरोपी गिरफ्तार कर लिए गए हैं। सारण रेंज के डीआईजी नीलेश कुमार ने आज इस मामले का खुलासा करते हुए बताया कि डबल एसआईटी की टीम ने इस मामले में कई महत्वपूर्ण सुराग हासिल किए हैं। मुख्य आरोपी मंटू सिंह और आप्राथमिकी आरोपी दीपक चौधरी को स्पेशल टीम ने दबोच लिया है।●

लखनऊ में नसरल्लाह की मौत पर प्रदर्शन तो विरोध में सवाल भी उठे

● संजय सक्सेना (वरिष्ठ पत्रकार, लखनऊ)

देश के कई राज्यों की तरह लखनऊ मे भी लेबनान में मारे गये आतंकी हसन नसरल्लाह की मौत के बाद शिया समुदाय में आक्रोश है। विरोध में इन्होंने पुराने लखनऊ में राजाजीपुरम में तालकटोरा स्थित कब्रिस्तान और छोटे से लेकर बड़े इमामबाड़े तक प्रदर्शन किया। प्रदर्शन में बड़ी संख्या में महिलाएं भी शामिल। यह लोग नसरल्लाह को शहीद बता रहे हैं। छोटे इमामबाड़ा से लेकर बड़ा इमामबाड़ा तक हजारों की संख्या में शिया मुसलमानों ने विरोध मार्च निकाला। हाथों में हसन नसरल्लाह की तस्वीर लेकर जिंदाबाद के नारे लगाए। इसी के साथ शिया मुसलमानों ने इजरायल के प्रधानमंत्री का पोस्टर जलाकर विरोध जताया। प्रदर्शन कर रहे लोगों ने हिजबुल्लाह के महासचिव सैयद हसन नसरल्लाह की मौत पर अफसोस जताया और इस पूरी घटना का जिम्मेदार इजराइल को बताया गया। प्रदर्शन में शामिल जैदी ने कहा, कि नसरल्लाह की मौत का दिन हमारे लिए ब्लैक डे है। हम सभी लोग नसरल्लाह को श्रद्धांजलि देने और इसराइल के विरोध में प्रदर्शन कर रहे हैं। छोटा इमामबाड़ा से लेकर बड़ा इमाम वाले तक लगभग एक किलोमीटर लम्बा प्रदर्शन हुआ। प्रदर्शनकारियों ने कहा नसरल्लाह हमारे बहुत मजबूत लीडर और शिया कौम के मार्गदर्शक थे। नसरल्लाह ने शिया समाज और मानवता के लिए कई बड़े काम किए हैं, जिनको भुलाया नहीं जा सकता। उन्होंने आईएसआईएस के हमलों के दौरान इमाम अली की बेटी हजरत जैनब के दरगाह की सुरक्षा की थी। हमेशा फिलिस्तीन के पीड़ितों का साथ दिया। इस पूरी घटना का जिम्मेदार इस्राइल है, वो बेगुनाहों का लहू बहा रहा है। प्रदर्शन में शामिल हुसैनी टाइगर के सदस्य जरी ने बताया कि हसन नसरल्लाह की मौत का शिया समुदाय तीन दिनों तक शोक मनाएगा। आज हम लोग सड़कों पर उतर कर इस्राइल का विरोध कर रहे हैं. इजराइल का प्रधानमंत्री पीड़ितों की मदद करने वालों पर हमला कर रहा है। हम दुनिया के 56 मुस्लिम मुल्कों से यह गुहार लगाते हैं, कि एक साथ आए और अन्याय के खिलाफ आवाज उठाएं। तीन दिन तक गम शोक मनाएंगे अपने घरों की छतों पर काला झंडा लगा कर श्रद्धांजलि देंगे। हमारी मांग है, कि इजराइल फिलिस्तीन और लेबनान के लोगों पर अपनी आक्रामकता को तत्काल रोके। मौलाना यासूब अब्बास ने हसन

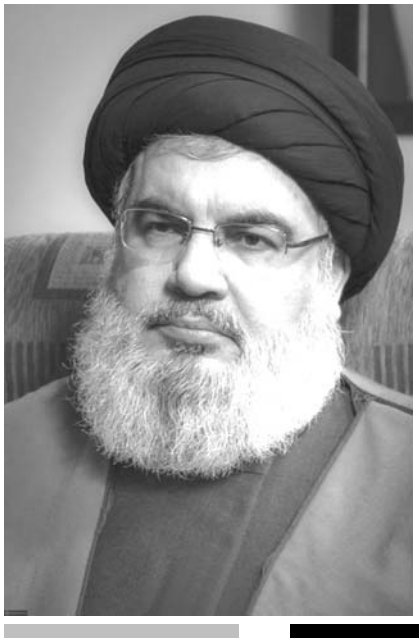

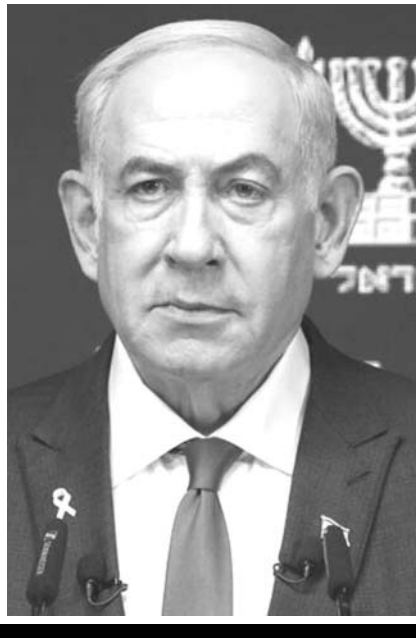

नसरल्लाह को एक मजबूत शिया-मुस्लिम नेता बताया। जिन्होंने हमेशा फिलिस्तीन के उत्पीड़ित लोगों का इजरायली बलों के खिलाफ समर्थन किया। उन्होंने नसरल्लाह की मौत पर गहरा दुख व्यक्त करते हुए इसे मुस्लिम दुनिया के लिए एक बड़ी क्षति बताया। उनकी हत्या के लिए इजरायली बलों को जिम्मेदार ठहराया। शिया समुदाय तीन दिन का शोक मनाने और अपने घरों की छतों पर काला झंडा लगाकर विरोध कर रहा है। इसके अलावा शिया समुदाय तीन दिन तक दुकानें बंद रखेंगे। मौलाना ने संयुक्त राष्ट्र से इजरायल पर दबाव डालने का आग्रह किया, ताकि वह फिलिस्तीन और लेबनान के लोगों पर अपनी आक्रामकता को रोक सके।

खैर, यह एक पक्ष हैं। नसरल्लाह को लेकर भले ही हिन्दुस्तान के शिया मुसलमान नाराज हों, लेकिन अरब ने नसरल्ला की मौत पर कोई प्रतिक्रिया नहीं दी है। बात दें हिजबुल्लाह समेत कई चरमपंथी गुटों का गढ़ लेबनान कुछ दशक पहले ईसाई देश हुआ करता था। ये ज्यादा पुरानी नहीं 20वीं सदी की बात है।

यहां तक कि वहां की संसद में भी लगभग 60 फीसदी जगह क्रिश्चियन लीडरों के लिए सुरक्षित थी। फिर यहां कुछ ऐसे मुस्लिम कट्टरपंथियों ने ऐसे पैर पसारे कि मुस्लिम आबादी बहुमत में आ गई। यहां तक कि अब लेबनान एक इस्लामिक मुल्क बना। इसमें हिजबुल्लाह के आतंकियों की बढ़ी भूमिका थी, जिसके चलते लेबनान पूरी तरह से तबाह हो गया। आज से कुछ ही दशक पहले लेबनान की राजधानी बेरूत की तुलना पेरिस से होती थी। यहां की संसद भी क्रिश्चियन मेजोरिटी थी। लेकिन धीरे से यहां का धार्मिक समीकरण बदला इसमें बड़ा हाथ गाजा का भी रहा। आज यहां करीब 70 फीसदी आबादी मुस्लिम है। बता दें पचास के दशक में लेबनान में 70 फीसदी क्रिश्चियन थे, जबकि बाकी 30 प्रतिशत में मुस्लिम और अन्य धर्मों को मानने वाले थे। साल 1932 में यहां आखिरी जनगणना हुई थी। इसके बाद से देश में सेंसस ही नहीं हुआ। साल 1970 तक भी पूरे मिडिल ईस्ट में लेबनान अकेला देश था जो नॉन मुस्लिम था। वहीं इजरायल यहूदी बहुल्य। तब लेबनान में मुख्य पदों पर लगभग 60 फीसदी लोग ईसाई धर्म के हुआ करते। इसे लेकर मुस्लिम आबादी में असंतोष बढ़ने लगा। वे बराबर की हिस्सेदारी चाहते थे। इस बीच कई बातें हुई जैसे मुस्लिम बहुल आबादी के बीच रहने वाले ईसाइयों ने धर्म परिवर्तन कर लिया। इसाइयों के खिलाफ जहर उगलने और उनके खिलाफ कट्टता बढ़ाने में नसरउल्लाह का बड़ा योगदान था, इसी के चलते नसरउल्लाह को कई देशों ने आतंकवादी घोषित कर रखा था। इसी लिये सवाल उठाया जा रहा है कि नसरउल्लाह जिंदाबाद कैसे हो सकता है। उसने ऐसा कुछ नहीं किया था जिसे मानवता के हिसाब से सही कहा सके।●

हिन्दुओं के त्योहार पर ही क्यों फैलती है अराजकता और हिंसा

● संजय सक्सेना (वरिष्ठ पत्रकार, लखनऊ)

यह हिन्दुस्तान का दुर्भाग्य है कि यहां की बहुसंख्यक आबादी को अपने तीज-त्योहार मनाने में परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है। हिन्दुओं के द्वारा कोई भी धार्मिक आयोजन किया जाता है उस पर मुस्लिम कट्टरपंथियों का साया पड़ जाता है। हिन्दू जब भी कावड़ यात्रा निकाले,माता का जागरण कराये, मूर्ति विसर्जन को जाये या इसी तरह के अन्य कोई आयोजन करे तो मुस्लिम कट्टरपंथी कहीं उस पर पथराव करने लगते हैं तो कहीं रास्ता रोक कर खड़े हो जाते हैं। उनके इस कृत्य का विरोध होता है तो यह लोग तलवारें भांजने लगते हैं। आगजनी और पेट्रोल बम तो आम बात हो गई है,लेकिन

बहराइच में रामगोपाल मिश्र की हत्या

रामगोपाल मिश्र

पेट्रोल बम फोड़ने वाले तब जरूर आहत हो जाते हैं जब उन्हें कहीं पटाखों की आवाज सुनाई पड़ जाती है। हालात यह है कि हिन्दुओं के छोटे से छोटे धार्मिक आयोजन भी बिना पुलिस की सुरक्षा के घेरे के पूर्ण नहीं हो पाते हैं। हिन्दुओं के देवी-देवताओं को कभी कला के तो कभी अभिव्यक्ति की आजादी के नाम पर अपमानित किया जाता है। न जाने क्यों पांच टाइम लाउडस्पीकर पर चीखने चिल्लाने वालों को हिन्दुओं के धार्मिक आयोजनों में बजने वाला डीजे बेचैन क्यों कर देता है। इसी तरह से होली के रंग-गुलाल भी एक वर्ग विशेष के चंद कट्टरपंथियों के चलते साम्प्रदायिक हो जाता है। ऐसा नहीं है कि यह कट्टरपंथी तभी भड़कते हों जब हिन्दुओं के द्वारा अपना कोई धार्मिक जुलूस आदि सड़क पर निकाला जाता हो, हद तो तब हो जाती है जब हिन्दुओं के लिये अपने घरों में पूजा करना भी लड़ाई-झगड़े की वजह बन जाता है। गरबा या दुर्गा पूजा के पंडालो तक में यह मुस्लिम चरमपंथी पहुंच कर माहौल खराब करने से नहीं हिचकते हैं। इतना हीं कई बार तो इन अराजक तत्वों को वोट बैंक की राजनीतिक करने वाले नेताओं और पार्टियों का राजनैतिक संरक्षण भी मिल जाता है। यदि ऐसा न होता तो बहराइच में बेरहमी से मारे गये रामगोपाल मिश्र की हत्या पर सपा प्रमुख अखिलेश यादव एक्स पर वह कथित वीडियो नहीं पोस्ट करते जिसमें रामगोपाल मिश्रा एक मुस्लिम परिवार के घर से हरा झंडा उतार कर भगवा झंडा लगाते हुए दिखाई दे रहा है। अखिलेश इस वीडियों के सहारे रामगोपाल मिश्रा को ही कटघरे

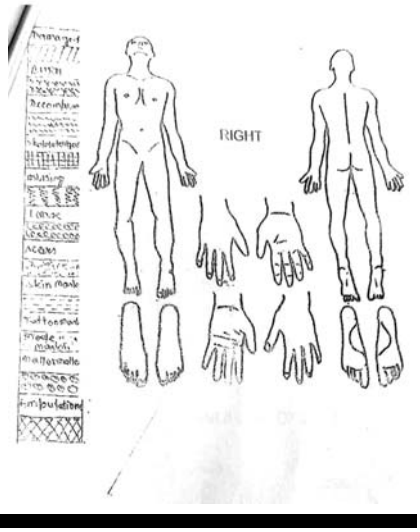

भगवा लहराता रामगोपाल मिश्र

रामगोपाल मिश्र की हत्या के दोनो अभियुक्त

में खड़ा कर रहे हैं, जबकि इसका कानूनी पहलू यह है कि यदि रामगोपाल मिश्रा ने हरा झंडा उतार कर वहां भगवा झंडा फहरा भी दिया था तो हत्यारों को उसका कत्ल करने की छूट नहीं मिल जाती है। रामगोपाल मिश्र को मारा ही नहीं गया, उसके साथ हत्यारों ने वहशीपन दिखाते हुए रामगोपाल के नाखून तक बेरहमी के साथ नोंच लिये थे।

ज्यादा पीछे न भी जाया जाये तो हाल फिलहाल में ही इस्लामी कट्टरपंथियों ने देश के अलग-अलग हिस्सों में दुर्गा पूजा और हिन्दुओं को निशाना बनाया है। मुस्लिम कट्टरपंथियों ने कहीं पंडाल पर पथराव किया गया तो कहीं मूर्ति विसर्जन के जुलूस पर हमला हुआ, जुलूस के रास्तों को लेकर भी विवाद हुआ। उत्तर प्रदेश से लेकर पश्चिम बंगाल और असम तक पथराव और हिंसा हुई है। यह हिंसा हिन्दुओं के त्योहार नवरात्र के साथ ही चालू हो गई थी। हावड़ा के श्यामगंज में 13 अक्टूबर, 2024 को एक मुस्लिम भीड़ ने हिन्दू पंडालों पर हमला किया। मुस्लिम भीड़ ने दुर्गा पूजा पंडालों को नष्ट करना चालू कर दिया। उन्होंने मूर्तियों को आग लगा दी और कई पंडालों को तबाह किया। यह मुस्लिम भीड़ उस घाट पर भी पहुँची जहाँ देवी मूर्तियों का

अखिलेश यादव

विसर्जन होना था। यहाँ इस भीड़ ने पथराव किया।

बात विशेषकर उत्तर प्रदेश की कि जाये तो यहां के कौशांबी जिले में माँ दुर्गा के विसर्जन जुलूस पर हमला हुआ। इस हमले में जुलूस में शामिल महिला श्रद्धालुओं को भी निशाना बनाया गया। हमले के दौरान तलवारें लहराई गईं और पत्थरबाजी हुई। घटना में कई श्रद्धालुओं को चोटें आई। 12 अक्टूबर, 2024 को हुए इस हमले का आरोप मुस्लिम समुदाय के लगभग एक दर्जन लोगों पर लगा है जिसमें खातूनें भी शामिल हैं। माँ दुर्गा की प्रतिमा को भी क्षतिग्रस्त कर दिया गया और एक महिला से दुष्कर्म की भी कोशिश हुई। पुलिस ने केस दर्ज करके जांच शुरू कर दी है। इसी तरह से बलरामपुर में दुर्गा पूजा के दौरान इस्लामिक कट्टरपंथियों ने पंडाल में घुसकर महिलाओं के साथ दुर्व्यवहार किया। आरोपितों में कलीम, अरबाज, इमरान और मुख्तार शामिल थे, जिन्होंने महिला श्रद्धालुओं से अभद्रता की और पंडाल में लगे भगवा ध्वज को नोचकर नाली में फेंक दिया। महिलाओं ने पुलिस में शिकायत दर्ज कराई, जिसके बाद आरोपितों को गिरफ्तार कर लिया गया।

जिला गोंडा के मसकनवा बाजार इलाके में 9 अक्टूबर, 2024 को दुर्गा पूजा पंडाल में मूर्ति स्थापित करने के बाद देवी की आँखों पर से पट्टी हटाई गई थी। इस मूर्ति की स्थापना बीते कई सालों से की जाती है। इस मौके पर यहाँ बड़ी संख्या में हिन्दू इकट्ठा थे। पूजा अर्चना के बाद कुछ हिन्दू बच्चे इस पंडाल के बाहर पटाखे फोड़ने लगे। पटाखों की आवाज सुन कर पास में रहने वाले मुस्लिम भड़क गए। मुस्लिम परिवार के लोग बाहर निकल कर हिन्दुओं को गालियाँ देने लगे और हमलावर हो गए। उन्होंने पहले हिन्दुओं पर पथराव किया और फिर लाठी डंडों से हमला कर दिया। उधर, कुशीनगर में एक और गंभीर घटना सामने आई, जब दुर्गा पूजा के दौरान मुस्लिम कट्टरपंथियों ने मूर्ति पर पथराव किया। इस घटना में 10 से अधिक लोग घायल हो गए। पुलिस ने स्थिति को काबू में करने के लिए आरोपितों को गिरफ्तार किया और इलाके में सुरक्षा बढ़ा दी। हिंदू समुदाय ने प्रशासन से आरोपियों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई की माँग की। अब बहराइच की हिंसा इसका नया उदाहरण है जहां मूर्ति विसर्जन के लिये जा रहे एक व्यक्ति को बेरहमी से मौत के घाट उतार दिया गया। यह

रामगोपाल मिश्र के माता-पिता

जानकारी उन्हीं घटनाओं की है, जो मीडिया में सामने आई हैं या जिनकी जानकारी सोशल मीडिया पर वायरल हुई। बढ़ते इस्लामी कट्टरपंथ को देखते हुए कहा जा सकता है कि कई घटनाएँ संभवत: बाकी शोर शराबे में दब गई होंगी।

कुल मिलाकर कट्टरपंथियों की जेहादी सोच के कारण पिछले कुछ वर्षों से शोभा यात्राओं या फिर प्रतिमा विसर्जन यात्राओं का शांतिपूर्ण माहौल में निकलना कठिन होता जा रहा है। इन धार्मिक यात्राओं पर पत्थरबाजी कई बार दंगों का रूप धारण कर लेती है, जैसा कि बहराइच में हुआ। यहां दुर्गा पूजा विसर्जन यात्रा पर घरों की छतों से पथराव हुआ। एक सतानती की हत्या कर दी गई और उसके बाद क्षेत्र में हिंसा भड़क उठी। प्रश्न यह है कि जब यह सब हो रहा था, तब पुलिस कहां थी? पुलिस की अकर्मण्यता की वजह से ही दूसरे दिन युवक के अंतिम संस्कार को पहले फिर हिंसा भड़क उठी और उग्र लोगों ने कई घरों में तोड़फोड़ की और दुकानें जला दीं। यह ठीक है कि वरिष्ठ अधिकारियों के पहुंचने के बाद हिंसा पर काबू पर लिया गया, लेकिन अहम प्रश्न यह है कि क्या सद्भाव के माहौल की वापसी हो सकेगी और उन तत्वों को सबक सिखाने वाली ठोस कार्रवाई हो सकेगी, जिनके कारण हिंसा का सिलसिला कायम

हुआ? सबसे दुखद यह है कि इस तरह की किसी भी घटना के बाद कुछ लोग सवाल खड़े करने लगते हैं कि अमुक क्षेत्र से यात्रा निकाली ही क्यो गई। किसी भी क्षेत्र को हिंदू- मुस्लिम क्षेत्र के रूप में परिभाषित करना क्या उचित है। दरअसल, हिंदू मुस्लिम क्षेत्र की बातें ही विभाजनकारी और शरारत भरा एजेंडा हैं। ऐसे एजेंडे आम तौर पर वोट बैंक की राजनीति के तहत चलाए जाते हैं। इस एजेंडे की काट के साथ यह सुनिश्चित किया जाना चाहिए किसी भी समुदाय के धार्मिक आयोजन हिंसक तत्वों को शिकार न बनने पाएं । राज्य सरकार को धार्मिक आयोजनों को निशाना बनाने वाले तत्वों के खिलाफ कड़े कदम उठाकर उदाहरण प्रस्तुत करना चाहिए ताकि फिर बहराइच, कौशांबी और गोंडा जैसी घटनाएं न हों। ऐसी घटनाओं से माहौल तो खराब होता ही है सरकारी सम्पति को भी काफी नुकसान पहुंचता है।

बहरहाल, बहराइच में दुर्गा प्रतिमा विसर्जन के दौरान रामगोपाल मिश्र की नृशंस हत्या पर विश्व हिंदू परिषद ने आक्रोश व्यक्त किया है। परिषद ने कहा कि पूरे देश में यह ट्रेंड चल पड़ है। कभी शोभायात्रा पर कभी, गरबा पंडाल में, कभी गणेश पूजन पर हमला हो रहा है। हर त्योहार तनाव से गुजर रहा है, जिसे हिंदू समाज स्वीकार नहीं करेगा।●

रामगोपाल मिश्र के माता-पिता, पत्नी एवं अन्य मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ से न्याय की फरियाद करते

13 नवम्बर को होंगे बिहार में विधानसभा के उपचुनाव

अच्छे पार्टी को वोट दें या अच्छे उम्मीदवार को? तात्कालिक लाभ के लिए सिद्धांतों का बलिदान न करें

● **त्रिलोकी नाथ प्रसाद**

भाजपा मीडिया प्रभारी डॉक्टर लक्ष्मी नारायण सिंह पटेल ने कहा है कि चुनाव मैदान में खड़े अनेक प्रत्याशियों में से आपको एक को चुनना है। यह एक ऐसा कार्य है जिसके द्वारा आप विभिन्न प्रतिस्पर्धियों को संतुष्ट नहीं कर सकते। अंतिम निर्णय की समस्याओं के सतर्क और सही मूल्यांकन पर निर्भर रहता है। प्रत्याशी ,दल और उसका सिद्धांत इन सभी पर विचार करना पड़ता है। कोई बुरा प्रत्याशी केवल इसलिए आपका मत पाने का दावा नहीं कर सकता कि वह किसी अच्छे दल की ओर से खड़ा है। बुरा बुरा ही है। वह किसे का हित नहीं कर सकता। पार्टी ने के हाई कमान ने ऐसे व्यक्ति को टिकट देते समय पक्ष पात किया होगा,या नेक नीयती बरतते हुए भी यह निर्णय में भूल कर गया होगा। अत: ऐसी गलती को सुधारना उत्तरदाई मतदाता का कर्तव्य है। यदि कार्यकर्ता में निष्ठा और अनुशासन की भावना रहेगी तो दल के अंदर कोई गुट या मतभेद नहीं होगा। जब दल का हित स्वहित के आगे दब जाता है तो गुटबाजी प्रारंभ हो जाती है यही अहंकारी एवं वृक्रित चिंतन की सामाजिक अभिव्यक्ति है। पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने कहा था कि हम किसे वोट दें अच्छे पार्टी या अच्छे उम्मीदवार को। पार्टी भले ही कितना भी अच्छा हो परंतु उम्मीदवार अच्छा नहीं है , दूसरे दल भले ही खराब हो परंतु उम्मीदवार अच्छे हो वैसे स्थिति में अच्छे उम्मीदवार को ही वोट दें। अच्छे उम्मीदवार को वोट देने से ऊपर में लोगों को निर्णय करने में लगेगा की जनता

को अच्छे उम्मीदवार की खोज है ऐसे स्थित में अगले चुनाव में अच्छे उम्मीदवार को ही भेजेंगे। भाजपा मीडिया प्रभारी डॉक्टर लक्ष्मी नारायण सिंह पटेल ने कहा कि बिहार में भाजपा का खोल पहने बड़े-बड़े पद पर बहुत मिल जाएंगे परंतु जनहित में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा चलाई जा रही योजनाओं से कोई मतलब नहीं है यदि उनकी योजना घर-घर पर पहुंचा दी जाती है तो बिहार में भाजपा से किसी का मुकाबला नहीं रहता। बिहार के भाजपा जनता के बीच मुंह दिखलाने लायक नहीं रहा। मोदी जी द्वारा चलाई जाने योजनाओं के सूची भी इन नेताओं ने न किसी कार्यकर्ताओं को दिया और नहीं आम नागरिक को। बड़े-बड़े पद पर बैठे नेताओं ने तीन ही काम सीखा है कार्यकर्ताओं से नारा लगवाना, माला पहनना और फोटो खिंचवाना। इन योजनाओं के बारे में भाजपाई नेताओं से पूछे की किसके कब्र में दफन हो गया। प्रधानमंत्री मुद्रा योजना, प्रधानमंत्री जीवन ज्योति बीमा योजना ,प्रधानमंत्री सुरक्षा बीमा योजना, अटल पेंशन योजना, सांसद आदर्श ग्राम योजना, प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना, प्रधानमंत्री ग्राम सिंचाई योजना, प्रधानमंत्री गरीब कल्याण योजनाएं, प्रधानमंत्री जन औषधि योजना ,प्रधानमंत्री कौशल योजना दीनदयाल उपाध्याय, ग्रामीण ज्योति योजना ,दीनदयाल उपाध्याय कौशल्या योजना, पंडित दीनदयाल उपाध्याय श्रम एवं ज्योति योजना ,ध्यान लक्ष्मी योजना ,प्रधानमंत्री सुरक्षित सड़क योजना ,प्रधानमंत्री ग्राम परिवहन योजना, राष्ट्रीय स्वास्थ्य सुरक्षा अभियान, प्रधानमंत्री युवा योजना, प्रधानमंत्री रोजगार योजना, प्रधानमंत्री योजना, गर्भवती महिलाओं के लिए आर्थिक सहायता देना ,वरिष्ठ नागरिकों के लिए योजना, प्रधानमंत्री ग्रामीण डिजिटल योजना ,व्यापारियों के लिए भी आधार योजना ,डिजिटल मेल विश्वकर्म योजना , किसान विकास पत्र राष्ट्रीय स्वास्थ्य सुरक्षा अभियान, बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ योजना, नेशनल स्वच्छता मिशन ,स्मार्ट सिटी मिशन प्रकाश पाठ उज्ज्वला ,डिस्काउंट विकल्प स्कीम ,राष्ट्रीय गोकुल मिशन, प्रधानमंत्री खनिज क्षेत्र कल्याण योजना ग्रामीण प्रोजेक्ट, धनलक्ष्मी योजना ,गंगाजल डिलीवरी स्कीम, विद्यांजलि योजना, ग्राम उदय से भारत उदय, अभियान सामाजिक अधिकारिता, शिविर रेलवे यात्री बीमा योजना बिना लक्ष्मी लोन, स्कीम ऊर्जा गंगा सौर ऊर्जा योजना एक भारत श्रेष्ठ भारत, शहरी हरित परिवहन योजना, वरिष्ठ नागरिकों के लिए फिल्म, फिक्स योजना प्रधानमंत्री ग्रामीण डिजिटल साक्षरता अभियान, जनधन खाता धारकों के लिए बीमा योजना महिलाओं के लिए स्टोर अप इंडिया योजना, मच्छुआरों के लिए मुद्रा लोन योजना, भारत के वीर पोर्टल, शत्रु संपत्ति कानून डिजिटल राष्ट्रीय जनजातीय आदि।●

जिस पुलिस पर गंभीर आरोप, वही लिखेगा डायरी

● डॉ० लक्ष्मीनारायण सिंह

पटना जिला के दनियावां थाना कांड संख्या 152/2024 में गाड़ी मालिक के चालक चंदन कुमार ने गाड़ी कहीं बेंच दिया तथा गाड़ी मालिक आकाश कुमार को जानकारी दिया की गाड़ी दनियावां में खड़ी कर खाना खाने गया तथा खाकर आए तो देखा की गाड़ी नहीं है, खोज बीन किया तो पता नहीं चला,गाड़ी चोरी हो गया। ड्राइवर के बताए अनुसार गाड़ी मालिक आकाश कुमार थाना में चोरी का मुकदमा दर्ज कराया। सूत्रों से जानकारी के आधार पर पुलिस को जानकारी मिला कि गाड़ी चोरी नहीं हुई है बल्कि ड्राइवर द्वारा बेंच दी गई है। प्राप्त जानकारी के अनुसार पुलिस ने ड्राइवर को बुलाकर सच्चाई जानना चाहा। ड्राइवर चंदन कुमार ने पुलिस को सारी बात बता दी तथा गाड़ी भी बरामद करवा दिया। पुलिस ने मामला को पेंचीला देखकर मामला को ही बदल दिया, जिसमें मेरा नाम चमक जाएगा या प्रमोशन भी हो सकता है , शायद यही सोंच कर गाड़ी का मामला लूट में बदल दिया तथा घटना बनाया कि गाड़ी को रास्ते में ड्राइवर को मारपीट कर, मुंह, आंख बांधकर गड्ढे में फेंक दिया। इसी नाम पर 11 लोगों को जेल भेज दिया तथा कुछ अज्ञात भी रखा। बताया जाता है कि इस घटना से दूर-दूर तक इन लोगों का कोई संबंध नहीं था यह तो पुलिस द्वारा रची गई चक्रव्यूह था। यहां पर अंधेर नगरी चौपट राजा,टके सेर खाजा टके सेर भाजी वाला कहावत चरितार्थ हो रही है। ऐसे पुलिसकर्मियों को समाचार लिखने के समय तक बदली तक नहीं की गई है। कानून के अनुसार पुलिस द्वारा डायरी मांग की जाती है। जो पुलिस ने इस घटना का चक्रव्यूह रचा, उसके द्वारा लिखा गया डायरी पर भरोसा नहीं कि जा सकती है।●

शराब चालू की घोषणा से किसे फायदा किसे नुकसान?

● डॉ० लक्ष्मीनारायण सिंह

बिहार की राजनीति में एक और पार्टी का उदय हुआ है। चुनावी रणनीति और चक्रव्यूह रचने वाले प्रशांत किशोर ने अपनी पार्टी बनाकर मैदान में उतरे हैं। जन स्वराज नाम की यह पार्टी है। राजनीतिक के समर में उतरे हैं। प्रशांत किशोर ने इसके लिए लंबी तैयारी की है। पद यात्रा करके बिहार के ओर छोड़कर नापा है, बिहार के सियासत के तमाम समीकरणों को अपने तराजू पर तौला है। फिलहाल इतना तय है यह पार्टी अपने कुछ अलग तेवरों के साथ होगी और इसने बिहार की राजनीति में प्रभाव रखने वाली तमाम पार्टियों को इसके बारे में सोचने को विवश है। अभी यह साफ नहीं है यह पार्टी किसकी जना धार में सेंध लगा सकती है।राजद को अपने मुस्लिम मतदाताओं को एकजुट रखने की चिंता है, बीजेपी को स्वर्णों और पिंछड़े को तथा जदयू पिछड़ों और अति पिछड़ों को अपने प्रभाव को कायम रखने की चिंता है। प्रशांत किशोर ने राजनीति की शुरुआत के लिए उसने बिहार को चुना है जहां सियासत हमेशा उलझी

हुई रही है और क्षेत्र के उलझे समीकरण रहे हैं ऐसा नहीं है कि केंद्र में राज्यों में स्थापित हुई सियासी पार्टियों को कोई नई पार्टी चुनौती नहीं दी है। बिहार के सियासी पार्टियां और राजनीतिक सूरमा इस बात का आकलन कर रहे हैं। स्वराज में कहां नुकसान पहुंचा सकती है और कहां स्वराज की मौजूदगी उन्हें हित में हो सकती है, वहां स्वराज की कोशिश यही होगी जो बिहार में परिणाम से नई हलचल मचा दे इसके लिए प्रशांत नहीं छोड़ेंगे।

प्रशांत किशोर ने शराब चालू करने की घोषणा कर एक नया हलचल मचा दिया। इस पर कई तरह के प्रतिक्रियाएं हो रही है। एक व्यक्ति का दो तरह के प्रतिक्रिया हो रही है। समाज के सामने शराब का विरोध तथा शराब पीने के लिए चालू होने सुविधा होगी। शराब पीने वालों में सभी वर्गों तथा बड़े-बड़े अधिकारियों भी है। बताया जाता है कि आबादी के 50% से ज्यादा लोग शराब का इस्तेमाल करते हैं, बाहर से दिखते नहीं है। बिहार के पूर्व मुख्यमंत्री जीतन मांझी ने बार-बार कहा है बड़े-बड़े लोग अधिकारी और पदाधिकारी पीते हैं वहां छापेमारी क्यों नहीं की जाती है। क्या चाहते हैं अभी चलती है की ऊपर से शक्त विरोध होगी तथा बोट प्रशांत किशोर को ही देंगे। इसका भविष्य क्या होगी चुनाव के बाद ही पता चलेगा।●

अभी कलम उठाइये

आपके सामने हो रहे भ्रष्टाचार एवं अपराध की खबर की समीक्षा करें और सरकार सहित पुलिस-प्रशासन तक उसको पहुंचाने के लिए केवल सच पत्रिका के साथ जुड़े। खबर की जानकारी इस नम्बर पर दें

सम्पर्क करें:- 9431073769/8340360961

ई-मेल:- editor.kstimes@rediffmail.com पर भेजें।

बिहार के कानून मंत्री से मांग

हर थाना, ब्लॉक में सर्वदलीय कमेटी गठित की जाये

● डॉ० लक्ष्मीनारायण सिंह

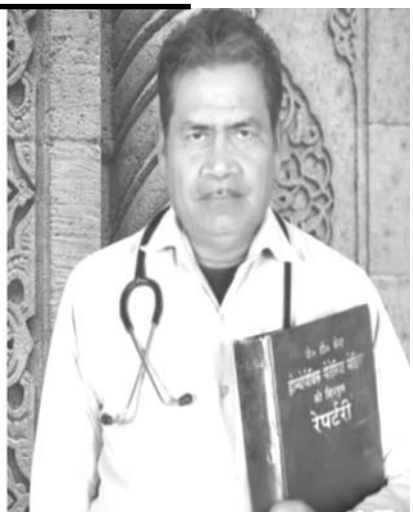

भाजपा मीडिया प्रभारी डॉक्टर लक्ष्मी नारायण सिंह पटेल ने बिहार के कानून मंत्री नितिन नवीन से मांग और सुझाव दिया है । उन्होंने कहा है कि आज पूरा बिहार अपराध का नगरी भ्रष्टाचार के साम्राज्य बन चुका है। इससे बिहार की छवि खराब हो रही है। उन्होंने कहा कि दोषी से ज्यादा निर्दोष व्यक्ति हैं जेल में ठुंसे जा रहे हैं। इसे रोकने के लिए हर एक थाना में एक सर्व दलीय कमेटी बना दी जाए तथा थाने के अंदर बैठने के लिए स्थान की व्यवस्था करनी होगी । उस कमेटी में भाजपा, जदयू, राजद, कांग्रेस , लोजपा और माले। सभी दलों से एक व्यक्ति थाने के अंदर देख रेख करेंगे की एक भी निर्दोष व्यक्ति जेल में न जाए। प्रखंड और अंचल कार्यालय भ्रष्टाचार के साम्राज्य है इससे जनता में काफी परेशानी और सरकार की बदनामी हो रही है। इसी तरह से प्रखंड कार्यालय में भी सर्वदलीय कमेटी बना दी जाए। सभी तरह की शिकायतों पर सर्व दलीय कमेटी निगरानी रखेगी कि कोई गड़बड़ी नहीं करें।उन्होंने कहा कि यह भी आदेश जारी करें अपराध में जो हथियार के इस्तेमाल हुआ है वह हथियार बरामद करना ही होगा तथा हथियार निर्माण स्थल का उद्वेदन भी करना होगा। इसी तरह कारतूस भी उपलब्ध कौन कर रही है यह भी उद्वेदन अनिवार्य कर दी जाए। इस आदेश से 90 से 95% अपराध में कमी आ सकती है। आम जनता को भी विश्वास हो जाए कि अब न्याय मिलेगी।●

जदयू को भाजपा ने सौंपी बिहार की सत्ता

● डॉ० लक्ष्मीनारायण सिंह

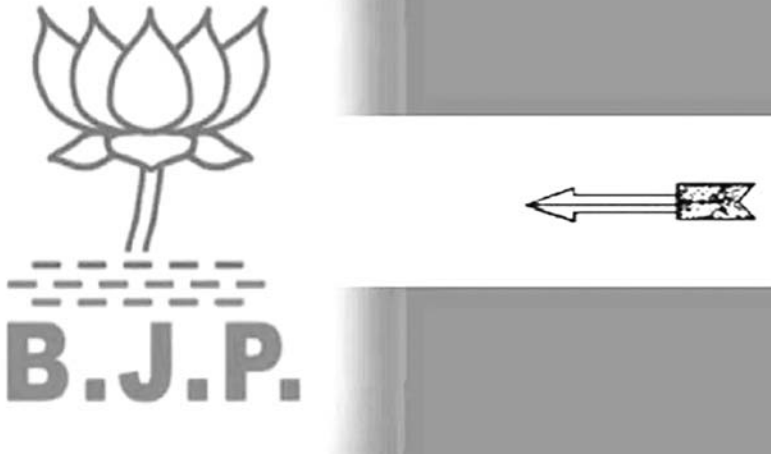

बिहार के भाजपाई ने राजनीति को खिलौना बना दिया। यह जनता की भावना पर करारा तमाचा है। भाजपा को चाहिए था बहुमत जुटाने के लिए राजद को सत्ता सौंप देना। राजद द्वारा बहुत जुटाने में असमर्थ होने पर भाजपा स्वयं समर्थन जुटाने का प्रयास करती। समर्थन नहीं मिलने पर फिर चुनाव के माध्यम से जनता के पास जाना चाहिए था ।राजद के समय भले ही जंगल राज था परंतु आज तो महा जंगल राज में ढकेल दिया गया है। भाजपा ने सिर्फ तीन ही काम सीखा है कार्यकर्ताओं से नारा लगवाना, माला पहनना और फोटो खिंचवाना। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा था कि भ्रष्टाचार देश को खोखला कर रहा है परंतु यह बिहार के भाजपा को नहीं झलकता है। आज पूरा बिहार अपराध की नगरी और भ्रष्टाचार का साम्राज्य बन चुका है। मोदी जी द्वारा चलाई जा रही जनहित में अधिकांश योजनाएं भ्रष्टाचारियों की फाइलों की शोभा बढ़ा रही है। मोदी जी द्वारा चलाई जा रही कई योजनाओं के बारे में जनता को कौन कहे कार्यकर्ताओं के पास भी कोई सूची तक नहीं है घकितनी शर्मनाक है कि लोकसभा चुनाव में भाजपा का कितना दुर्गति हो गई कि पहले से भी लोकसभा सांसद की संख्या घट गई। विधानसभा चुनाव में इसी आधार पर नीतीश कुमार भाजपा को टिकट भी देंगे, भाजपा को भारी नुकसान उठाना पड़ सकता है। संभव है कि अगली बार चुनाव में भाजपा फिर से समर्थन करने वाली समर्थन करने वाला बनकर रह जाएगी इसलिए भाजपा का चाहिए कि सांसद, विधायक और मंत्री द्वारा योजनाओं एवं लाभार्थियों का सूची उपलब्ध कर घरघ घर तक पहुंचाए। इससे जानकारी भी उपलब्ध हो जाएगी कि कौन अधिकारी कितना घोटाला किया है।●

फतुहा में स्वास्थ्य शिविर का आयोजन

● डॉ० लक्ष्मीनारायण सिंह

भाजपा समर्थक मंच कार्यालय मां तारा उत्सव पैलेस गोविंदपुर फतुहा में स्वास्थ्य शिविर का आयोजन किया गया जिसका अध्यक्षता भाजपा जिला मंत्री शोभा देवी, संचालन भाजपा नगर उपाध्यक्ष अनिल कुमार शर्मा तथा मुख्य अतिथि डॉ लक्ष्मी नारायण सिंह पटेल। मुख्य अतिथि डॉ लक्ष्मी नारायण सिंह पटेल ने कहा कि महिलाओं को कई ऐसी समस्याएं होती है जिनकी वजह से युवा स्त्री की स्वाभाविक सुंदरता घटती रहती है जैसा कि कम उम्र में या अत्यधिक कमजोरी स्त्रियों के प्रसव पश्चात स्वास्थ्य गिर जाता है या फिर साधारण तंदुरुस्ती भी नहीं रह पाती है । इसी प्रकार कई स्त्रियों को पेट बढ़ जाता है । बेढंगा मोटापन। चेहरे की स्निग्धा खत्म हो जाती है। कम उम्र में ही बुढ़ापा सा आ जाती है। इस मोटापे कि वजह से इस मोटापे की वजह से फिंगर खराब हो जाती है ,साथ ही कम उम्र में स्त्रियां अंधेड़ावस्था की लगने लगती है। होम्योपैथी में ऐसी सौंदर्य समस्याओं का सुलभ और सफल उपचार है जिसे एक चिकित्सक बखूबी से ठीक कर सकता है।

(1) डिलीवरी के बाद पेट का लटकना : इस प्रकार के पेट लटकने पर दवा का नाम क्रोकस 30 एक बूंद तीन बार रोज।

(2) स्त्रियों के पेट बढ़ने पर उन्हें सीपिया 200 एक बूंद तीन बार रोज।

(3) पेट पर झुर्रियां पड़ जाने पर हिपर सल्फर व साइलेशिया 30 एक बूंद तीन बार रोज।

(4) डिलीवरी के बाद पेट पर रेखा बनना :- स्पांजिया 30 , बरर्वेरिस एक बूंद तीन बार रोज

(5) मोटापे की वजह से पेट बढ़ने पर :- फाइटोलैका बेरी 6 ,नेट्रम सल्फ 6 एक्स तीन बार रोज।

(6) बेढंगा मोटापन कुछ लोगों को बेढंगा मोटापा हो जाता है। सारे शरीर का मोटापा शरीर के एक स्थान पर सिमट जाता है जैसे पेट पर, जांघ पर हो या कूल्हे आदि पर हो जाए तो ग्रैफाइटिस 1 एम देना चाहिए।

(7) युवा स्त्रियों के मोटापे होने पर कैलकेरिया कार्ब 1 एम ग्रैफाइटिस 1 एम देना चाहिए।

(8) मोटापा कम करने के लिए कैलोट्रौपिस मदर टिंचर 10 से 15 बूंद तीन बार रोज लेना चाहिए। कोई भी दवा चिकित्सा का सलाह से इस्तेमाल करें।इस अवसर पर पुनम पटेल,कुसुम पटेल, रेखा शर्मा, पुजा कुमारी, अंकुश कुमार अनामिका पांडे,अनिष कुमार, अनीता पाटनी, मनीषा कुमारी, पुनम कुमारी, शोभा पटेल, ममता पटेल आदि मौजूद थे।●

मुंहासे का होम्योपैथी में कारगर इलाज

● डॉ० लक्ष्मीनारायण सिंह

स्वास्थ्य शिविर का आयोजन मां तारा उत्सव पैलेस गोविंदपुर फतुहा में किया गया, जिसका अध्यक्षता भाजपा जिला मंत्री शोभा देवी, मुख्य अतिथि सुप्रसिद्ध होम्योपैथिक चिकित्सा डॉक्टर लक्ष्मी नारायण सिंह पटेल एवं भाजपा नगर मंडल के वरिष्ठ उपाध्यक्ष अनिल कुमार शर्मा। संचालन भाजपा नेत्री डॉक्टर मनीषा कुमारी ने किया। मुख्य अतिथि डॉ लक्ष्मी नारायण सिंह पटेल ने कहा की युवा एवं युवतियों को मुहांसे आम बातें हो गई है। इस बीमारी ने सुंदर चेहरे को ही बदसूरत कर देती है। इसका कई कारण हो सकते हैं गलत खानपान, चिकने, मसालेदार, घी, तेल का अधिक प्रयोग, मानसिक तनाव, चिंता, अवसाद ,अनिद्रा ,कब्जियत, त्वचा का संक्रमण ,एलर्जी, प्रदूषण आदि हो सकते हैं। उन्होंने कहा कि मुंहासे से ग्रसित चेहरे पर कोई भी तेल या चिकनाई युक्त क्रीम लगाने से परहेज करें, क्योंकि अक्सर तेल या क्रीम का प्रयोग मुंहासे के प्रकोप को और बढ़ा देता है खान-पान सादा रखते हुए प्रचुर मात्रा में जल का सेवन करें।

लक्षणों के आधार पर होम्योपैथिक दवा :-

☞ मुंहासे यदि मटर के दाने जैसे बड़े हो तथा संक्रमण के कारण उन में मवाद आ जाए तथा दर्द भी रहे तो दवा हीपर सल्फर 200 एक बूंद एक बार रोज लेना है।

☞ छोटे छोटे नुकीले दाने, जो छूने पर कड़े और हल्का दर्द भी रहे साथ में पेट की गड़बड़ी रहने पर दवा एन्टिम क्रूड 200 एक बूंद एक बार रोज।

☞ सुंदर लड़कियों को दिन खून की कमी तथा मासिक अनियमित दर्द युक्त रहे, चेहरे लाल छोटे-छोटे दाने रहे तो कैल्केरिया कार्ब 200 काफी लाभदायक है एक बूंद एक बार रोज।

☞ शर्मीले लड़के या लड़कियों के चेहरे पर मुंहासे , लड़कियों में महावारी देर से, कम मात्रा में तथा ज्यादा दर्द युक्त रहे तो दवा पल्सेटिला 30 एक बूंद तीन बार रोज।

☞ सभी तरह के दर्द करने वाले मुंहासे और फुंसियों में प्रयोग करने से तुरंत लाभ देती है दवा युजेनिया जैमबस 30 एक बूंद तीन बार रोज।

☞ बालिकाओं के मुंहासे में कैल्केरिया फास 200 एक बूंद एक बार रोज,बालको होने वाले मुहासे में कैलकेरिया पिक्रेटा 30 एक बूंद तीन बार रोज।

☞ लड़कियों के मुंहासे में कैलकेरिया कार्ब 200, पिक्रिक एसिड 30, बोविस्टा 30 कुछ दिनों तक लगातार प्रयोग करने से ठीक हो जाता है।

☞ मुहासे चेहरे पर ही नहीं कभी-कभी बाहों, सीने व पीठ पर भी हो जाते हैं। ऐसी स्थिति में थूजा सी एम एक बूंद महिना में एक बार लेना चाहिए।

☞ मस्से की तरह समूचे शरीर में लाल थक्के -थक्के भर जाना दवा - नेट्रम सल्फ 200 एक बूंद एक बार रोज 9-बालों में बड़े-बड़े मस्से होने पर कास्टिम 30 एक बूंद तीन बार रोज।

☞ गहरे रंग के काल मस्से जिन पर से छिलके की तरह उतरते हैं, चेहरे पर हैं कैंसर बनने की संभावना तब हेक्ला लावा 30 एक बार रोज दे। कोई भी दवा चिकित्सक के सलाह से ही इस्तेमाल करें।इस अवसर पर अनीता पाटनी, रेखा शर्मा,पूजा कुमारी, शोभा कुमारी, अनामिका पांडे, संजू देवी, ममता पटेल अंकुश कुमार, अनीश कुमार, जितेंद्र मिस्त्री आदि शामिल हुए।●

कृति कमल की एसआईटी ने हत्यारों को दबोचा

● अमित कुमार सिंह/अनिता सिंह

माले नेता सुनील चन्द्रवंशी हत्याकाण्ड की गुलथी पुलिस ने गहन छापेमारी कर डी0एस0पी कृति कमल के नेतृत्व में 11 पुलिस पदाधिकारी के साथ एस0आई0टी0 गठन कर एस0पी0 राजेन्द्र कुमार भील को भारी सफलता मिली हत्या के 48 घंटे के भीतर चार अपराधी गिरफ्तार किये गये डी0एस0पी0 कृति कमल ने बताया कि दो गिरफ्तारी और हुई है और बाकी अज्ञात लोगो की गिरफ्तारी वैज्ञानिक ढंग से अनुसंधान कर गहन छापेमारी की जा रही है। जल्द अपराधी पुलिस के गिरफ्त में होगें। गिरफ्तार आरोपी पटना जिले के इमामगंज थाना क्षेत्र के हरदिया मेदौली निवासी श्री नाथ उर्फ काला नाग ने झारखण्ड से दो शुटर को बुलाकर माकपा माले नेता को गोली मारकर कोचहासा गॉव के समीप हत्या करा दी। गिरफ्तार आरोपितो से पूछताछ के बाद कई बाते पुलिस को बताई पकड़े गये तीन अपराधी पटना जिला के है। पुलिस ने हत्या मे प्रयोग बाइक, चार मोबाइल फोन एक खोखा मैगजीन बरामद किया। शूटर द्वारा घटना को अंजाम मे उपयोग हथियार भी बरामद किया गया। एक खोखा, मैगजीन बरामद किया। हत्या के कुछ ही क्षण बाद पुलिस ने अपराधियो की गिरफ्तारी के लिए गहन छापेमारी की गई। लेकिन आरोपी अलग जगहो पर भागने मे सफल रहे। घटना में शामिल सभी लोगो का पूर्व से ही अपराधिक इतिहास रहा है। एस.पी. ने कहा कि श्रीनाथ सिंह उर्फ काला नाग जो

झारखण्ड सुनील चन्द्रवंशी की हत्या के लिए झारखण्ड से शूटर जुम्मन मिया एवं उनके साथी द्वारा घटना को अंजाम दिया गया था। इनकी हत्या सरकारी तालाब की बदोवस्ती के लिए वर्चस्व की लड़ाई एवं पूर्व के माओवादी गतिविधि यो के कारण हुई है। ये तमाम जानकारी एस.पी. राजेन्द्र कुमार भील ने सदर थाने मे प्रेस वार्ता के दौरान दी। एस.पी. ने बताया कि इस घटना में पुलिस काफी सक्रिय होकर 48 घंटे में चार अपराधियो का पकड़ने में बहुत बड़ी सफलता हासिल की। विदित हो कि किंजर थाना के कोचहासा गॉव में स्थित निजी राइस मिल के समीप 9 सितम्बर माले नेता सुनील चन्द्रवंशी को गोलियो से भून कर हत्या कर दिया। एस.पी. ने खुलासा करते हुए बताया कि इस घटना में 10

अपराधी शामिल थे जिसमे 4 पुलिस टीम के द्वारा पटना एवं अरवल जिले के विभिन्न जगहों से चार अपराधी को गिरफ्तार किया गया। गिरफ्तार अपराधी में कौशल महतो जो हरदिया बेदौली इमामगंज जिला पटना का रहने वाला है। कौशल महतो पर अरवल एवं पटना जिले में विभिन्न थानो में लूट एवं आर्म्स एक्ट के तहत कई मामले दर्ज है। दूसरा मोहम्मद शहजाद खान जम्हारू पटना का रहने वाला है। इस पर भी लुट और आर्म्स एक्ट के मामले दर्ज है। तीसरा चन्द्रकान्त शर्मा रामपुर थाना करपी जिला अरवल से विभिन्न थानो में लूट एवं आर्म्स एक्ट के मामले दर्ज है। चौथा अपराधी श्रीनाथ उर्फ काला नाग उर्फ मोटु उर्फ आशुतोष उर्फ संतोष जो जम्हारू जिला पटना का रहने वाला इस पर पटना जहानाबाद, झारखंड, लूट हत्या, आर्म्सएक्ट के कई मामले दर्ज है।

डॉ0 रामवली सिंह चन्द्रवंशी पूर्व एमएलसी ने कहा कि चन्द्रवंशी नेताओ टारगेट कर हत्या की जा रही है। इनको न्याय दिलाकर रहेगें। हमे सड़क से सदन तक लड़ाई लड़नी पड़ेगें तो लड़ेगें। इनके परिजन को आश्वासन दिये। लोगो को न्याय का भरोसा दिलाया। रामवली बाबू के नेतृत्व मे जिले मे कई जगह आक्रोश मार्च निकाला गया विराध प्रदर्शन किया। जिले एवं प्रखण्ड मे धारणा दिया गया। पटना मे भी गर्दनीयवाग में धारणा का आयोजन किया गया। सामन्ती विचार धारा के लोगो के द्वारा इनकी हत्या की गई इनकी लोकप्रियता एवं गरीबो की लड़ाई लड़ने के चलते इनको रास्ता से हटाया गया। मैं पुलिस की की कार्यशैली से पुरी तरह संतुष्ट हूँ। ऐसी कार्यशैली से अपराधियो में पुलिस का खौफ होगा। इस तरह के पुलिस पदाधिकारी को मेडल व प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित करना चाहिए। इनकी हत्या की जाँच के लिए डीजीपी से भी बात की है। इनको न्याय दिलाने का संकल्प लेकर जा रहा हूँ। शीघ्र सरकार स्पीडी ट्रायल से सजा करायेगें। साथ ही 10 लाख रूपया एवं एक नौकरी राज्य सरकार से मांग की।

भाजपा सांसद और चन्द्रवंशी चेतना मंच के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ0 भीम सिंह चन्द्रवंशी माले नेता सुनील चन्द्रवंशी की हत्या को दुखद एवं दुर्भाग्यपूर्ण व निंदनीय बताया। अपराधियो को गिरफ्तार कर शीघ्र स्पीडी ट्रायल किया जाना

अत्यन्त जरूरी है। वरना क्षेत्र अशांति का दौर पूर्व जैसा शुरू हो सकता है। चन्द्रवंशी समान इस घटना से काफी गुस्से मे है। कार्यालय में इनकी आत्मा की शांति के लिए दो मिनट का मौन रखा गया पूर्व सांसद जहानाबाद, चन्देश्वर चन्द्रवंशी ने कहा कि किसी सुरत में अपराधी वक्से नही जायेगें। इनके न्याय के लिए उच्च स्तरीय जाँच कर नीतीश कुमार जी से मिलकर न्याय दिलायेगें। उन्होने जिला प्रशासन को उस गॉव में सम्पर्क

सड़क से नही होने पर जिला प्रशासन को कड़ी फटकार लगाकर शीघ्र सड़क निर्माण कर इस गॉव के लोगो को सरकार के सभी योजना को धरातल पर उतारने का निदेश दिया। बंद के दौरान सरकारी एवं प्राइवेट स्कूल के छात्र-छात्राऐं काफी प्रभावित हुई। डॉ0 प्रेम कुमार मंत्री वन एवं पर्यावरण सहकारिता विभाग बिहार ने कहा कि बिहार मे कानून का राज है किसी सुरत में अपराधी को नही वकसा जायेगा। भाजपा नेता प्रमोद सिंह चन्द्रवंशी ने कहा कि अरवल जिला के किंजर थाना अन्तर्गत धकन बीघा गॉव निवासी जुझारू सामाजिक नेता सुनील चन्द्रवंशी जी की हत्या अपराधियों ने निर्मम हत्या कर दी इसकी घोर निंदा करते है। श्री प्रमोद चन्द्रवंशी एस पी अरवल को फोनकर शीघ्र अपराधी को एसआर्ट ही गठित कर एस पी ने आर अपराधियो को डीएसपी कृति कमल के नेतृत्व मे घर दबोचा। साथ ही उन्होने सुनील जी गरीब परिवार से आते है। इनके परिवार को 10 लाख रूपया का सरकारी सहायता एवं एक पुत्र को सरकारी नौकरी दी इस संदर्भ मे माननीय मुख्यमंत्री श्री नीतीश कुमार जी से मिलकर पूरी स्थिति को अवगत करायेगें। ●

शिक्षक गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की व्यवस्था को स्थापित करें : प्राचार्य

● अमित कुमार सिंह/अनिता सिंह

मगध का गौरव नवादा जिले के दर्शन शास्त्र विभाग एवं आई क्यू0ए0सी के संयुक्त तत्वावधान में एक दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया के0एल0ए0 कॉलेज प्राचार्य शैलेज कुमार श्रीवास्तव, पूर्व प्राचार्य एन0सी0शर्मा दर्शन शास्त्र विभाग के पूर्व विभागाध्यक्ष डा0 ललन प्रसाद, डॉ0 सुरेश शाह, डॉ0 आशीष कुमार कुंड, डॉ0 एम जेड शहजादा ने संयुक्त रूप से द्वीप प्रज्जवलित कर संगोब दी का विधि वत उदघाटन किया। प्राचार्य के नेतृत्व मे आयोजित किये गये कार्यक्रम की शुरूआत कॉलेज के संस्थापक कन्हाई लाल साहु की प्रतिमा पर मालयार्पण किया गया। प्राचार्य शैलेज कुमार श्रीवास्तव ने एक दिवसीय संगोष्ठी के आयोजन में सेमीनार को संबोधित करते हुए विषय प्रवेश कराते हुए कहा कि विधार्थियो को साहित्यक चोरी से वचना चाहिए इमानदारी विश्वास, निष्पक्षता एवं जिम्मेदारी के साथ शैक्षणिक कार्य करने पर जोर देना चाहिए। प्राचार्य ने छात्रो एवं शिक्षको से कहा कि वे अपने गुणोतर जिम्मेवारी का पालन करे तामी एक बार फिर से गुणवतापूर्ण शिक्षा की व्यवस्था स्थापित हो सके और भारत फिर से विश्वगुरू बन सके। इस सगोष्ठी में शैक्षणिक विषय पर चर्चा की गई। पूर्व प्राचार्य डॉ0 एन सी शर्मा ने कहा कि इस संगोष्ठी से विद्यार्थियों को शिक्षा की मूल भावना से जुड़ने का मौका मिलेगा। दर्शन शास्त्र के पूर्व विभागाध्यक्ष डॉ0 ललन प्रसाद ने कहा कि दर्शन व्यक्ति कौर नैतिकता एवं चरित्र की सिखाती है। वाणिज्य विभागाध्यक्ष डॉ0 सुरेश शाह ने शैक्षणिक सत्य निष्ठा से संबंधित पहलुओ के बारे में लोगो को बताया। हिन्दी विभाग के डॉ0जी0पी0 रत्नेश ने शिक्षको को आदेश बनने पर बल दिया और कहा कि विद्यार्थी उन्हीं का अनुशरण करते है। इतिहास विभाग के डॉ0 मनोज कुमार शाह ने कहा इमानदारी, सत्य निष्ठ बनाती है। डॉ0 प्रबोध ने कहा कि नैतिक मूलयो के बिना विश्वगुरू बनने की बात कोटी कल्पना है। डॉ0 सरीता कुमारी ने शिक्ष को कर्मचारियो एवं विद्यार्थियो को कार्यक्रम में मंच संचालन संयोजक सचिव एम जेड शहजादा एवं धन्यवाद ज्ञापन डॉ0 साधना कुमारी ने किया। आयोजित संगोष्ठी में मौके पर डॉ0ए0एन0 चर्टजी डॉ0 सुधाकर उपाध्याय, प्रो0 अभिषेक आशीष, प्रो0 अशोक गुप्ता, डॉ0 राजीव कुमार, प्रो0 आजम एवं समस्त शिक्षकोतर कर्मी ने साथ-साथ सैकड़ो की संख्या मे छात्र-छात्राएँ उपस्थित थे। ●

अभी कलम उठाइये

आपके सामने हो रहे भ्रष्टाचार एवं अपराध की खबर की समीक्षा करें और सरकार सहित पुलिस-प्रशासन तक उसको पहुंचाने के लिए केवल सच पत्रिका के साथ जुड़े। खबर की जानकारी इस नम्बर पर दें

सम्पर्क करें:- 9431073769/8340360961

ई-मेल:- editor.kstimes@rediffmail.com पर भेजें।

साइबर अपराध में जामताड़ा को पीछे धकेल रहा नवादा

● मिथिलेश कुमार

सूबे में साइबर अपराध का गढ़ माना जाने वाला नवादा जिले के वारिसलीगंज थाना क्षेत्र समेत सीमावर्ती क्षेत्र साइबर अपराध का सेफ जोन बना हुआ है जो जाम ताड़ा को बहुत पीछे धकेल दिया है। युवकों को ऐसी लत लग चुकी है जो निकट भविष्य में इस पर अंकुश लगाना टेढ़ी खीर ही नहीं मुश्किल काम है। साइबर अपराध की दुनिया में अब नवादा जिला देश का सबसे बड़ा हॉट जोन बन गया है। यहां तक की जामताड़ा जैसे साइबर अपराधियों के गढ़ को भी पीछे छोड़ दिया है। इसी कड़ी में धनतेरस से पहले साइबर पुलिस ने धनकुबेर बनने का सपना देख रहे साइबर अपराधियों का दिवाला निकालने में कामयाब रही, जिसमें एक साथ 15 साइबर अपराधियों को दबोचकर सलाखों के पीछे भेजने में बड़ी सफलता हासिल की है। हालात यह हो गया है कि नवादा में बैठे साइबर अपराध की दुनिया का मास्टर माइंड के चंगुल में प्रदेश के कई जिलों के युवा फंसते जा रहे हैं। हालात यह हो गई है कि साल के 365 दिनों में 350 दिन ऐसा होता है, जिसमें साइबर अपराधी की घटनाएं जरूर दर्ज होती है। पूरे देश में नवादा के साइबर ठगों का गिरोह सक्रीय हो चुका है। इसमें नवादा जिले के वारिसलीगंज, काशीचक, शाहपुर तथा पकरीबरावां थाना क्षेत्र के दर्जनों गांव पूरी तरह से साइबर अपराधियों का हब बन चुका है। इन इलाकों में लगातार कार्रवाई की जा रही है, बावजूद जल्दी करोड़पति बनने का मंशा पाल रखे युवा वर्ग इस अपराध के दलदल में धंसते चले जा रहे हैं।

साइबर पुलिस ने मंगलवार को साइबर अपराधियों का एक गिरोह के 15 सदस्यों को ठगी करते रंगे हाथों गिरफ्तार कर हड़कम्प मचा दिया है। गिरफ्तार साइबर अपराधियों के पास से 13 मोबाइल, एक फर्जी सीम तथा 63 पेज का कस्टमर डाटा बरामद किया गया है। बुधवार को समाहरणालय स्थित पुलिस कार्यालय के सभागार में साइबर थानाध्यक्ष डीएसपी प्रिया ज्योति ने प्रेसवार्ता का आयोजन कर बताया कि गुप्त सूचना के आधार पर जिले के वारिसलीगंज थाना क्षेत्र के सोढ़ीपुर गांव स्थित बगीचा में दर्जनों साइबर अपराधी एक साथ जुटे हैं, जहां ठगी का

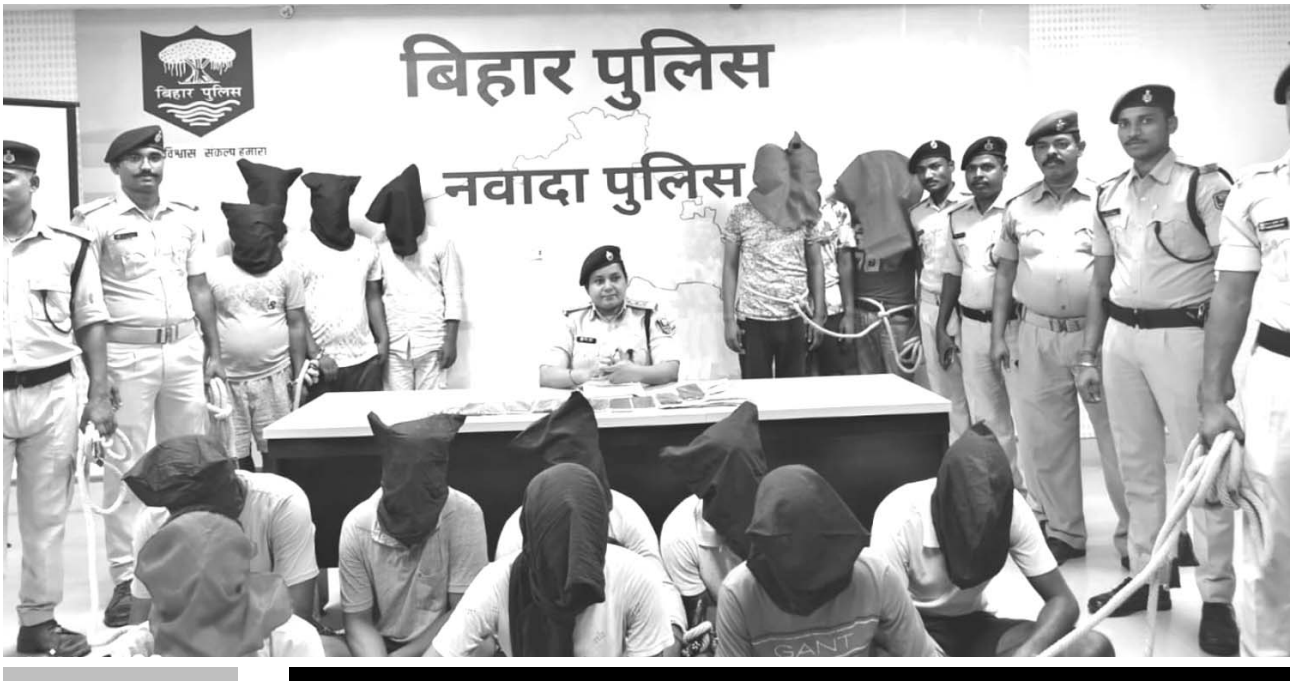

धंधा किया जा रहा था। उन्होंने बताया कि सूचना मिलते ही एसपी अभिनव धीमन के निर्देशन में साइबर थानाध्यक्ष के नेतृत्व में जिला आसूचना इकाई के साथ टीम गठित कर उक्त बगीचे का घेराबंदी कर छापेमारी की गई। छापेमारी के दौरान कुल 15 साइबर अपराधियों को गिरफ्तार किया गया। उन्होंने बताया कि छापेमारी की भनक लगते ही साइबर अपराधी गिरोह के तीन कम्पनी कमांडर भागने में सफल रहा। ऑनलाइन शॉपिंग के नाम पर करते थे ठगी साइबर डीएसपी ने बताया कि गिरफ्तार सभी साइबर अपराधियों के द्वारा ऑनलाइन शॉपिंग करने वालों को ठगी का निशाना बनाते थे। ये लोग फ्लिप कार्ट पर खरीदारी करने वालों को कैश ऑन डिलिवरी के नाम पर डिस्काउंट का प्रलोभन तथा इनाम जितने के नाम पर कॉल कर उनको अपना निशाना बनाता था। उन्होंने बताया कि इन दिनों जिस तरह से ऑनलाइन में सस्ते सामानों की खरीदारी का प्रचलन चला हुआ है, उससे लोग आसानी से झांसा में आकर अपना गाढ़ी कमाई लूटा दे रहे हैं। ऐसे में ऑनलाइन शॉपिंग करने वालों को अब सावधान रहने की जरूरत है। गिरफ्तार साइबर अपराधियों की सूची उन्होंने बताया कि छापेमारी के दौरान पुलिस ने थाना क्षेत्र के सोढ़ीपुर गांव निवासी रविन्द्र मिस्त्री का 18 वर्षीय पुत्र शुभम कुमार, देवेन्द्र मिस्त्री का 35 वर्षीय पुत्र गौतम कुमार, सुबोध सिंह का सिंह का 23 वर्षीय पुत्र संदीप कुमार, रामानुज सिंह का 20 वर्षीय पुत्र सुबन कुमार, सिकन्दर सिंह का 35 वर्षीय पुत्र अमित कुमार, कृष्णा मिस्त्री का 21 वर्षीय पुत्र मन्नु कुमार, महेन्द्र सिंह का 30 वर्षीय पुत्र अविनाश कुमार, राकेश सिंह का 19 वर्षीय पुत्र छोटू कुमार, वकील मिस्त्री का 26 वर्षीय पुत्र रौशन कुमार व अशोक सिंह का 26 वर्षीय पुत्र अंकु कुमार, वहीं नगर थाना क्षेत्र के फुटौनी चक गांव निवासी स्व सौदागर मिस्त्री का 21 वर्षीय पुत्र छोटू कुमार, कांधा गांव निवासी कमलदेव सिंह का 19 वर्षीय पुत्र गोलू कुमार, नालंदा जिला अंतर्गत सिलाव थाना क्षेत्र के चंडी मउ गांव निवासी अखिलेश्वर सिंह का 27 वर्षीय पुत्र कुणाल कुमार, पटना जिला अंतर्गत मराची थाना क्षेत्र के मरांची गांव निवासी अजय सिंह का 22 वर्षीय पुत्र विकास कुमार उर्फ कारू तथा शेखपुरा जिला अंतर्गत शेखपुरा थाना क्षेत्र के बरमा गांव निवासी स्व सुधीर सिंह का 22 वर्षीय पुत्र संदीप कुमार जिसका वर्तमान पता जक्कनपुर थाना क्षेत्र के संजय नगर रोड नम्बर-2 है, इन सभी को सोढ़ीपुर गांव में ठगी करते गिरफ्तार किया गया। छापेमारी में इन पुलिस पदाधिकारियों व पुलिस जवानों की रही भूमिका साइबर अपराधियों को पकडने में जुटे साइबर थानाध्यक्ष डीएसपी प्रिया ज्योति के अलावा अपर थानाध्यक्ष इंस्पेक्टर संजीत सिंह, एसआई रविरंजन मंडल, सिपाही पिन्टु कुमार, अजय कुमार चौधरी, रजन कुमार, राजकुमार मिस्त्री, विकास कुमार, सौरभ कुमार, धुरी कुमार, चंदन कुमार, रूपम कुमारी, चालक सिपाही विनोद कुमार, पियुष कुमार, बब्लू पंडित सहित स्वार्ट जवान तथा बीएमपी के जवानों की भूमिका अहम रही।

नवादा साइबर थाने की पुलिस ने बड़ी कार्रवाई करते हुए साइबर अपराधियों द्वारा धोखाधड़ी से जमा किए गए 93 लाख 76 हजार 530 रुपये विभिन्न बैंकिंग संस्थाओं के सहयोग से होल्ड कराया है। यह राशि जिले के विभिन्न उपभोक्ताओं से अलग-अलग अपराध से ठगी की गई थी। इससे जुड़ी कल 986 शिकायतें नेशनल साइबर रिर्पोटिंग पोर्टल में (एनसीआरपी) पर दर्ज कराई गई थी। नवादा की साइबर पुलिस द्वारा विभिन्न साइबर एजेंसियों के माध्यम से राशि विभिन्न बैंकों में होल्ड कराई गई है। जिन बैंकों में यह राशि होल्ड कराई गई है, उनमें रिलायंस पेमेंट सॉल्यूशन लिमिटेड, सारस्वत को ऑपरेटिव बैंक लिमिटेड, सर्व हरियाणा ग्रामीण बैंक, शिवालिक स्मॉल फाइनेंस बैंक, साउथ इंडियन बैंक, स्पाइस मनी ,स्टैंडर्ड चार्टर्ड बैंक, स्टेट बैंक ऑफ इंडिया ,स्टेट बैंक ऑफ इंडिया (क्रेडिट कार्ड), स्टेट बैंक ऑफ मॉरिशस (एसबीएम), कॉसमॉस को ऑपरेटिव बैंक, लिमिटेड कालूपुर कामर्शियल को ऑपरेटिव बैंक लिमिटेड, दी वराछा को ऑपरेटिव बैंक लिमिटेड ,यूको बैंक, उज्ज्वल स्मॉल फाइनेंस बैंक लिमिटेड ,यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, आंध्र बैंक व कॉरपोरेशन बैंक ,उत्कर्ष स्मॉल फाइनेंस बैंक लिमिटेड व यस बैंक शामिल है। साइबर डीएसपी प्रिया ज्योति के मुताबिक होल्ड कराई गई राशि को रिलीज कर उपभोक्ताओं को लौटाने की प्रक्रिया शुरू किया जा रही है। बता दें कि जिले के पकरीबरावां व वारिसलीगंज इलाका साइबर अपराध का हब बन गया है, वहीं जिले में साइबर थाना खुलने के बाद से कार्रवाई तेज है। 2024 में 1 जनवरी से 31 मई के छह महीने में 100 साइबर अपराधी को गिरफ्तार कर जेल भेजे गए हैं।

☞ **साइबर फ्रॉड की यह कॉल आपके दिमाग को सुन्न कर देगी। आप सतर्क रहें :-** देशभर में साइबर क्राइम के केस काफी बढ़ गए हैं और ठग नए-नए तरीकों से लोगों को अपना शिकार बना रहे हैं। ऐसे ही एक मामले में दिल्ली के युवक को कूरियर कंपनी फेडएक्स के नाम पर कैसे ठगा गया, अचानक फोन कॉल आता है। जिसमें बताया जाता है कि आपने जो पार्सल पैकेट भेजा था। उसमें गैर कानूनी सामान मिला है। पुलिस जांच कर रही है। जब आप कहते हैं कि आपने कोई पार्सल भेजा ही नहीं। तब आपको यह कहकर चिंता में डाल दिया जाता है कि 'शायद आपके आधार कार्ड या पेन कार्ड का मिसयूज हुआ है'। फोन पर इस तरह की बातें सुनकर शायद आप घबराने लगें। आपके इसी डर का फायदा साइबर अपराधी उठाते हैं। दिमाग को 'साइकोलॉजिकल सुन्न' करने वाला साइबर क्राइम का देश में तेजी से फैल रहा नया ट्रेंड है। साइबर ठग कुछ ऐसा माहौल बनाते हैं कि आपको किसी तरह के शक की गुंजाइश ही न रहे। फेडेक्स कूरियर के नाम पर साइबर फ्रॉड के केस दिल्ली एनसीआर में भी बढ़ने लगे हैं। इस अपराध की पड़ताल के दौरान हमें एक विक्टिम ने संपर्क साधा। ये हैं 30 साल के अजय। पंजाबी बाग में परिवार के साथ रहते हैं। गुरुग्राम में एक आईटी कंपनी में असिस्टेंट मैनेजर पद पर हैं।

☞ **पार्सल रोकने की कॉल :-** 'तारीख 14 मार्च थी। मैं घर पर ही था। ऑफिस की कॉल

अटेंड कर रहा था। मेरे मोबाइल पर 11:22 बजे पर एक कॉल आती है। रिसीव करते हुए एक मेसेज सुनाई दिया- आपका एक पार्सल रोक लिया है.. ज्यादा जानकारी के लिए 1 दबाएं। मैंने 1 दबा दिया। दूसरी तरफ कॉल पर एक शख्स कनेक्ट हुआ। बोला 'फेडेक्स कस्टमर सर्विस से बोल रहा हूं... आपने जो पार्सल मुंबई से कनाडा भेजा है, उसे नारकोटिक्स डिपार्टमेंट ने जब्त कर लिया है'। मैं सुनकर चौंक गया। क्योंकि न मैंने कोई पार्सल भेजा, न मुंबई से कोई वास्ता। मैं यह सोचकर उससे बात करने लगा कि शायद अमेजॉन या फ्लिपकार्ट का कोई ऑर्डर हो। मैंने कहा- ऐसा कोई पार्सल भेजा ही नहीं। फिर वह मुझे सेंडर एड्रेस में नाम, मोबाइल नंबर और एड्रेस कोलाबा मुंबई का बताता है। यह भी बताया कि पार्सल पैकेट कनाडा में किसी मंजीत के नाम पर भेजा है। मैंने फिर उसे कहा कि मैं मुंबई में नहीं, दिल्ली में रहता हूं। तब उसका रिएक्शन था- ओह लगता है आपकी भी आईडी मिस यूज हो रही है। आप तुरंत पुलिस कंप्लेंट कर दीजिए ताकि आपके साथ कोई और फ्रॉड न हो। हम आपकी कॉल कोलोबा पुलिस स्टेशन ट्रांसफर कर रहे हैं। वही कॉल कुछ मिनट होल्ड कराई। फिर दूसरी तरफ से बोलने वाले ने खुद को सब इंस्पेक्टर भूपेंद्र बताया। बोला कि, वह कोलाबा पुलिस स्टेशन से बोल रहा है।

☞ डॉक्यूमेंट मिसयूज की बात कह डराया :-

पुलिस का नाम सुनते ही मैंने उसे कहा- सर, मैं दिल्ली में रहता हूं, मुझे पता चला है कि मेरे नाम और डॉक्यूमेंट का कोई मिस यूज हुआ है। मैं कंप्लेंट करना चाहता हूं। वह बोला, आप मुंबई आ जाओ। मैंने कहा सर, मेरा मुंबई आना संभव नहीं। क्या में ईमेल पर कंप्लेंट भेज दूं। वह बोला, हम पुलिस स्टेशन के ऑफिशियल नंबर से वीडियो कॉल करेंगे। आपको जैसे जैसे बताते जाएं। करते जाना। कॉल कटते ही कुछ सेकंड में मेरे पास एक वीडियो कॉल आता है। उस नंबर पर फोटो मुंबई पुलिस का था। वीडियो ऑन करते ही सामने मुंबई पुलिस की वर्दी पहने वह शख्स दिखता है। दीवार पर मुंबई पुलिस का लोगो था। दिखने से वह कोई पुलिस स्टेशन जैसा लग रहा था। उस पुलिस वाले ने कहा कि 'हम ऑनलाइन बयान रिकॉर्ड करेंगे। आप जिस जगह पर हो, वहां पूरे एरिया को रोटेट करके व्यू दिखाइए। रूम में कोई होना नहीं चाहिए। क्योंकि इसमें रिकॉर्डिंग होगी। अगर कुछ भी गलत हुआ तो सजा होनी तय है'। मैं डरा हुआ था। तुरंत अंदर से दरवाजा लॉक किया। फिर मोबाइल के कैमरे से पूरा रूम दिखाया। कॉल डिस्कनेक्ट होती है। तुरंत ही दूसरे नंबर से इस बार डायरेक्ट कॉल आती है। ट्रू कॉलर में कोलाबा पुलिस स्टेशन लिखा आता है। कॉल रिसीव करते ही दूसरी तरफ से खुद को एसआई बताने वाला बयान रिकॉर्ड करने लगता है। वह पूरी इंटेरोगेशन करता है। फिर डराता है कि बात रिकॉर्ड हो रही है। झूठ मत बोलना। वह मुझे उम्र, फैमिली बैकग्राउंड, प्रॉपर्टी, जॉब क्या है, कितनी सैलरी है, कितने बैंक अकाउंट हैं, पेरेंट्स क्या करते हैं जैसे अनेकों सवाल करता गया। मैं जवाब देता गया। तभी वह कहता है कि मुंबई में आपकी आईडी का मिसयूज करके जो ड्रग्स पकड़ी गई है, वो बहुत ही हाई प्रोफाइल बड़ा सिंडीकेट है। इसलिए पहले मुंबई पुलिस हेडक्वार्टर में बात करनी पड़ेगी। कॉल पर ही मुझे वायरलेस सेट जैसी आवाज सुनाई देती है। वह (भूपेंद्र) वायरलेस जैसी साउंड पर बात करते हुए कहता है कि मेरे साथ अजय हैं। उस ड्रग वाले केस में इनकी ही आईडी मिसयूज हुई है। वायरलेस पर दूसरी तरफ से कड़क आवाज सुनाई देती है। वह कहता है- ओह ये है अजय। इसके नाम तो अरेस्ट वॉरंट इशू हो चुके हैं। कोलाबा में हमने जब ड्रग्स के अड्डे पर रेड की। उस जगह पर इसके नाम का डेबिट कार्ड भी मिला है। जिससे 80 लाख की ड्रग खरीदी गई है। वह वायरलेस पर ही भूपेंद्र से डांटते हुए कहता है कि अभी तक तुमने इसे गिरफ्तार क्यों नहीं किया। इसे तो 3 महीने जेल होगी, बैंक अकाउंट भी फ्रीज होंगे। यह सब आवाजें सुनकर मैं बुरी तरह डर गया। हाथ पांव कांपने लगे। मैंने कहा, सर आपको कुछ गलतफहमी हुई है। मैंने ऐसा कुछ नहीं किया। इतने में वह किसी एसीपी से वायरलेस बात कराता है। एसीपी भी उसको बोलता है कि जब हेडक्वार्टर कह रहा है कि इसके नाम से वारंट इशू हैं। तो गिरफ्तार करने में इतनी देरी क्यों। अब एसआई भूपेंद्र कहता है कि आप सीधे लगते हो। आपकी आईडी मिस यूज हुई है। आपको एक रास्ता बताता हूं। सरकार ने पब्लिक प्रॉसीक्यूटर अपॉइंट किए हुए हैं जो आप जैसे शरीफ लोगों की मदद करेंगे। मैं आपकी प्रॉसीक्यूटर से बात कराता हूं। उसी कॉल पर एक और कॉल को जोड़ता है। दूसरी तरफ से बोलने वाला खुद को एडवोकेट दीपक बताता है।वह मुझे कहता है, आज शाम छह बजे से पहले मुंबई हाईकोर्ट पहुंचो। मैंने कहा कि इस समय ढाई बज रहे हैं। इतनी जल्दी आना संभव नहीं है। एडवोकेट बोला कि हम तुम्हारी एंटीसिपेटरी बेल अरेंज करा देते हैं। इसके लिए मुंबई के अलग-अलग डिपार्टमेंट के बॉन्ड खरीदने पड़ेंगे। उसने मुझे वॉट्स पर अशोक चक्र लगी सरकारी विभागों की लिस्ट भेजी। बॉड के लिए 98900 तुरंत भेजने को कहा। बताया कि 97 हजार वापस आ जाएंगे। 1900 रुपये चार्ज कटेगा। मैंने घबराहट वह रकम भी भेज दी। फिर उसकी कॉल आई। कहता है कि आप दिल्ली में रहते हो। इसलिए सेम प्रोसीजर दिल्ली हाईकोर्ट में एंटीसिपेटरी बेल लगानी होगी। उतना ही पैसा वहां भी बॉड खरीदने में खर्च होगा। मैंने वह रकम भी तुरंत भेज दी। फिर लीगल ड्राफ्ट टाइपिंग के लिए 5800 मांगे। मैंने वह भी भेज दिए। इसके बाद कॉल डिस्कनेक्ट हो गई। मैं रोता हुआ कमरे से बाहर निकला। मां को बताया कि मैं आज जेल चला जाता। बाल बाल बचा हूं। परिवार में भाई ने पूरा वाकया सुनकर कहा कि यह तुम्हारे साथ ठगी हुई है। लेकिन मैं भाई की बात पर यकीन करने को तैयार नहीं। फिर अहसास होने पर मैंने 1930 पर कॉल की। फिर उसी कोलाबा वाले नंबर पर लगातार कॉल की। लेकिन रिसीव नहीं हुआ। फिर उसने मेरा नंबर ब्लॉक कर दिया। बाद में लोकल पुलिस को केस दर्ज कराया। ●

सांसद अभय कुशवाहा का नागरिक अभिनंदन

● मिथिलेश कुमार

अखिल भारतीय मौर्य शिक्षक संघ सह शिक्षा मंच बिहार के तत्वाधान में नगर के मौर्य गार्डन में आयोजित अभिनंदन समारोह सह सम्मान समारोह में औरंगाबाद सांसद सह राजद संसदीय दल के नेता अभय कुशवाहा का अभिनंदन किया गया।समारोह की अध्यक्षता राम किसुन महतो एवं संचालन नागेंद्र प्रसाद ने किया।समारोह का उद्घाटन मुख्य अतिथि अभय कुशवाहा, राजद अध्यक्ष उदय यादव, राम किसुन महतो ने संयुक्त रूप से दीप प्रज्जवलित कर किया। समारोह शुभारम्भ के पूर्व अतिथियों ने भववान बुद्ध के चित्र पर पुष्प समर्पित कर उन्हें नमन किया। समारोह में आये अतिथियों का स्वागत मंच के संरक्षक सेवा निवृत शिक्षक राम किसुन प्रसाद कुशवाहा चांदी का मुकुट एवं अंग बस्त्र तथा बुके देकर सम्मानित किया। समारोह में आये अतिथियों का स्वागत दिल्ली सेंट्रल स्कुल की बच्चीयों ने स्वागत गान से किया। बीपीएससी से उत्तीर्ण शिक्षकों के सम्मान एवं सांसद के अभिनंदन को लेकर आयोजित राम वृक्ष सम्मान समारोह में नवादा जिले के सैकड़ों शिक्षकों सहित विभिन्न जिलों से नवादा में कार्यरत शिक्षकों को समारोह के मुख्य अतिथि अभय कुशवाहा के हाथों प्रशस्ति पत्र एवं बैग,कलम तथा अंग बस्त्र से सम्मानित किया गया।समारोह में सांसद के सम्मान में सेवा निवृत शिक्षक सतीश चंद्र प्रसाद ने अभिनंदन पत्र पढ़कर उनका सम्मान किया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि अभय कुशवाहा ने अपने सम्मान से अभिभूत होकर अपने संबोधन में अखिल भारतीय मौर्य शिक्षक सह शिक्षा मंच नवादा के प्रति आभार व्यक्त करते हुए कहा की आपलोगों ने शिक्षकों को जो सम्मान दिया है वह बहुत ही अच्छा संदेश है। समाज को नई दिशा और दशा बदलने में शिक्षकों का महत्वपूर्ण योगदान है। उन्होंने कहा की यह मंच पिछले नौ बर्षो में लगातार समाज के शैक्षणिक एवं सामाजिक विकास के लिये हमेशा कटिबद्ध है। उन्होंने बिहार की राजनैतिक दशा और दिशा पर चर्चा करते हुए कहा की जहाँ सम्मान नहीं मिले वहाँ रहना आत्म सम्मान को चोट पहुंचाना है। उन्होंने कहा की मैं जिस लोकसभा क्षेत्र से जीतकर सांसद बना हुँ वहाँ की 90 प्रतिशत जनता की जीत हुई है। आजादी के बाद औरंगाबाद में पहली बार 90 प्रतिशत आबादी बाले की जीत हुई है। उन्होंने कहा की यह राजनैतिक कार्यक्रम नहीं है लेकिन किसी भी

समाज के सामाजिक, शैक्षणिक एवं आर्थिक विकास के लिये राजनैतिक भागीदारी भी जरूरी होती है। उन्होंने उपस्थित युवाओं एवं शिक्षकों को अपने व्यक्तिगत कार्यों से समय निकाल कर समाज में भी योगदान देने पर बल दिया। समारोह को संबोधित करते हुए मंच के सचिव रामानंद प्रसाद ने मंच की उपलब्धियों एवं उद्देश्यों पर चर्चा करते हुए नवनियुक्त शिक्षकों को मंच से जुड़ने एवं सामाजिक कर्तव्यों का निर्वहन करने तथा मंच के माध्यम से शिक्षकों को अपने कर्तव्य के दौरान आने वाली समस्याओं के निराकरण करने की भी बात कही ।समारोह में दर्जनों विशिष्ट प्रतिभाशाली व्यक्तिव को भी सम्मानित किया गया। मुख्य अतिथि के सम्मान में स्वागत भाषण करते हुए शिक्षक दयानन्द प्रसाद ने मुख्य अतिथि के व्यक्तित्व एवं कृतित्व को लेकर कई कसीदे भी पढ़े। उन्होंने समारोह में विभिन्न जिलों से आये हुए अतिथियों का भी स्वागत किया तथा उपस्थित शिक्षकों को समाज का दर्पण बताते हुए उनके सम्मान में कई कवितायेँ पढ़ी। समारोह को सुंदर कुशवाहा, विनोद कुशवाहा,सहित दर्जनों लोगों ने संबोधित किया। समारोह में आये अतिथियों के प्रति आभार प्रकट करते हुए समारोह को सफल बनाने में सहयोग करने वाले सभी सदस्यों को धन्यवाद दिया। कार्यक्रम में चांदी का मुकुट प्रदान करने वाले मुखिया शैलेश महतो एवं कार्यक्रम में सहयोग करने वाले शैलेन्द्र प्रसाद का भी आभार जताया। समारोह में राजकीय शिक्षक सम्मान से सम्मानित शिक्षक संतोष कुमार वर्मा सहित सैकड़ों शिक्षकों को मुख्य अतिथि ने अंग बस्त्र एवं प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया।मौके पर राजद जिलाध्यक्ष उदय यादव, दलित प्रकोष्ठ जिलाध्यक्ष सीताराम चौधरी, बैध नाथ प्रसाद कुशवाहा, सुरेश प्रसाद शिक्षक, मंच के जिलाध्यक्ष महेशवर प्रसाद कुशवाहा, दीपक कुमार, विजय प्रसाद, सूर्यदेव नारायण मौर्य, वसंत प्रसाद, अरूंजय मेहता,शीतल प्रसाद, प्रेम सिन्हा, इंद्रपाल जौनसन, संतोष कुमार वर्मा, अरुण मौर्य, पूर्व मुखिया श्याम सुंदर प्रसाद कुशवाहा,पूर्व अध्यक्ष डॉ भोला प्रसाद कुशवाहा,प्रकाश प्रसाद,किसान श्री धर्मेंद्र कुशवाहा , डॉ भोला प्रसाद कुशवाहा, अनुराधा मेहता, सुरिचि कुमारी, अंशु लता, ललिता कुमारी, अंशु माला, सुरभि कुमारी, डॉली कुमारी, सोनू मुखिया, अशोक कुमार, संगम वर्मा,अर्चना सिन्हा, विष्णुदेव प्रसाद सहित सैकड़ों लोग मौजूद थे।●